प्रौढ़ सब्त स्कूल बाईबल अध्ययन गाइड

भजन संहिता की पुस्तक

लेखिका : ड्रैगोस्लावा सैंट्रेक

जनवरी, फरवरी, मार्च
2024

विषय सूची

1. भजन (संहिता) कैसे पढ़ें।	दिसंबर 30 - जनवरी 5 ...	1
2. हमें प्रार्थना करना सिखाएँ।	जनवरी 6-12	13
3. प्रभु राजा है।	जनवरी 13 -19	23
4. प्रभु सुनता और बचाता है।	जनवरी 20-26	33
5. एक अजनबी देश में प्रभु का गीत गाना।	जनवरी 27 - फरवरी 2 ...	42
6. मैं गरीबों की मदद करूँगा।	फरवरी 3 - 9	51
7. परमेश्वर की अद्‌भुत दया और प्रेम।	फरवरी 10 -16	60
8. पवित्र कैसे बनें।	फरवरी 17- 23	69
9. वह जो प्रभु के नाम पर आता है।	फरवरी 24 - मार्च 1... ...	78
10. अतीत से सबक।	मार्च 2- 8	87
11. प्रभु के साथ रहने के लिए उत्साहित।	मार्च 9-15	97
12. मैं प्रभु के लिए गाऊँगा! ।	मार्च 16-22	106
13. प्रभु की प्रतीक्षा करें।	मार्च 23-29	116

भूमिका

भजन संहिता की पुस्तकः जहाँ परमेश्वर और उसके लोग मिलते हैं

भजन संहिता की पुस्तक प्रार्थनाओं और भजनों का एक संग्रह है। ये प्रार्थनाएँ और भजन कविताएँ भी हैं। वे अब तक लिखी गई सबसे खूबसूरत कविताएँ हैं। भजन संहिता की कविताएँ विभिन्न मानवीय भावनाओं और विषयों के बारे में बात करती हैं: प्रशंसा, खुशी, उदासी और पीड़ा। ये कविताएँ या गीत सार्वजनिक या निजी तौर पर पढ़े या गाए जाते थे। उन्हें किसने पढ़ा या गाया? राजाओं, कवियों और पुरोहितों या आध्यात्मिक अगुओं ने उन्हें गाया। पापियों ने भी ऐसा ही किया, जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया और अपना जीवन परमेश्वर को वापस दे दिया। आपके और मेरे जैसे लोगों ने भी इन गीतों और कविताओं को गाया या पढ़ा। भजन संहिता की पुस्तक पुराने नियम के समय से ही परमेश्वर के सभी लोगों के लिए प्रार्थना पुस्तक और गीत पुस्तक रही है।

भजन संहिता की पुस्तक हमसे बात करती है। लेकिन इससे भी अधिक, भजन संहिता की पुस्तक हमारे लिए और हमसे बात भी करती है। भजन संहिता की पुस्तक से परमेश्वर अपने लोगों पर आशीष की बरसा करता है। भजन संहिता की पुस्तक हमें आशा देती है। इसकी कविताएँ हमें प्रभु में नया जीवन देती हैं। भजन संहिता की पुस्तक एक मार्गदर्शक की पुस्तक भी है जो हमें खुद को और परमेश्वर की शाही सुंदरता को समझना सिखाती है। भजन संहिता की पुस्तक हमें दुःख और दर्द से मुक्त करने में मदद करती है। भजन संहिता की पुस्तक हमें ईश्वर की ओर ले जाती है और हमें अपना जीवन पूरी तरह से उसे समर्पित करने में मदद करती है। हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि कई लोगों को लगता है कि भजन संहिता की पुस्तक उनके व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं के बारे में बात करती है। इसीलिए लोग भजन संहिता की कविताओं को अपनी प्रार्थनाएँ बनाते हैं।

मार्टिन लूथर भजन संहिता की पुस्तक के बारे में ये शब्द कहता है: "हमें भजन संहिता की पुस्तक में इतने सुंदर शब्द कहाँ मिल सकते हैं? प्रशंसा और कृतज्ञता की ये कविताएँ किसी भी अन्य शब्दों की तुलना में हमारी खुशी को बेहतर ढंग से व्यक्त करती हैं। इन कविताओं में आप कवियों के दिलों में ऐसे देख सकते हैं मानो आप किसी प्यारे बगीचे को देख रहे हों या स्वर्ग को देख रहे हों। ... या हमें अपने दुख और पीड़ा को संप्रेषित करने के लिए बेहतर शब्द कहाँ मिल सकते हैं? भजन संहिता की पुस्तक में, आप कवियों के हृदयों को वैसे ही देखते हैं जैसे आपने मृत्यु को, आमने-सामने, या नरक में देखा हो। ... इसलिए, यह समझना आसान है कि क्यों भजन संहिता की पुस्तक परमेश्वर के सभी लोगों की पसंदीदा पुस्तक है। हर जगह लोग अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप भजन की पुस्तक में एक कविता या गीत पा सकते हैं। जब हमें वह कविता मिल जाती है जिसकी हमें जरूरत होती है, तो हमें लगता है कि वह कविता सिर्फ हमारे लिए लिखी गई थी। कोई अन्य पुस्तक भजन संहिता की पुस्तक की बराबरी नहीं कर सकती। किसी अन्य पुस्तक में इससे बेहतर शब्द नहीं हैं।"

जेनेरल कॉन्फ्रेन्स ऑफ सेवेन्थ-डे ऐडवेंटिस्ट द्वारा तैयार पाठ का हिन्दी अनुवाद श्री तुरतन कन्डुलना मोबाईल नं० +919431906858 (e-mail: kturtan@gmail.com) एवं मुद्रण, सब्त स्कूल विभाग, पश्चिमी झारखण्ड सेक्शन ऑफ एस०डी०ए०, करम टोली चौक, राँची, झारखण्ड द्वारा किया जाता है।

मुद्रक : काथलिक प्रेस, राँची - 834001 (झारखण्ड)
M. No. 8757340417, e-mail: catholic_press@yahoo.in

– मार्टिन लूथर, मार्टिन लूथर: सिलेक्शन्स फ्रॉम हिज राइटिंग्स, संपादक, जॉन डिलनबर्गर (न्यूयॉर्क: एंकर बुक्स, 1962), पृष्ठ 39, 40.

क्या आप भजनों की पुस्तक पढ़ते समय जीवन बदलने वाला अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं? यदि हाँ, तो आपको भी भजन की पुस्तक के गीत और कविताएँ अवश्य गानी और प्रार्थना करनी चाहिए। बाइबल के समय में इस्राएलियों ने इन गीतों और कविताओं को गाया और प्रार्थना की। उस समय से, परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर की स्तुति करने, प्रार्थना करने, अपने पापों को स्वीकार करने, प्रभु को रोने और उसे धन्यवाद देने के लिए भजन की पुस्तक में कविताओं और गीतों का उपयोग किया है। हमें ये काम करना चाहिए क्योंकि प्रभु सर्वशक्तिमान है। हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिए क्योंकि वह जो कुछ भी करता है उसमें निष्पक्ष है। हमें उसकी दया और प्रेम के लिए उसे धन्यवाद देना चाहिए।

इसलिए, हम जानते हैं कि हमें भजनों की पुस्तक में गाने और कविताएँ गाने और प्रार्थना करने की जरूरत है। लेकिन क्या हमें इन गीतों और कविताओं का भी अध्ययन करने की जरूरत है? संक्षेप में, हाँ । सबसे पहले, हमें यह समझना चाहिए कि भजन संहिता की कविताएँ और गीत अलग-अलग समय और स्थानों पर लिखे गए थे। दूसरा, ये कविताएँ और गीत ईश्वर के बारे में विभिन्न संदेश और पाठ सिखाते हैं। जब हम भजनों की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो हम पाठकों को कवियों और उनके जीवन को बेहतर ढंग से समझने में मदद करना चाहते हैं। तब हम उनके गीतों और कविताओं को भी बेहतर ढंग से समझने लगेंगे।

तो, हम जानते हैं कि भजन संहिता की कविताएँ और गीत परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाएँ हैं। क्या आप यह भी जानते हैं कि जब यीशु पृथ्वी पर था, तब उसने इनमें से कई कविताओं और गीतों की भी प्रार्थना की थी? भजन संहिता की पुस्तक में कविताएँ और गीत भी यीशु के बारे में हैं। भजन संहिता की पुस्तक में, परमेश्वर हमें यीशु को दिखाता है और उसके बारे में बताता है। जब हम भजन संहिता की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो हम उन सभी चीजों के बारे में सीखना चाहते हैं जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के कारण हमारे लिए किया, करता है और करेगा।

भजन संहिता की पुस्तक 150 कविताओं का संग्रह है। ये कविताएँ हमें जीवन में हमारी आध्यात्मिक यात्रा को समझने में मदद करती हैं। हमारी यात्रा विश्वास से शुरू होती है। हमारा विश्वास बढ़ता है क्योंकि हम समझते हैं कि ईश्वर हमारा राजा है। पूरी पृथ्वी और जो कुछ भी घटित होता है वह उसके पूर्ण नियंत्रण में है। हमारा सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे अच्छे व्यवहार को पुरस्कृत करता है। वह दुष्टों को दण्ड देता है। जब समय कठिन होता है और हम अपने विश्वास के लिए कष्ट सहते हैं तो हमें बाइबल की इस सच्चाई को याद रखना चाहिए। जैसे ही हम इस तिमाही में भजन संहिता की पुस्तक में अपना अध्ययन जारी रखेंगे, हम देखेंगे कि क्या होता है जब पाप और दुष्ट लोग परमेश्वर के लोगों के विश्वास पर हमला करते हैं। जब ऐसा होता है, तो हम भजन संहिता के कवियों से पूछ सकते हैं, क्या ईश्वर नियंत्रण में है? ऐसे देश में जहाँ दुष्ट लोग हमें हानि पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं, परमेश्वर के लोग परमेश्वर की स्तुति कैसे गा सकते हैं?

हमारी आशा और प्रार्थना है कि भजन संहिता की पुस्तक इन कठिन प्रश्नों का उत्तर देने में मदद करेगी। हमें यह भी उम्मीद है कि हमारा अध्ययन हमें हमारी जीवन - यात्रा के दौरान मजबूत बनने में मदद करेगा। हम भजन संहिता की पुस्तक में हृदय से हृदय तक प्रतिदिन ईश्वर से मिलें, उस दिन तक जब तक हम यीशु को आमने-सामने न देख लें।

ड्रैगोस्लावा सैंट्रेक ने पुराने नियम में पीएचडी की डिग्री हासिल की है। डॉ॰ सैंट्रेक सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट्स विश्व मुख्यालय के जनरल कांफ्रेंस में सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट्स इनसाइक्लोपीडिया की प्रबंध संपादक हैं। उन्होंने सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट इंटरनेशनल बाइबिल कमेंटरी के लिए भजन 76-150 पर वॉल्यूम (खंड) लिखा है।

पाठ 1

दिसम्बर 30-जनवरी 5

भजन संहिता कैसे पढ़ें
(How to read the Psalms)

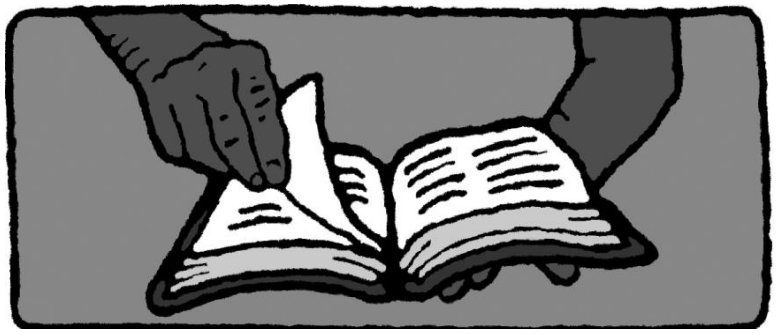

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 30**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : नहेमायाह 12: 8; भजन 25: 1-5; भजन 3; 2 शमूएल 23: 1, 2; भजन 16: 8 ।

याद वचन: "फिर उसने उनसे कहा, "ये मेरी वे बातें हैं, मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों" (लूका 24: 44)।

भजन संहिता की पुस्तक यहूदियों और मसीहियों के लिए प्रार्थनाओं और गीतों का एक संग्रह है। भजन लिखने वाले भजनकारों ने परमेश्वर के लिए अपनी प्रार्थनाएँ और गीत लिखे। भजनकारों ने अपने शब्दों में लिखा। लेकिन परमेश्वर ने उनको विचार दिये। अत:, भजन की पुस्तक परमेश्वर की ओर से आती है। परमेश्वर अपने लोगों से इसके भजनों में बात करता है, ठीक वैसे ही जैसे वह बाइबल के बाकी हिस्सों में करता है (2 पतरस 1: 21)। यीशु और नए नियम के लेखकों ने अपनी शिक्षाओं में भजन संहिता के उदाहरणों का उपयोग किया। उन्होंने सिखाया कि ये भजन परमेश्वर के वचन, बाइबल (मरकुस 12: 10; यूहन्ना 10: 34, 35; यूहन्ना 13: 18) का हिस्सा थीं। भजन की पुस्तक बाइबल की किसी भी अन्य पुस्तक की तरह ही परमेश्वर के वचन का हिस्सा है।

---

* 'सब्त, जनवरी 6 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

पुराने नियम के समय में विभिन्न भजनकारों ने भजन संहिता की पुस्तक लिखी। कवियों ने अपनी कविताएँ इब्रानी भाषा में लिखीं। भजन हमें उस समय के बारे में बताती हैं जब भजनकार रहते थे। भजन संहिता की पुस्तक हमारे समय के लिए भी है। जब हम भजन संहिता की पुस्तक को हमारे लिए परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार करते हैं, तो हम इसके संदेशों को समझ सकते हैं। हमें भजन संहिता की पुस्तक के इतिहास और शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए। हमें यह भी अध्ययन करना चाहिए कि इस्राएलियों ने आराधना के लिए गीतों का उपयोग कैसे किया। तब हम बेहतर ढंग से समझ सकेंगे कि परमेश्वर आज हमसे क्या कहना चाहता है।

रविवार **दिसम्बर 31**

पुराने नियम के समय में आराधना के लिए गीत

(नहेमायाह 12: 8)

भजन संहिता की पुस्तक क्यों लिखी गई थी? परमेश्वर के लोगों ने भजनों का प्रयोग कब किया? पढ़ें, 1 इतिहास 16: 7 पढ़ें; नहेमयाह 12: 8; भजन 18: 1; भजन 30: 1; भजन 92: 1; भजन 95: 2; भजन 105: 2; कुलुस्सियों 3: 16; याकूब 5: 13।

भजन संहिता की पुस्तक कविताओं का एक संग्रह है। विभिन्न भजनकारों ने भजन संहिता की पुस्तक लिखी। उनकी कविताएँ गीत भी हैं और ईश्वर से प्रार्थना भी। भजन संहिता के भजनकारों ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक आराधना दोनों के लिए अपने भजन लिखे। इस्राएलियों ने उनके मंदिर में परमेश्वर के भजन के रूप में भजन गाये। कई भजनकारों ने अपनी कविताओं या गीतों के साथ संक्षिप्त नोट्स भी शामिल किए। नोट्स संगीत अगुओं को बताता था (भजन 8: 1) कि उन्हें कौन से संगीत वाद्ययंत्र बजाना चाहिए (भजन 61: 1) या गीत गाते समय उन्हें किस धुन का उपयोग करना चाहिए (भजन 9: 1)।

इब्रानी भाषा में, भजन की पुस्तक का शीर्षक "तेहेलीम" है। "तेहेलीम" का अर्थ है "स्तुति।" "तेहेलीम" हमें भजनों के लिखे जाने का एक महत्त्वपूर्ण कारण दिखाता है: ईश्वर की स्तुति करना। हमारा शब्द "भजन" सेप्टुआजेंट से आया है। सेप्टुआजेंट ग्रीक भाषा में लिखे गए पुराने

नियम की एक प्रति है। सेप्टुआजेंट यीशु के जन्म से 200 या 300 साल पहले बनाया गया था। सेप्टुआजेंट में, "भजन" शब्द को ग्रीक भाषा में "भजन" के रूप में लिखा गया है।

भजन की पुस्तक इस्राएल की आराधना का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी। परमेश्वर के लोगों ने इसका उपयोग मंदिर समारोहों, धार्मिक उत्सवों, परेडों (और जब प्रतिज्ञा का सन्दूक यरूशलेम आया था) के लिए किया। भजन 120-134 मंदिर तक जाने के लिए गीत थे। परमेश्वर के लोग हर साल तीन बड़े धार्मिक त्योहार मनाने के लिए यरूशलेम जाते समय ये गीत गाते थे (निर्गमन 23: 14-17)। लोगों ने तीन उत्सवों में भजन 113-118 और भजन 136 गाए। उन्होंने ये गीत नये चाँद के त्यौहार पर गाए और जब अगुओं ने मंदिर को परमेश्वर को सौंप दिया। लोगों ने फसह के भोजन की शुरुआत में भजन 113 और 114 गाया, और अंत में भजन 115-118 गाया (मती 26: 30)। फसह वह समय था जब परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला। भजन 145-150 मंदिर में आराधना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सुबह की प्रार्थनाओं का हिस्सा थे। भजन ने परमेश्वर के लोगों को सिखाया कि उनके मंदिर में परमेश्वर की आराधना कैसे करें। यीशु ने भजन 22 (मती 27: 46) के शब्दों के साथ प्रार्थना की। भजन संहिता की पुस्तक नए नियम की कलीसिया में भी आराधना का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी (कुलुस्सियों 3: 16; इफिसियों 5: 19)।

आज हम अपनी व्यक्तिगत और निजी आराधना दोनों में भजन की पुस्तक का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

सोमवार **जनवरी 1**

भजन संहिता की पुस्तक के भजनकारों से मिलें (भजन 25: 1-5)

राजा दाऊद ने भजन संहिता की अधिकांश कविताएँ लिखीं। दाऊद को "इस्राएल का सबसे मधुर [सबसे सुखद] गायक" कहा जाता है (2 शमूएल 23: 1)। मंदिर में आराधना के लिए गीतों के चयन में दाऊद की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। नए नियम के लेखक यह भी कहते हैं कि दाऊद ने भजन संहिता की पुस्तक में कई कविताएँ लिखीं (मती 22: 43-45; प्रेरितों 2: 25-29, 34, 35; प्रेरितों 4: 25; रोमियों

4: 6-8)। मंदिर के संगीतकारों ने भजन संहिता की पुस्तक में कुछ भजन भी लिखे। मंदिर के ये संगीतकार लेवी भी थे: आसाप ने भजन 50 और भजन 73-83 लिखे। कोरह के पुत्रों ने भजन 42, भजन 44-47; भजन 49; भजन 84; भजन 85; और भजन 88 लिखा। एज्रेही हेमान ने भजन 88 लिखा। एतान एज्रेही ने भजन 89 लिखा। फिर वे कविताएँ (भजन) थीं जो सुलैमान और मूसा ने लिखीं: सुलैमान ने भजन 72 और भजन 127 लिखा। मूसा ने भजन 90 लिखा।

पढ़ें, भजन 25: 1-5; भजन 42: 1; भजन 75: 1; भजन 77: 1; भजन 84: 1, 2; भजन 88: 1-3; और भजन 89: 1. ये कविताएँ हमें उन कवियों और उनके अनुभवों के बारे में क्या बताती हैं जिन्होंने इन्हें लिखा है? पवित्र आत्मा ने इन भजनकारों को उनके विचार दिये। परमेश्वर ने उनकी प्रतिभाओं का उपयोग अपनी और अपने लोगों की सेवा के लिए किया। भजनकार ईश्वर के प्रति प्रबल विश्वास और गहरे प्रेम भरे व्यक्ति थे। साथ ही, भजनकारों ने अक्सर वैसा ही महसूस किया जैसा हम महसूस करते हैं। उन्हें निराशा महसूस हुई। उन्होंने शैतान के झूठ और जाल के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जैसा कि हम इस दौर में रह रहे हैं। हाँ, भजनकारों ने अपने गीत और कविताएँ बहुत पहले लिखी थीं। लेकिन वे हमारे कई समान अनुभवों के बारे में बात करते हैं:

"मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचे,
मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा !
क्योंकि मेरा प्राण क्लेश से भरा हुआ है,
और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है। (भजन 88: 2, 3)।

ऐसा किसने महसूस नहीं किया है? निश्चित रूप से, हमारे समय का कोई व्यक्ति मदद की यह पुकार लिख सकता था।

भजन की पुस्तक में कुछ भजन आनंद के बारे में हैं। अन्य भजन कठिन समय के बारे में हैं। भजनकार अपनी पीड़ा के प्रति ईमानदार हैं। वे मदद के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और वह उन्हें बचाता है। भजनकार ईश्वर के प्रेम की स्तुति करते हैं। वे सदैव परमेश्वर की सेवा करने का वादा करते हैं। भजन की पुस्तक परमेश्वर के बचाने वाले प्रेम, दया और आशा के बारे में एक संदेश है। भजन की पुस्तक लिखने वाले कवियों ने बहुत सी चीजें

सहन कीं जिन्हें हमने भी सहन किया है। यह विचार आपको कैसे आशा देता है? भजन की पुस्तक हमें क्षमा करने और हमें नया जीवन देने का ईश्वर का वादा है।

मंगलवार **जनवरी 2**

हमारे जीवन के हर भाग के लिए एक गीत (भजन 3)

पढ़ें, भजन 3; भजन 33:1-3; और भजन 109: 6-15। ये गीत किन मानवीय अनुभवों की बात करते हैं?

भजन की पुस्तक मानवीय अनुभव के बारे में गीतों से भरी हुई है। हम छह प्रकार के गीत देखते हैं: 1. स्तुति भजन, परमेश्वर की महिमा करते हैं क्योंकि वह राजा है और अपने वादे निभाता है। 2. धन्यवाद गीत, परमेश्वर को उसके अनेक आशीर्वादों के लिए धन्यवाद देते हैं। 3. विलाप, दु:ख या उदासी के गीत हैं। कई विलाप अपने लोगों को मुसीबत से बचाने के लिए परमेश्वर से की जाने वाली पुकार हैं। 4. बुद्धि के गीत, पवित्र जीवन जीने की सलाह से भरे हुए हैं। 5. राजसी गीत ईश्वर के चुने हुए व्यक्ति के बारे में बात करते हैं, जो इस्राएल का भावी राजा और उद्धारकर्ता है। 6. इतिहास - गीत, इस्राएल के अतीत के बारे में बात करते हैं। वे हमें दिखाते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों से किए वादे निभाए जब उन्होंने उससे किए गए वादे तोड़ दिए। इतिहास के गीत इस्राएल के भविष्य के बच्चों को अतीत को याद रखना और वही गलतियाँ नहीं करना सिखाते हैं जो उनके पिताओं ने की थीं।

ये भजन हमारा ध्यान खींचते है। भजनकारों ने अपनी कविताओं को इतना सशक्त बनाने के लिए किस लेखन कौशल का उपयोग किया?

शब्द संयोजन: भजनकारों ने समान अर्थ वाले शब्दों को संयोजित किया: "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझमें है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!" (भजन 103: 1)। क्या आपने देखा कि शब्द "मेरे मन" और "जो कुछ मुझमें है" कैसे एक जैसे हैं? कवि हमें अपने विचार को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए इन समान शब्दों को एक ही कविता में एक साथ जोड़ता है। कभी-कभी भजनकारों ने एक ही काम करने के लिए

अलग-अलग शब्दों को जोड़ दिया। "मैं दिन रात तेरी दोहाई देता हूँ" (भजन संहिता 88:1)। "दिन" और "रात" शब्द हमें दिखाते हैं कि भजनकार हर समय ईश्वर को पुकारता है।

शब्द चित्र: शब्द चित्र हमें जीवन को देखने, छूने, सूंघने, सुनने या स्वाद लेने में मदद करते हैं। ये चित्र हमें भजन के संदेश को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं। भजन 17:8 में, भजनकार ईश्वर और उसके द्वारा हमें दी गई सुरक्षा की तुलना एक मातृ पक्षी से करता है जो "अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे छिपाती है"।

दोहरे अर्थ: कभी-कभी भजनकार ऐसे शब्दों का प्रयोग करते थे जो दिखने में लगभग एक जैसे होते थे लेकिन उनके अर्थ अलग-अलग होते थे। भजन 96:4, 5 में, कवि दो हिब्रू शब्दों का उपयोग करता है जो एक जैसे दिखते हैं: '"एलोहिम," जिसका अर्थ है "देवता," और '"एलिलिम," जिसका अर्थ है "झूठे देवता" या "मूर्तियाँ।" भजनकार हमें अपने संदेश को समझने में मदद करने के लिए इन शब्दों का उपयोग करता है: इस्राएल के निकट अन्य लोगों के समूहों के देवता ऐसे दिख सकते हैं मानो वे "एलोहीम" या देवता हों। लेकिन वे केवल '"एलिलिम" या मूर्तियाँ हैं।

सेला॰ भजनकारों ने "सेला" शब्द का प्रयोग किया। यह शब्द पाठक को रुकने और कविता के संदेश के बारे में सोचने के लिए कहता है। या "सेला" संगीतकार को गाने में बदलाव के लिए सचेत करता है।

बुधवार **जनवरी 3**

परमेश्वर से प्रार्थनाएँ (2 शमूएल 23:1, 2)

पढ़ें, 2 शमूएल 23:1, 2 और रोमियों 8:26, 27। ये पद हमें प्रार्थना के बारे में क्या सिखाते हैं?

भजन की पुस्तक में प्रार्थनाएँ और स्तुतिगान परमेश्वर के लिए लिखी गई हैं। साथ ही, ये प्रार्थनाएँ और स्तुतिगान परमेश्वर की ओर से आती हैं। परमेश्वर ने भजनकारों को उनके विचार दिये।

भजनकार ईश्वर से व्यक्तिगत रूप से बात करते हैं। उनकी कविताओं में, ईश्वर "मेरा राजा और मेरा परमेश्वर" है, (भजन 5:2), और "परमेश्वर,"

(भजन 84: 3)। भजनकार अक्सर परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि "मेरे वचनों पर कान लगा" (भजन 5: 1), "मेरी प्रार्थना सुन!" (भजन 39: 12), "मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर" (भजन 25: 18), "मुझे उत्तर दे" (भजन 102: 2), और "मेरे प्राण बचा" (भजन 6: 4)। ये शब्द हमें किसी ऐसे व्यक्ति को दिखाते हैं जो ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है।

भजन शक्तिशाली और सुंदर प्रार्थनाएँ हैं। वे इतने शक्तिशाली और सुंदर हैं क्योंकि वे परमेश्वर का वचन, बाइबल भी हैं। पौलुस हमें बताता है कि प्रार्थना कैसे काम करती है: "आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है; और मनों का जाँचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है" (रोमियों 8: 26, 27)। भजन की पुस्तक में प्रार्थनाएँ हमें ईश्वर के साथ वही अनुभव प्राप्त करने में मदद करती हैं जिसके बारे में पौलुस बात करता है।

जब यीशु ने शिक्षा दी और उपदेश दिया तो उसने भजन संहिता की पुस्तक से उद्धरणों का उपयोग किया। लूका 20: 42, 43 में, यीशु भजन 110: 1 से इस उद्धरण का उपयोग करता है: "दाऊद स्वयं भजन की पुस्तक में कहता है, "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, 'मेरे दाहिने हाथ [मेरे बगल में] बैठ जब तक मैं अपने शत्रुओं को अपने नियंत्रण में रखूँ"।

जैसा कि हमने कल देखा, भजन संहिता की कुछ कविताएँ इस्राएल के इतिहास के बारे में हैं। कई भजनकार अपने जीवन के अनुभवों और यहूदी लोगों के अनुभवों के बारे में लिखते हैं। जैसे ही आप भजन की पुस्तक पढ़ते हैं, आप देखेंगे कि कविताएँ आशा, प्रशंसा, भय, क्रोध और दुःख के बारे में बात करती हैं। ये चीजें भावनाएँ और अनुभव हैं जिन्हें हर जगह और हर उम्र के लोग जानते और समझते हैं। भजन संहिता की कविताएँ हममें से प्रत्येक के लिए हैं, क्योंकि वे हमारे अपने अनुभवों के बारे में हैं।

भजन की पुस्तक हमारे अपने विश्वास - अनुभव के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है? यीशु द्वारा भजन का उपयोग हमें उस प्रश्न का उत्तर देने में कैसे मदद करता है?

परमेश्वर और उसके पवित्र कवि (भजनकार) (भजन 16: 8)

भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकारों के जीवन में ईश्वर कितना महत्त्वपूर्ण था? पढ़ें, भजन 16: 8; भजन 44: 8; भजन 46: 1; भजन 47: 1, 7; भजन 57: 2; भजन 62: 8; भजन 82: 8; और भजन 121: 7। भजन संहिता की पुस्तक में ईश्वर कवियों के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। कवि पूरी तरह से ईश्वर के लिए जीते थे। उनकी कविताएँ, प्रशंसाएँ और जीवन के अनुभव वही करने के बारे में थे जो ईश्वर चाहता था। परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी पर सब कुछ बनाया। परमेश्वर संपूर्ण पृथ्वी का राजा और न्यायी भी है। परमेश्वर अपने बच्चों को वह सब कुछ देता है जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है। इसलिए, हम हर समय परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। जब परमेश्वर के लोग क्लेशित होते हैं, तो उनके शत्रु "हमेशा कहते रहते हैं, 'तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?"' (भजन 42: 10)। परमेश्वर के लोग इसका उत्तर जानते हैं। परमेश्वर हमेशा उनके साथ हैं। वह अपने लोगों को विफल नहीं कर सकता। इसलिए, उसके लोग हमेशा उस पर भरोसा कर सकते हैं। भजन संहिता की पुस्तक हमें सिखाती है कि भविष्य में सभी लोग परमेश्वर की आराधना करेंगे (भजन 47: 1; भजन 64: 9)।

यह विचार कि ईश्वर हमारे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, उसे आराधना का भी सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाता है। पुराने नियम के समय में आराधना, उपासना से भिन्न थी जैसा कि आज बहुत से लोग समझते हैं। पुराने नियम के समय में आराधना लोगों के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी। इसलिए, भजनकारों ने अपनी आराधना और प्रशंसा के गीतों में, जो कुछ भी हुआ, अच्छा और बुरा दोनों के बारे में लिखा। परमेश्वर चाहे जहाँ भी हों, भजनकारों की बात सुनता है। वह उन्हें अपने सही समय पर उत्तर देता है (भजन संहिता 3: 4; भजन संहिता 18: 6; भजन संहिता 20: 6)।

भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकारों ने समझा कि ईश्वर ऐसे कार्य करता है या कर सकता है जो कोई मनुष्य नहीं करता या नहीं कर सकता। परमेश्वर स्वर्ग में रह सकता है, और साथ ही, वह पृथ्वी पर अपने लोगों के साथ रह सकता है। परमेश्वर एक ही समय में दूर भी हो सकता है और निकट भी। परमेश्वर हर जगह और, एक ही समय में, अपने मंदिर में

हो सकता है (भजन 11: 4)। परमेश्वर छिपा हुआ हो सकता है (भजन 10: 1 और, साथ ही, हमारे साथ हमेशा के लिए रहता है (भजन 41: 12)। ये चीजें इंसानों के लिए संभव नहीं हैं। परन्तु ये बातें परमेश्वर के लिए संभव हैं (भजन 24: 7-10)। कवियों ने यह भी समझा कि परमेश्वर भला था और हर अनुभव में उनके साथ था। इस ज्ञान ने उन्हें आशा दी जब वे परमेश्वर द्वारा बचाये जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

क्या हम ईश्वर को केवल अपने जीवन के कुछ हिस्सों तक ही सीमित रख सकते हैं? भजन की पुस्तक हमें इस प्रश्न का उत्तर देने में कैसे मदद करती है? क्या आप परमेश्वर को अपने जीवन के कुछ हिस्सों से दूर रखने की कोशिश कर रहे हैं? यदि हाँ, तो आपके जीवन के वे कौन से हिस्से हैं?

शुक्रवार **जनवरी 5**

अतिरिक्त विचार: Read Ellen G. White "The Temple and Its Dedication" pages 35-50 in Prophets and Kings. "The Benefits of Music" pages 291 292 in Messages to Young People.

भजन संहिता की पुस्तक में 150 कविताएँ हैं। इन कविताओं को पाँच पुस्तकों में समूहीकृत किया जा सकता है: पुस्तक 1 (भजन 1-41), पुस्तक 2 (भजन 42-72), पुस्तक 3 (भजन 73-89), पुस्तक 4 (भजन 90-106), और पुस्तक 5 (भजन 107-150).

भजन संहिता की पुस्तक ने इब्रानी कविताओं और गीतों के अन्य संग्रहों से कविताएँ उधार लीं: कोरह के पुत्रों सें भजन 42-49, भजन 84, भजन 85, भजन 87, भजन 88), आसाप से (भजन 73-83), गीत मंदिर तक जाने के लिए (भजन 120-134), और स्तुति गीत (भजन 111-118; भजन 146-150)। भजन 72: 20 हमें राजा दाऊद द्वारा लिखी गई कविताओं के एक छोटे संग्रह के बारे में बताता है।

भजन संहिता की अधिकांश कविताएँ राजा दाऊद (1,000 ईसा पूर्व) के समय में लिखी गई थीं। लेकिन दाऊद की मृत्यु के बाद कविताओं और गीतों का संग्रह बढ़ता रहा। नए मंदिर के निर्माण के बाद, कई लोगों का मानना है कि एज्रा ने परमेश्वर के सेवकों को हिब्रू गीतों और कविताओं के विभिन्न संग्रहों को एक साथ एक पुस्तक में संयोजित करने का आदेश दिया था।

परमेश्वर ने इन पवित्र लोगों का उनके कार्य में नेतृत्व किया। परमेश्वर ने उन्हें दिखाया कि भजन संहिता की पुस्तक में कौन सी कविताएँ शामिल करनी हैं। हम भजन संहिता की पुस्तक के निर्माण में ईश्वर की बुद्धि और मनुष्य की कुशलता दोनों को देख सकते हैं। ईश्वर और मनुष्य के एक साथ जुड़ने का यह संयोजन हमें यह बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है कि कैसे यीशु, जो ईश्वर था, हम में से एक बन गया। "बाइबिल की सच्चाई ईश्वर की ओर से आती है। मनुष्य ईश्वर के विचारों को मानवीय भाषा में लिखते हैं। तो, बाइबल ईश्वर और मनुष्यों के एक साथ जुड़ने का एक उदाहरण है। यही चीज हम यीशु में देखते हैं। यीशु परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र था। बाइबल यीशु के बारे में जो कहती है वही हम बाइबल के बारे में भी कह सकते हैं। बाइबल और यीशु दोनों 'मानव देह बन गया और हमारे बीच रहा' [यूहन्ना 1: 14,।" - एलेन जी॰ व्हाइट] द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, पृष्ठ 8।

चर्चागत प्रश्न:

1. **परमेश्वर और इंसानों ने मिलकर भजन संहिता की किताब में कविताएँ बनाईं। यह विचार हमें यह समझने में कैसे मदद करता है कि ईश्वर अपने लोगों के बहुत करीब रहना चाहता है?**

2. **कक्षा में, उस समय के बारे में बात करें जब भजन संहिता की पुस्तक ने पीड़ा के समय में आपकी मदद की थी। उस समय भजन संहिता की पुस्तक ने आपको क्या आशा दी?**

पाठ 2

जनवरी 6-12

हमें प्रार्थना करना सिखाएँ
(Teach us to pray)

सब्त अपराह्न **जनवरी 6**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 105: 5; कुलुस्सियों 3: 16; याकूब 5: 13; भजन 44; भजन 22; भजन 13; भजन 60: 1-5 ।

याद वचन: "वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, "हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे" (लूका 11: 1)।

कई मसीहियों का मानना है कि वास्तविक प्रार्थना वह नहीं है जिसे आप पहले से योजना बनाते हैं या लिखते हैं और फिर बाद में कहते हैं। लेकिन याद रखें कि यीशु के चेलों ने उससे उन्हें प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहा था। उसकी शिक्षा उसके चेलों के लिए एक आशीष थी। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए बाइबिल के बीच में एक प्रार्थना पुस्तक, भजन संहिता की पुस्तक रखी। भजन संहिता की पुस्तक हमें दिखाती है कि पुराने नियम के समय में परमेश्वर के लोग कैसे प्रार्थना करते थे। भजन संहिता की पुस्तक हमें यह भी सिखाती है कि हम आज कैसे प्रार्थना कर सकते हैं।

आरंभिक समय से, भजन संहिता की पुस्तक ने परमेश्वर के लोगों को प्रार्थना करना सिखाया (1इतिहास 16: 7, 9; नहेमायाह 12: 8)। जब यीशु ने प्रार्थना की, तो उसने भजन संहिता की आयतों का भी उपयोग किया (मती 27: 46)। बाइबल हमें अपनी आराधना में भी यही कार्य करना सिखाती है (इफिसियों 5: 19)। इस सप्ताह, हम देखेंगे कि कैसे भजन संहिता की पुस्तक ने परमेश्वर के लोगों को उसके प्रति प्रेम और अपने विश्वास को बढ़ाने में मदद की। याद रखें, भजन संहिता की कविताएँ प्रार्थनाएँ हैं। वे हमें ईश्वर के बारे

* सब्त, जनवरी 13 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

में सिखाते हैं। ये शिक्षाएँ हमारे प्रार्थना करने के तरीके को बदल सकती हैं। भजन संहिता की पुस्तक की कविताओं को अपनी निजी प्रार्थनाएँ बनाएँ। जब हम भजन गाते हैं, तो हमारा प्रार्थना जीवन मजबूत हो जाएगा। हम अधिक बार प्रार्थना भी करेंगे।

रविवार **जनवरी 7**

प्रार्थना में भजन संहिता की पुस्तक का उपयोग कैसे करें (भजन 105:5

मसीहियों की आराधना अनुभव में भजन संहिता की पुस्तक का क्या महत्त्वपूर्ण हिस्सा है? पढ़ें, भजन 105:5; कुलुस्सियों 3:16; याकूब 5:13।

हम दैनिक जीवन में भजन संहिता की पुस्तक का उपयोग कैसे कर सकते हैं? प्रत्येक दिन, भजन संहिता से एक कविता पढ़ें। भजन 1 से शुरुआत करें और किताब के अंत तक पहुँचने तक हर दिन एक नई कविता पढ़ें। भजन संहिता की पुस्तक को पढ़ने का एक और तरीका यह है कि आप एक ऐसा विषय चुनें जो आपके उसी अनुभव के बारे में बात करता हो। आप कई अलग-अलग विषयों में से चुन सकते हैं। जैसा कि हमने पिछले सप्ताह देखा, एक विषय विलाप है। विलाप दुखद भावनाओं के बारे में एक कविता है। विलाप सहायता के लिए ईश्वर से की गई पुकार भी है। इसमें धन्यवाद कविताएँ, स्तुति भजन, पापों को स्वीकार करने के बारे में गीत और ज्ञान की कविताएँ भी हैं। ज्ञान भरी कविताओं में कवि ईश्वर से सलाह मांगते हैं। जैसा कि हमने देखा, इतिहास की कविताएँ इस्राएल के अतीत के बारे में बात करती हैं। क्रोध के बारे में भी कविताएँ हैं। कविताओं का दूसरा समूह यात्रा गीत हैं। लोगों ने परमेश्वर की आराधना करने के लिए यरूशलेम जाते समय यात्रा गीत गाए।

तो, हमें भजन संहिता की कविताओं को कैसे समझना चाहिए? सबसे पहले कविता पढ़ें। फिर इसके बारे में ध्यान से सोचें और प्रार्थना करें। ध्यान दें कि कवि परमेश्वर से किस प्रकार बात करता है। उसकी प्रार्थना के कारण क्या हैं? आपका अपना अनुभव कवि के अनुभव से कैसे मेल खाता है? कविता आपके अनुभव के बारे में बात करने में कैसे मदद कर सकती है? आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कवि कितनी बार यह समझता है कि आपके जीवन में क्या हो रहा है।

यदि आप कुछ ऐसा पढ़ते हैं जिससे आपको लगे कि आपको अपना व्यवहार या अपनी सोच बदलने की जरूरत है तो क्या होगा? रुकें और अपने आप से पूछें कि क्या कविता आपकी झूठी आशाओं को सही कर रही है। या क्या कविता आपसे अपने जीवन में कुछ और बदलने के लिए कह रही है? इस बारे में सोचें कि कविता का संदेश आपको यीशु और आपको बचाने के उनके कार्य के बारे में क्या सिखाता है। हम एक विचार को बेहतर ढंग से तब समझ पाएँगे जब हम देखेंगे कि यह क्रूस और ईश्वर द्वारा हमें प्रदान की जाने वाली क्षमा से कैसे जुड़ता है।

जैसे ही आप पढ़ते हैं, परमेश्वर से अपने बाइबिल सत्य को अपने दिल और दिमाग पर लिखने के लिए कहें। यदि कविता आपको किसी परिचित के बारे में सोचने पर मजबूर करती है, तो उसके लिए प्रार्थना करें। जब हम ये काम करते हैं, तो भजन संहिता के संदेश हमारे जीवन को आशीर्वाद देंगे। "परमेश्वर को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो" (कुलुस्सियों 3: 16)। इस पद में आपको कौन सा शब्द चित्र दिखाई देता है? इसका मतलब क्या है? यीशु की शिक्षाएँ हमारे अंदर कैसे रहती हैं? बाइबल पढ़ने से हमें यह अनुभव प्राप्त करने में किस प्रकार मदद मिलती है?

सोमवार **जनवरी 8**

संकट के समय में भरोसा रखें (भजन 44)

क्या आपने महसूस किया है कि ईश्वर बहुत दूर है? क्या आपने सोचा है कि परमेश्वर आपको कष्ट क्यों देता है और बुरी चीजें क्यों होने देता है? नि:संदेह, हम सभी ने ऐसा ही महसूस किया है। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले कवियों ने भी कभी-कभी ऐसा ही महसूस किया।

भजन 44 हमसे क्या कहता है? इतिहास के हर युग में मसीहियों के लिए यह संदेश क्यों महत्त्वपूर्ण है?

क्या आपने देखा है कि भजन संहिता की पुस्तक में कुछ कविताएँ हैं जिनका उपयोग हम चर्च में आराधना के लिए नहीं करते हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है? शायद हम सोचते हैं कि भजन संहिता की किताब में कुछ ऐसे शब्द हैं जिन्हें हमें चर्च में आराधना के दौरान नहीं कहना चाहिए। या शायद हम सोचते हैं कि भजन संहिता की पुस्तक में कुछ अनुभव इतने भयानक और बदसूरत हैं कि सार्वजनिक प्रार्थना के दौरान या यहाँ तक कि हमारी निजी उपासना में भी इसके बारे में बात नहीं की जा सकती।

हाँ, हमें प्रार्थना में बोले जाने वाले शब्दों का चयन सावधानी से करना चाहिए। साथ ही, हमें अपने वास्तविक डर और भावनाओं को अपने दिल के अंदर नहीं दबाना चाहिए। अगर हम परमेश्वर को यह नहीं बताते कि हम कैसा महसूस करते हैं, तो हमें दर्द सहना पड़ेगा। इससे भी बदतर, हम परमेश्वर पर भरोसा करना नहीं सीखेंगे। जब हम भजन संहिता की कविताओं को अपनी प्रार्थना बनाते हैं, तो हम अपने दिल में बिना किसी डर के प्रार्थना करना सीखते हैं। ये कविताएँ हमें वो बातें कहने की हिम्मत देती हैं जिन्हें हम कहने से डरते हैं। हम सीखते हैं कि ईश्वर हमसे यह अपेक्षा नहीं करता है कि हम ऐसा व्यवहार करें जैसे कि हमारी पीड़ा और दर्द वास्तविक नहीं है।

भजन 44 पीड़ित निर्दोष मसीहियों की मदद करता है। जैसा कि कवि कहते हैं: "हमारे मन न बहके, न हमारे पैर तेरी राह से मुड़े; तौभी तूने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला, हमको घोर अंधकार में छिपा दिया है" (भजन 44:18, 19)। लेकिन देखें कविता की शुरुआत कैसे होती है। भजनकार इस बारे में बात करता है कि परमेश्वर ने अतीत में अपने लोगों के लिए कैसे अद्‌भुत काम किए। इसलिए, भजनकार ईश्वर पर भरोसा करता है न कि "अपने धनुष पर" (भजन 44:6)।

परमेश्वर के लोगों को वैसे भी परेशानी आती है। भजनकार अपनी सभी परेशानियों की एक सूची बनाता है। उनका दुखभरा गाना लंबा और दर्दभरा है। क्या भजनकार ने यह आशा छोड़ दी है कि ईश्वर अपने लोगों को बचाएगा? नहीं, भजनकार प्रार्थना करता है, "अपनी करुणा के निमित हमको छुड़ा ले" (भजन 44: 26)। इस्राएल की मुसीबतें जितनी भी बुरी हों, भजनकार जानता है कि ईश्वर अपने लोगों को सुनता है और उनसे प्रेम करता है।

उस समय को याद करें जब परमेश्वर ने आपको अतीत में बचाया था। आपने अपने हृदय में ईश्वर के कितने करीब महसूस किया? उस समय को याद करने से आपको कैसे मदद मिल सकती है जब आपकी परेशानियाँ आपको यह सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि ईश्वर बहुत दूर है?

मंगलवार **जनवरी 9**

एक अत्यंत दुखद गीत (भजन 22)।

कल हमने सीखा कि जब हम भजन संहिता की कविताओं को अपनी व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ बनाते हैं तो हमारा प्रार्थना जीवन कैसे बेहतर हो जाता है। ये कविताएँ हमें आशा भी देती हैं। वे हमें यह जानने में मदद करते हैं कि परमेश्वर हमारे दिलों के बहुत करीब है।

भजन 22 पढ़ें। जब हम क्लेशित होते हैं तो परमेश्वर पर भरोसा करने के बारे में इस कविता से क्या सीख सकते हैं?

भजन 22: 1 के दुखद शब्द क्लेशित लोगों को वे शब्द दे सकते हैं जिनकी उन्हें अपनी उदासी और अकेलेपन की भावनाओं को साझा करने के लिए आवश्यकता है। भजनकार रोता है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहाँ है?" (भजन 22: 1)।

ये शब्द मसीहियों को अच्छी तरह से ज्ञात हैं। ये शब्द यीशु ने क्रूस पर पीड़ा के समय कहे थे। जब यीशु ने उन्हें कहा, तो उसने हमें यह दिखाया कि हमारे उद्धारकर्ता के रूप में उसके अनुभव के लिए भजन संहिता की पुस्तक कितनी महत्त्वपूर्ण है (मती 27: 46)।

भजनकार उसी भजन में आशा के शब्द भी कहता है: "सभा के बीच मैं तेरी प्रशंसा करूँगा" (भजन 22: 22)। पद 22 की तुलना पद 1 से करें। पद 1 दुख और दर्द से भरा है। लेकिन पद 22 विश्वास और प्रशंसा से भरा है। पद 22 में आशा के शब्द और भावनाएँ पद 1 में दुखद भावनाओं और पीड़ा के अनुभव से मेल नहीं खाते हैं। तो, भजनकार इतनी पीड़ा सहते हुए परमेश्वर की स्तुति कैसे कर सकता है? क्योंकि भजनकार को ईश्वर पर भरोसा है।

यह अनुभव हमें भी मिल सकता है। जब हम भजन 22 के शब्दों की प्रार्थना करते हैं, तो हम अपनी पीड़ा से परे देखना सीखते हैं। हम विश्वास की आँखों से उस समय की ओर देखते हैं जब परमेश्वर हमें अपनी दया से ठीक कर देगा और हमारे जीवन को नया बना देगा।

जब हम भजन संहिता की कविताओं (भजन) को अपनी प्रार्थना बनाते हैं, तो हम आध्यात्मिक शक्ति और समझ में विकसित होंगे। भजन संहिता की पुस्तक हमें हमारी सबसे दर्दनाक भावनाओं और अनुभवों के लिए शब्द देती है। सबसे अच्छी बात तो यह है कि भजन संहिता की पुस्तक हमें पीड़ा में नहीं छोड़ती। इसकी कविताएँ हमें दर्द, चोट, निराशा, क्रोध और उदासी से मुक्त होने में मदद करती हैं। कविताएँ हमें सदैव ईश्वर पर भरोसा रखना सिखाती हैं।

हमने देखा कि कैसे भजन 22 दुख से शुरू होता है और प्रशंसा के साथ समाप्त होता है। भजन संहिता की कई कविताएँ ऐसा ही करती हैं। दुःख

से प्रशंसा तक का यह अनुभव हमें उस परिवर्तन को दिखाता है जो परमेश्वर की दया स्वीकार करने पर हमारे जीवन में होता है।

हम अपनी परेशानियों से परे देखना और ईश्वर पर भरोसा करना कैसे सीख सकते हैं?

बुधवार **जनवरी 10**

निराशा से आशा की ओर (भजन 13)

जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, हम सभी ने कभी-कभी महसूस किया है कि ईश्वर बहुत दूर है। कठिन समय के दौरान, हम सोच सकते हैं, परमेश्वर मुझे कष्ट क्यों सहने दे रहा है? जिन भजनकारों ने भजन संहिता की पुस्तक लिखी, वे भी अक्सर यही सोचते थे। हाँ, हमारे पाप हमें दु:ख पहुँचाते हैं। लेकिन कभी-कभी हमारी पीड़ा हमारी गलती नहीं होती और उचित नहीं होती। हम सभी ने ऐसा ही महसूस किया है !

भजन 13 पढ़ें। इस कविता में भजनकार किन दो भावनाओं के बारे में बात करता है? आपके अनुसार भजनकार ने ऐसा कौन सा निर्णय लिया जिसके कारण उसे चीजों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ा?

"हे परमेश्वर कब तक ! क्या तू सदैव मुझे भूला रहेगा?" (भजन 13: 1)। फिर, कभी-कभी किसने ऐसा महसूस नहीं किया है? (क्या परमेश्वर सचमुच हमें भूल जाता है? बिल्कुल नहीं! इसलिए, हमें ऐसा बिल्कुल भी महसूस नहीं करना चाहिए)।

कभी-कभी जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम केवल अपने बारे में और अपनी समस्याओं के बारे में सोचते हैं। केवल अपनी समस्याओं के बारे में प्रार्थना करना एक गलती है। भजन 13 हमें दिखाता है कि प्रार्थना करते समय हमें ईश्वर और उसकी हम पर दया को याद रखना चाहिए। हमें ईश्वर को बताना चाहिए कि हमें विश्वास है कि वह हमेशा अपने वादे पूरे करता है। वह कभी नहीं बदलता।

नि:संदेह, भजन 13 की शुरुआत रोने और शिकायतों से होती है। लेकिन भजन शिकायतों और आँसुओं के साथ खत्म नहीं होती। हमें बाइबल की यह महत्त्वपूर्ण सच्चाई याद रखनी चाहिए।

भजन 13 हमें ईश्वर की बचाने वाली दया और प्रेम पर भरोसा करना सिखाता है (भजन 13: 5)। जब हम बचाये जाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो हमारा भय और चिंता गायब हो जाएगी (भजन 13: 1-4)। तब

हमारा हृदय बदल जायेगा। हमारी चीखें खुशी और प्रशंसा के गीत बन जाएँगी। हम अब निराशा महसूस नहीं करेंगे।

यदि हम चाहते हैं कि यह परिवर्तन हो, तो हमें केवल भजन 13 के शब्दों को पढ़ने के अलावा और भी बहुत कुछ करना चाहिए। हमें उन पर विश्वास करना चाहिए। जब हम भजन 13 की प्रार्थना करते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें उस तरीके से जीने में मदद करे जैसा यह कविता कहती है। भजन संहिता की पुस्तक की कविताएँ परमेश्वर का जीवित वचन, बाइबल हैं। परमेश्वर का वचन हमारे जीवन, हमारे हृदय और हमारे व्यवहार को बदल देता है। जब हम परमेश्वर के वचन, बाइबल को हमें बदलने की अनुमति देते हैं, तब हम यीशु के साथ जुड़ जाते हैं। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, यीशु ने अपने जीवन के हर हिस्से में परमेश्वर की संपूर्ण योजना दिखाई। यीशु ने भजन संहिता की कविताओं को अपनी प्रार्थनाएँ बनाया। हमें भी ऐसा करना चाहिए।

आपकी परेशानियाँ आपको हृदय में ईश्वर के करीब कैसे ला सकती हैं? क्यों, यदि आप सावधान नहीं हैं, तो क्या आपकी परेशानियाँ आपको उससे दूर कर सकती हैं?

बृहस्पतिवार **जनवरी 11**

कृपया हमारे पास वापस आ (भजन 60: 1-5)।

भजन संहिता 60: 1-5 पढ़ें। भजन 60 एक विलाप है। हमने सीखा कि विलाप दुखद गीत या कविताएँ थे। यह विलाप एक प्रार्थना भी है। आपके अनुसार यह प्रार्थना करने का सबसे अच्छा समय कौन सा होगा? ऐसे समय में जब हमारा जीवन आनंद से भर जाता है, और हम खुशी महसूस करते हैं, हम भजनों की पुस्तक में दुखद गीतों को पढ़ने से आशीर्वाद कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

विलाप भजन संहिता की पुस्तक में गीतों या कविताओं का एक विशेष समूह है। जैसा कि हमने देखा, ये दुखद गीत भी प्रार्थनाएँ हैं। विलाप कठिन समय के दौर में लोगों के अनुभवों के बारे में बात करता है। इन अनुभवों में बीमारी, दु:ख या आध्यात्मिक पीड़ा शामिल हो सकती है। कभी-कभी एक विलाप में तीनों अनुभव शामिल हो सकते हैं।

क्या हमें भजन संहिता की पुस्तक में विलाप को केवल तभी पढ़ना चाहिए जब हम क्लेशित हों? बिल्कुल नहीं। जीवन में सुख

और दुख दोनों ही समय में विलाप हमें कई तरह से आशीर्वाद दे सकता है।

भजन संहिता की पुस्तक में दुखद गीत हमें पीड़ित लोगों से प्यार करना सिखाते हैं। जब हम सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर को उसके आशीर्वाद के लिए धन्यवाद देते हैं, तो हमें उन लोगों को याद रखना चाहिए जो पीड़ित हैं। निश्चित रूप से, अभी हमारे लिए चीजें अच्छी चल रही होंगी। लेकिन हमारे चारों ओर उन लोगों के बारे में क्या जो भयानक तरीकों से पीड़ित हैं? जब हम भजन संहिता की पुस्तक में लिखे दुखद गीतों को अपनी प्रार्थना बनाते हैं, तो हम उन लोगों को याद करते हैं जो कठिन समय में हैं। भजन संहिता की पुस्तक हमें दर्द में पड़े लोगों के प्रति प्रेम से भर देगी और हमें उनकी मदद करने के लिए प्रेरित करेगी, जैसा कि यीशु ने किया था। "यह पृथ्वी अत्यंत बीमार लोगों से भरे एक बड़े अस्पताल के समान है। यीशु बीमारों को चंगा करने आया। यीशु यह घोषणा करने भी आया था कि वह लोगों को शैतान से मुक्त करायेगा। यीशु के पास स्वास्थ्य और शक्ति थी। उसने बीमारों, पीड़ितों और दुष्टात्माओं से भरे लोगों को बचाने के लिए अपना जीवन दे दिया। यीशु ने उन सभी को स्वीकार किया जो उपचार के लिए उसके पास आए। यीशु जानता था कि जिन लोगों ने उससे मदद मांगी थी, वे ही अपनी बीमारी का कारण बने थे। यीशु ने उन्हें चंगा करने से इन्कार नहीं किया। यीशु का प्रेम इन बीमारों में प्रवेश कर गया। उन्हें यकीन हो गया कि उन्होंने पाप किया है। यीशु ने इनमें से कई लोगों की आत्माओं और शरीरों को ठीक किया। यीशु के बारे में शुभ समाचार आज भी उतना ही शक्तिशाली है जितना उस समय था। इसलिए, हमें आज वही चमत्कार होते देखने की उम्मीद करनी चाहिए।" - एलेन जी व्हाइट, वेलफेयर मिनिस्ट्री, पृष्ठ 24, 25।

क्या आप अभी किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे आपकी प्रार्थनाओं और ईश्वर के उपचारात्मक स्पर्श की आवश्यकता है? अभी इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। यीशु से इस व्यक्ति के जीवन के लिए आशीर्वाद बनने में मदद करने के लिए कहें।

शुक्रवार **जनवरी 12**

अतिरिक्त विचार : Read Psalm 42: 8 [and Ellen G. White] "Poetry and Song" [Pages 159-168] in Education- As Psalm 42 and the book Education show us] how are prayer and song connected\

'एजुकेशन' नामक पुस्तक में भजन 42:8, और एलेन जी० ह्वाइट, "भजन और गीत," पृष्ठ 159-168 पढ़ें। जैसा कि भजन 42 और 'एजुकेशन' नामक पुस्तक हमें दिखाती है, प्रार्थना और गीत कैसे जुड़े हुए हैं?

कई भजनों में, दाऊद ने लिखा कि उसे अपने पापों के लिए कितना खेद है। (एक प्रसिद्ध उदाहरण भजन 51 है।) एलेन जी व्हाइट का कहना है कि ये भजन प्रार्थनाएँ हैं जो पाप के लिए वास्तविक दु:ख दिखाती हैं (स्टेप्स टू क्राइस्ट, पृष्ठ 24, 25 पढ़ें)। एलेन जी व्हाइट मसीहियों को भजन संहिता की पुस्तक से पद सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है ताकि उन्हें यह महसूस करने में मदद मिल सके कि परमेश्वर उनके दिल और जीवन में उनके करीब है। एलेन जी व्हाइट इस बारे में यह भी बात करती है कि जब शैतान ने उनसे पाप करवाने या उन्हें भयभीत करने की कोशिश की तो यीशु ने भजन संहिता की पुस्तक से पद कैसे कहा। एलेन जी० व्हाइट हमें बताती है: "कई बार पवित्र गीतों के शब्द हमारे दिलों को विश्वास से भर देते हैं। ये गीत हमें हमारे पापों के लिए खेद महसूस कराते हैं। वे हमें आशा, प्रेम और आनंद देते हैं! . . . नि:संदेह, कई गीत प्रार्थनाएँ हैं।" एजुकेशन, पृष्ठ 162-168।

जब हम प्रार्थना करते हैं और भजन संहिता की पुस्तक में कविताएँ और गीत गाते हैं, तो कवियों का विश्वास, साहस और आशा हमारी भी बन जाती है। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकार हमें अपनी आध्यात्मिक यात्रा जारी रखने और हार न मानने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद करते हैं। भजनकार हमें सांत्वना देते हैं। वे हमें यह जानने में मदद करते हैं कि हम अकेले नहीं हैं। हमारे जैसे ही अन्य लोगों को भी अंधेरे समय में कष्ट सहना पड़ा है। परमेश्वर की दया से, उन्होंने बुराई के खिलाफ लड़ाई जीत ली। भजन संहिता की किताब हमें यह भी दिखाती है कि यीशु हमें बचाने के लिए कैसे काम करता है। वह हमारे लिये प्रार्थना करने के लिये सदैव जीवित रहता है (इब्रानियों 7:25)।

भजन संहिता की पुस्तक में कविताएँ, प्रार्थनाएँ और गीत हैं। लोगों ने उन्हें लिखा। लेकिन कविताएँ परमेश्वर से आती हैं। इसलिए, जब हम भजन की पुस्तक को अपनी आराधना में शामिल करते हैं, तो हम हमारे लिए परमेश्वर की योजना को सीखते हैं। उसकी शक्तिशाली दया हमें भी ठीक कर देगी।

चर्चागत प्रश्नः

1. बहुत से लोग सोचते हैं कि जब आप प्रार्थना करते हैं तो आपको वही कहना चाहिए जो आपके मन में आए और समय से पहले आप जो कहना चाहते हैं उसके बारे में ज्यादा न सोचें। प्रार्थना करने का यह तरीका प्रार्थना करने का एकमात्र तरीका क्यों नहीं है? भजन संहिता की पुस्तक हमारे प्रार्थना जीवन को कैसे बेहतर बना सकती है?

2. भजन संहिता की पुस्तक हमारे सार्वजनिक या समूह-प्रार्थना अनुभव को कैसे बेहतर बना सकती है? ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे आपका चर्च अपनी आराधना में भज हता का उपयोग कर सकता है?

3. भजन संहिता की पुस्तक हमें विश्वास और ईश्वर की उपचारात्मक दया के बारे में क्या सिखाती है?

पाठ 3

जनवरी 13-19

प्रभु राजा है
(The Lord is King)

सब्त अपराह्न **जनवरी 13**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 8; भजन 100; भजन 97; भजन 75; भजन 94: 14; गलातियों 3: 26-29; भजन 19: 7।

याद वचन: "यहोवा राजा है; उसने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है; यहोवा पहिरावा पहिने हुए, सामर्थ्य का फेटा बांधे है। इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने का" (भजन) 93: 1)।

भजन संहिता की पुस्तक हमें सिखाती है कि प्रभु सारी पृथ्वी का राजा है। प्रभु ने सब कुछ बनाया। वह सब कुछ चालू भी रखता है। हमारे राजा के रूप में, प्रभु निष्पक्ष और पवित्र है। उसकी व्यवस्थाएँ भली हैं। उसके नियम उन सभी को जीवन देते हैं जो उनका पालन करते हैं। प्रभु एक निष्पक्ष न्यायी भी है। वह इस धरती पर जीवन की रक्षा करता है। वह उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो उसकी व्यवस्था का पालन करते हैं और उन लोगों को दंडित करता है जो उसकी अवज्ञा करते हैं। प्रभु निर्णय करता है कि वह कब दंड देगा और कब पुरस्कार देगा। जब वह तैयार होगा तो वह पुरस्कार और दंड देगा, अपने समय पर, हमारे समय पर नहीं।

इस्राएल के साथ परमेश्वर का वादा एक महत्त्वपूर्ण कारण है कि वह इस पृथ्वी को सुरक्षित रखता है। उसका वादा हमें उसके उद्धार की योजना को

* सब्त, जनवरी 20 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

दिखाता है। अपने वादे के हिस्से के रूप में, परमेश्वर ने पृथ्वी पर अन्य सभी लोगों के समूहों से ऊपर इस्राएल को अपने लोगों के रूप में अपनाया। प्रभु अपने लोगों से किया हुआ वादा निभाता है। वह तब भी हमारी देखभाल करता रहता है जब हम कभी-कभी उसके विरुद्ध पाप करते हैं।

क्योंकि प्रभु राजा है, हम इस धरती पर सुरक्षित जीवन के लिए उस पर भरोसा कर सकते हैं। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले कवि चाहते हैं कि हम बाइबल के इस सत्य को समझें। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं, जैसा कि भजनकारों ने पूरे दिल से किया।

रविवार **जनवरी 14**

प्रभु ने हमें बनाया (भजन 8 और भजन 100)।

भजन 8 और भजन 100 पढ़ें। ये दो भजन, या कविताएँ, हमें परमेश्वर और उसके लोगों के बारे में क्या सिखाते हैं?

बाइबल हमें सिखाती है कि ईश्वर ने सब कुछ बनाया। आकाश की सुंदरता हमें दिखाती है कि हमारा परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है (भजन 19: 1-4; भजन 97: 6)। परमेश्वर का नाम सारी पृथ्वी पर सबसे अद्‌भुत नाम है (भजन संहिता 8: 1,9)! प्रभु की कोई शुरुआत नहीं है (भजन 93: 2)। उसका कोई अंत नहीं है (भजन 102: 25-27)। परमेश्वर सदैव जीवित है। वह अन्य राष्ट्रों या जन समूहों के "देवताओं" से अधिक शक्तिशाली है। "उन लोगों की मूरतें सोने चाँदी ही की तो हैं " (भजन 115: 4), इससे अधिक कुछ नहीं। इन मूर्तियों के "हाथ तो हैं, लेकिन छू नहीं सकतीं" (भजन 115: 7)। परन्तु "पृथ्वी के गहरे स्थान उसके [परमेश्वर] के हाथ में हैं। . . . और उसके हाथों ने सूखी भूमि बनाई" (भजन 95: 4, 5)। कई भजनों या कविताओं ने इस्राएल को सिखाया कि ईश्वर प्रकृति को नियंत्रित करता है। अन्य राष्ट्र प्रकृति को परमेश्वर के रूप में पूजते थे। भजन 29, भजन 93, और भजन 104 हमें बताते हैं कि प्रभु पूरी पृथ्वी पर राजा है। प्रभु किसी भी अन्य देवता से अधिक शक्तिशाली है। सभी मूर्तियाँ पत्थर, लकड़ी या सोने से नहीं बनी हैं। कुछ लोग झूठे विचारों को देवताओं के समान पूजते हैं। ये लोग ईश्वर पर नहीं बल्कि स्वयं पर भरोसा करते हैं। यह मिथ्या विचार किसी

मूर्ति के सामने झुकने जैसा ही है। भजन 100: 3 हमें बताता है कि ईश्वर ही एकमात्र है जिसकी हमें उपासना करनी चाहिए क्योंकि उसने हमें बनाया है। ईश्वर की बनाई हर चीज हमें उसका प्यार दिखाती है। आकाश और धरती पर हर चीज का जीवन ईश्वर के कारण है। परमेश्वर हर चीज को जीवित और चालू रखता है (भजन 95: 7; भजन 147: 4-9)। परमेश्वर ने इस्राएल को भी अपने लोग और अपनी भेड़ें बनने के लिए चुना (भजन 100: 3)। ये दो विचार हमें दिखाते हैं कि ईश्वर अपने हृदय में हमारे करीब रहना चाहता है। केवल प्रभु ही हमें आशीर्वाद दे सकता है और हमें सफलता दिला सकता है। इस प्रकार, केवल प्रभु ही हमारी उपासना और विश्वास के योग्य है। भजन संहिता की पुस्तक में, भजनकार पृथ्वी पर प्रत्येक जीवित प्राणी को ईश्वर की स्तुति करने और आनंदित रहने के लिए कहता है। हाँ, यह पृथ्वी पाप के कारण दूषित हो गयी है। लेकिन हम परमेश्वर की बनाई हर चीज में उसका अद्‌भुत प्रेम देखते हैं। इसीलिए भजन संहिता की किताब हमें बताती है कि हमें परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

"तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे," (भजन 8: 4)। यह पद आपको परमेश्वर के प्रेम के बारे में क्या सिखाता है? बाइबल कहती है कि परमेश्वर "तारों को गिनता है और हर एक का नाम लेता है" (भजन 147: 4)। आपको क्या लगता है कि परमेश्वर को सितारों से भी ज़्यादा आपकी परवाह है?

सोमवार **जनवरी 15**

प्रभु राजा है (भजन 97)।

यह विचार कि ईश्वर ने सब कुछ बनाया है, इस शिक्षा से निकटता से जुड़ा हुआ है कि ईश्वर राजा है। भजन 93: 1, भजन 96: 10, भजन 97: 1, और भजन 99: 1 घोषणा करते हैं: "प्रभु राजा है"। हम इस विचार को भजन संहिता की पूरी पुस्तक में देखते हैं।

प्रभु के पास सम्मान, राजकीय सुंदरता और ताकत है (भजन संहिता 93: 1; भजन संहिता 104: 1)। "बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं" (भजन 97: 2)। प्रभु "उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है"

(भजन 104: 2)। ये शब्द चित्र हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है। वे हमें यह भी सिखाते हैं कि प्रभु की शक्ति और राजकीय सुंदरता किसी भी चीज से परे है जिसकी हम अपने मन में कल्पना नहीं कर सकते हैं।

भजन 97 पढ़ें। भजन 97: 2, 10 हमें राजा के रूप में प्रभु के बारे में क्या बताता है? प्रभु का राज्य कितना बड़ा है? (जवाब हेतु पढ़ें, भजन 97: 1,5,9)।

यहोवा सारी पृथ्वी पर राजा है (भजन 47: 6-9)। राजा के रूप में, प्रभु हम पर दया दिखाता है। वह निष्पक्ष और पवित्र है। वह पृथ्वी को सुरक्षित रखता है। वह वही करता है जो उसके लोगों के लिए सही है (भजन 98: 3; भजन 99: 4)। वह हमारा उद्धारकर्ता है (भजन 98: 2) और हमारा न्यायाधीश है (भजन 96: 10)। परमेश्वर ने जो वस्तुएँ बनाईं वे हमें उसका राज्य दिखाती हैं (भजन 96: 5)। परमेश्वर का राज्य एक चिरस्थायी राज्य है। कोई अन्य राज्य इतना शक्तिशाली या अद्‌भुत नहीं है (भजन 45: 6; भजन 93: 1, 2; भजन 103: 19)। परमेश्वर का राज्य स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी को परमेश्वर की स्तुति में जोड़ता है (भजन 103: 20-22; भजन 148)। भजन संहिता की पुस्तक हमें दिखाती है कि हर जगह मनुष्य घोषणा करेंगे कि प्रभु राजा है (भजन 96: 10; भजन 97: 1; भजन 99: 1; भजन 145: 11-13)।

परन्तु अब सभी लोग यह नहीं कहते कि प्रभु ही राजा हैं। दुष्ट लोग राजा के रूप में परमेश्वर का सम्मान करने से इनकार करते हैं। वे परमेश्वर का मजाक उड़ाते हैं और उसके लोगों को हानि पहुँचाते हैं (भजन 14:1; भजन 74: 3-22)। इससे भी बदतर, कई दुष्ट लोग बहुत सफलता का आनंद लेते हैं। परमेश्वर उनके साथ बहुत धैर्यवान है। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकार तब परेशान हो जाते हैं जब वे देखते हैं कि ईश्वर दुष्ट लोगों के साथ धैर्य रखता है। लेकिन भजनकार ईश्वर की शक्ति और न्यायी के रूप में उसके पवित्र कार्य पर भरोसा करते हैं (भजन 68: 21; भजन 73: 17-20)। उसी तरह, आज परमेश्वर के लोग अपने लिए यीशु के उद्धार कार्य पर भरोसा करते हैं (मत्ती 12: 26-28)। वे खुशी के साथ उसके दूसरे

आगमन पर राजा के रूप में आने की प्रतीक्षा करते हैं (1कुरिन्थियों 15: 20-28)।

"हे प्रभु से प्रेम करनेवालो, बुराई से बैर रखो" (भजन 97: 10)। परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम हमें बुराई से घृणा क्यों करना चाहिए? परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम हमारी बुराई से घृणा करने से कैसे जुड़ा है?

मंगलवार **जनवरी 16**

परमेश्वर न्यायी है (भजन 75)।

भजन 75 पढ़ें। यह भजन हमें दिखाता है कि दुष्ट लोग डींगें हांकना पसंद करते हैं। परमेश्वर उन्हें डींगें न मारने की चेतावनी क्यों देता है?

प्रभु सर्वशक्तिमान राजा है। वह व्यवस्था का दाता (भजन 99: 7) और न्यायी (भजन 98: 9; भजन 97: 2) भी है। प्रभु उन दुष्टों का न्याय करेगा और उन्हें नष्ट करेगा जो उसके राज्य पर आक्रमण करते हैं (भजन 75: 8-10; भजन 96: 13)।

भजन 75 में, कई शब्द चित्र हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर दुष्ट लोगों को नष्ट करेगा। भजन 75: 8 में, हम झागवाले दाखमधु से भरे एक कप को देखते हैं। यह कटोरा हमें दिखाता है कि परमेश्वर पाप और पीड़ा के कारण बहुत क्रोधित है (यिर्मयाह 25: 15; प्रकाशितवाक्य 14: 10)। भजन 75: 10 में, परमेश्वर दुष्ट लोगों को नष्ट कर देगा, परन्तु वह अपने लोगों का सम्मान करेगा जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं। परमेश्वर वह समय चुनता है (भजन संहिता 75: 2) जब वह सभी का न्याय करेगा। बाइबल हमें सिखाती है कि न्यायी के रूप में उसका कार्य समय के अंत में होगा (भजन 96: 13; 1 कुरिन्थियों 15: 23-26)।

न्यायी के रूप में परमेश्वर के कार्य के हिस्से में लोगों के दिलों को देखना शामिल है। भजन 14: 2 पढ़ें। यह पद हमें उत्पत्ति 6: 5, 8 को याद रखने में मदद करता है। पदों के दोनों सेट हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर जितना संभव हो उतने लोगों को बचाने के लिए लोगों के जीवन की जाँच करेगा। वह अपने बच्चों को पुरस्कृत करने और दुष्ट लोगों को दंडित करने के लिए दोबारा आने से पहले यह कार्य करेगा।

परमेश्वर न्यायी के रूप में यह विशेष कार्य कैसे करेगा?

सबसे पहले, परमेश्वर अपने लोगों को उन दुष्टों से बचाता है जो उन्हें हानि पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं (भजन संहिता 97: 10; भजन संहिता 146: 9)। परमेश्वर अपने उन चेलों को अनन्त जीवन देता है जिनके मन में कोई अभिमान नहीं है (भजन 149: 4)। दूसरा, दुष्ट लोग सदैव के लिये नष्ट हो जायेंगे (भजन 97: 3)। भजन संहिता की पुस्तक में कुछ कवि इस बारे में बात करते हैं कि स्वर्ग के न्यायी के विरुद्ध मानव हथियार कैसे बेकार हैं (भजन 76: 3-6)। प्रभु क्षमा करने वाला ईश्वर है। साथ ही, वह लोगों के पापों का दण्ड देता है (भजन संहिता 99: 8)। दुष्ट लोगों और पवित्र लोगों दोनों को इस जीवन में अपने व्यवहार के कारणों को परमेश्वर को समझाना चाहिए।

न्यायी के रूप में परमेश्वर का कार्य उसके लोगों से शुरू होता है। इसके बाद, परमेश्वर पृथ्वी पर बाकी सभी का न्याय करता है (व्यवस्थाविवरण 32: 36; 1पतरस 4: 17)। भजन संहिता की पुस्तक में एक भजनकार ईश्वर से उसका न्याय करने के लिए कहता है। साथ ही, भजनकार अपनी रक्षा के लिए ईश्वर के पवित्र जीवन और दया पर निर्भर रहता है (भजन 7: 8-11; भजन 139: 23, 24)।

भजन संहिता की पुस्तक हमें आनंदित होने के लिए आमंत्रित करती है कि ईश्वर हमारा न्यायी है (भजन 67: 4) भजन 96: 10-13; भजन 98: 4-9)। न्यायी के रूप में परमेश्वर का कार्य हर किसी के लिए अच्छी खबर क्यों है?

बुधवार **जनवरी 17**

परमेश्वर की प्रतिज्ञा याद रखना (भजन 94: 14)।

दानिय्येल 7:9, 10 में, हम उस समय के बारे में पढ़ते हैं जब परमेश्वर सभी लोगों का न्याय करेगा, चाहे मृत हों या जीवित। इस दौरान परमेश्वर के लोग उसके साथ शांति में क्यों हो सकते हैं? पढ़ें, भजन 94:14 और भजन 105: 7-10।

परमेश्वर के लोग बचाये जाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर "यहूदा में जाना गया। उसका धाम सिय्योन में है" (भजन 76:1,

2)। इस रीति से, परमेश्वर अपने लोगों के साथ है। परमेश्वर अपने लोगों को अपना शाश्वत वादा भी देता है (भजन 94:14; भजन 105: 8-10)। परमेश्वर के लोग उसके लिए बहुत अनमोल हैं। परमेश्वर अपने लोगों को अपने अंदर सुरक्षित रखने के लिए कार्य करता है। वह उनके पापों को क्षमा करता है (भजन 103:3)। परमेश्वर अपने लोगों को सिखाता है और आशीर्वाद देता है। वह उन्हें मजबूत बनाता है (भजन 25: 8-11; भजन 29: 11; भजन 105: 24)। परमेश्वर अपने लोगों के पक्ष में न्याय करता है। परमेश्वर उन्हें पवित्र बनने में सहायता करता है। वह अपने लोगों को दिखाता है कि उसे उनकी परवाह है (भजन 94:8-15)।

भजन 105 में हम इस्राएल के इतिहास के बारे में पढ़ते हैं। जो कुछ भी हुआ, चाहे अच्छा हो या बुरा, ईश्वर वहाँ था। उसने अपने लोगों से किया वादा निभाया। परमेश्वर यूसुफ को मिस्र ले गया। परमेश्वर ने यूसुफ का उपयोग उसके परिवार और अन्य लोगों को भयानक भोजन की कमी से बचाने के लिए किया (भजन 105: 16-24)। प्रभु ने अपने लोगों को मिस्र से बाहर ले जाने के लिए मूसा को चुना। परमेश्वर ने उस समय अपने लोगों को बचाने के लिए कई चमत्कार किए (भजन 105: 25-38)।

प्रभु ने अपने लोगों को प्रतिज्ञा किया हुआ देश दिया (भजन 105:11, 44)। परमेश्वर ने अपने लोगों की रक्षा की (भजन 105:12-15)। परमेश्वर ने अपने लोगों की संख्या बढ़ाई (भजन 105:24)। उसने अपने लोगों को उनके शत्रुओं से बचाया (भजन 105: 37, 38)। परमेश्वर ने अपने लोगों को वह दिया जो उन्हें जीने के लिए हर दिन चाहिए था (भजन 105: 39-41)। प्रभु अपने लोगों के साथ होने वाली हर चीज को नियंत्रित करता है। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकार चाहते थे कि परमेश्वर के लोग बाइबल की इस सच्चाई को हमेशा याद रखें।

जब परमेश्वर को अपना वादा याद आता है, तो वह इसके बारे में सोचने से कहीं अधिक करता है। वह कार्रवाई करता है। वह अपने लोगों की सहायता करता है (उत्पत्ति 8:1; भजन 98: 3; भजन 105: 42-44)। परमेश्वर के लोग उसे कैसे याद करते हैं? वे उसका आदर करते हैं।

परमेश्वर अपने लोगों को उसके नियमों का पालन करने का आदेश देता है (भजन संहिता 78: 5-7; भजन संहिता 105: 45)। परमेश्वर यह भी चाहता है कि

इस्राएल अन्य लोगों को उसके बारे में बताये। प्रभु चाहता है कि हर कोई उसके वादे के आशीर्वाद का आनंद लेने के लिए इस्राएल में शामिल हो (भजन 1051, 2)। तब परमेश्वर भी उनकी रक्षा कर सकता है (भजन 89:28-34)।

परमेश्वर ने इस्राएल से जो वादे किए वे हमारे लिए भी क्यों हैं? यीशु हमें क्या देता है जो हमें प्रश्न का उत्तर देने में मदद करता है? गलातियों 326-29।

बृहस्पतिवार **जनवरी 18**

प्रभु की शिक्षाएँ उत्तम हैं (भजन 19:7)।

पढ़ें, भजन 19:7; भजन 93:5; भजन 119:165; भजन 1:2, 6; भजन 18:30; और भजन 25:10. इन सभी पदों में हम क्या एक ही संदेश पढ़ते हैं?

प्रभु ही वह है जिसने हमें बनाया है। वह हमारा राजा और हमारा न्यायाधीश है। वह पृथ्वी पर नियंत्रण रखता है। बाइबल की ये सच्चाइयाँ हमें उसकी व्यवस्थाओं और शिक्षाओं पर भरोसा करने में मदद करती हैं। प्रभु के नियम उसके लोगों को सिखाते हैं कि उसकी उपासना कैसे करें और उसके लिए कैसे जियें (निर्गमन 32:15)। प्रभु के नियम और शिक्षाएँ "नहीं बदलतीं" (भजन 93:5)। परमेश्वर का राज्य सदैव जारी रहता है। उसी ने इस पृथ्वी को बनाया और इसे चलायमान रखता है (भजन 93:1,2)। इसलिए, हम हमेशा ईश्वर और उसके नियमों पर निर्भर रह सकते हैं।

परमेश्वर हमसे कहता है कि हम उसके वादों और उसकी आज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर अपने लोगों को उस पर भरोसा करने और उसके नियमों का पालन करने का आदेश भी देता है।

साथ ही, हम पाप से भरी पृथ्वी पर रहते हैं। कभी-कभी, मानवीय कानून और मानवीय न्यायाधीश निष्पक्ष नहीं होते हैं। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले कवियों ने यह दिखाने के लिए एक विशेष शब्द चित्र का उपयोग किया है कि मानव कानून हमेशा निष्पक्ष नहीं होते हैं। वे जिस शब्द चित्र का उपयोग करते हैं वह भूकंप या कंपकंपी है (भजन 18:7; यशायाह 24:18-21)। परमेश्वर का कानून अपने लोगों को सिखाता है कि कैसे जीना

है ताकि जब वह उनका न्याय करे तो वे डरें या निराश न हों। परमेश्वर के लोग उसके कानून का पालन करते हैं। इसलिए, उस समय के दौर में कुछ भी ईश्वर में उनके विश्वास को "डगमगा" या नष्ट नहीं करेगा (भजन 112: 1, 6, 7)। भजन 119 कहता है, "तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शांति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती" (भजन 119: 165)। परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है और जीवन भर उनकी अगुवाई करता है (भजन 1: 2, 3, 6)।

परमेश्वर का वचन, बाइबल, एक दीपक के समान है। यह उनके लोगों को वह मार्ग दिखाता है जो ईश्वर तक जाता है। बाइबल परमेश्वर के लोगों को उनके शत्रुओं के जाल से भी बचाती है (भजन 119: 105, 110)। क्या परमेश्वर की व्यवस्था (भजन 119: 165) से प्रेम करने से हमें जो शांति मिलती है, उसका मतलब यह है कि हमें परेशानियाँ नहीं होंगी? बिल्कुल नहीं! भजन 119 का अर्थ यह है कि ईश्वर और उसके प्रेम को अपने हृदय में रहने से हमें शांति मिलती है।

परमेश्वर के नियमों का पालन करने और उसकी शिक्षाओं का पालन करने से आपको जीवन में कैसे मदद मिली है? आपको परमेश्वर के नियमों को तोड़ने और उसकी शिक्षाओं का पालन न करने से कैसे कष्ट हुआ है?

शुक्रवार **जनवरी 19**

अतिरिक्त अध्ययन : भजन 86: 5, 15; एलेन जी॰ व्हाइट की पुस्तक ख्रीस्त की ओर कदम में पढ़ें, "परमेश्वर का मनुष्य के लिए प्रेम," पृष्ठ 9–15।

हम जानते हैं कि परमेश्वर प्रेम है। बाइबल का यह सत्य हमें यह बेहतर ढंग से समझने में कैसे मदद करता है कि ईश्वर कौन है और वह अपने लोगों की कैसे मदद करता है? भजन संहिता की पुस्तक हमें क्या सिखाती है?

जैसे-जैसे हम भजन संहिता की पुस्तक का अध्ययन करना जारी रखते हैं, हमें यह सोचना चाहिए कि भजन हमें ईश्वर के प्रेम, दया और हमें बचाने और पृथ्वी को नया बनाने की उसकी योजना के बारे में क्या सिखाते हैं। "क्रूस हमें ईश्वर और उसके प्रेम के बारे में सिखाता है। जितना अधिक हम इस

विषय का अध्ययन करेंगे, उतना ही अधिक हम ईश्वर की दया, देखभाल और क्षमा को समझेंगे। हम ईश्वर को और उसके नियम को निष्पक्ष देखेंगे हैं। हम उसके प्रेम का सबूत भी देखेंगे। परमेश्वर के प्रेम की कोई सीमा नहीं है। हमारे प्रति उसका प्रेम उस माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम से भी बड़ा है जो उसकी आज्ञा मानने से इंकार कर देता है।" – एलेन जी० व्हाइट, स्टेप्स टू क्राइस्ट, पृष्ठ 15. भजन संहिता की पुस्तक में, जब परमेश्वर अपनी आज्ञा मानने से इनकार करने पर लोगों का न्याय करता है, तो ये लोग क्या करते हैं? वे प्रभु के पास वापस आते हैं और उन्हें बचाने के लिए मदद हेतु उससे प्रार्थना करते रहते हैं! क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर का क्रोध थोड़े समय के लिये है। परन्तु उसकी दया अनन्त है (भजन 103: 8)।

चर्चागत प्रश्न:

1. **भजन की पुस्तक हमें सिखाती है कि ईश्वर राजा है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता है उस पर ईश्वर का नियंत्रण है। साथ ही, हमें यह समझने की आवश्यकता क्यों है कि हमारे चारों ओर ईश्वर और शैतान के बीच विश्वव्यापी युद्ध चल रहा है? बाइबल का यह सत्य हमें यह समझने में कैसे मदद करता है कि इस पृथ्वी पर इतना पाप और पीड़ा क्यों है?**
2. **बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि ईश्वर ने हमें बनाया है। यह शिक्षा हमें यह समझने में कैसे मदद करती है कि हम कौन हैं और हमें इस धरती पर ईश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज का ख्याल कैसे रखना चाहिए? क्या होता है जब लोग इस शिक्षा का पालन नहीं करते? उत्तर के लिए भजन 106: 35-42 पढ़ें।**
3. **बाइबल के समय में जिन झूठे देवताओं की लोग पूजा करते थे उनमें क्या बुराई थी (भजन 115: 4-8)? आधुनिक झूठे देवताओं के बारे में क्या? वे प्रभु के साथ हमारे रिश्ते के लिए भी खतरा क्यों हैं?**
4. **बाइबल हमें बताती है कि न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर का कार्य उसके लोगों से शुरू होगा। तो, परमेश्वर के लोगों को कैसे जीना चाहिए? परमेश्वर अपने लोगों का न्याय कैसे करता है?**

पाठ 4

जनवरी 20-26

परमेश्वर हमें हमारी सभी परेशानियों से बचाता है
(God saves us from all our troubles)

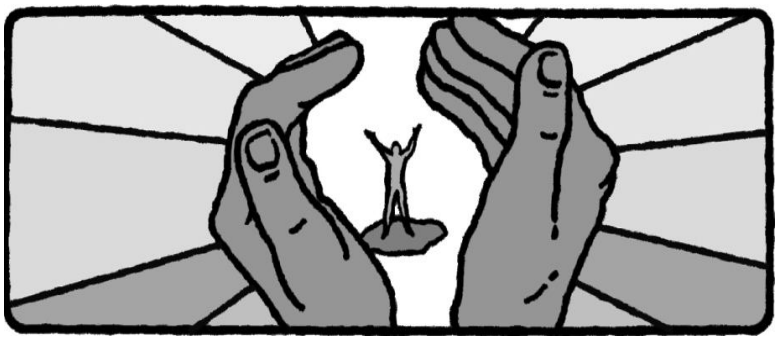

सब्त अपराह्न **जनवरी 20**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 139: 1-18; भजन 40: 1-3; भजन 17: 7-9; 1कुरिन्थियों 10: 1-4; भजन 114; भजन 3: 4.

याद वचनः "धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है" (भजन संहिता 34: 17)।

भजन संहिता की पुस्तक हमें कई बार बताती है कि प्रभु राजा है। उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया। वह सब कुछ गतिमान रखता है। यही शक्तिशाली ईश्वर हमारा व्यक्तिगत उद्धारकर्ता भी है। वह अपने लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध रखना चाहता है।

प्रभु सदैव अपने लोगों के साथ है और जो कुछ उसने स्वर्ग और पृथ्वी पर बनाया है, उसके साथ है (भजन 73: 23, 25)। "प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है" (भजन 103: 19)। वह "बादलों पर सवारी करता है" (भजन 68: 4), ठीक वैसे ही जैसे कि बादल घोड़े हों। "प्रभु उन सभी के करीब है जो उनसे प्रार्थना करते हैं, उन सभी के करीब है जो वास्तव में [वास्तव में का मतलब है जब वे] उससे प्रार्थना करते हैं" (भजन 145: 18)। भजन संहिता की पुस्तक हमें बताती है कि प्रभु जीवित ईश्वर है। वह उन लोगों को बचाता है जो उससे मदद मांगते हैं (भजन 55: 16-22)। भजन संहिता की पुस्तक जीवित ईश्वर के लिए लिखी गई थी, जो प्रार्थनाएँ सुनता है और उनका उत्तर देता है।

* सब्त, जनवरी 27 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

इसीलिए भजन संहिता की पुस्तक अपने पाठकों के लिए बहुत मायने रखती है।

ईश्वर हमें उसके साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए आमंत्रित करता है। परमेश्वर के निमंत्रण पर हमारा उत्तर क्या होगा? हमें पूरे दिल से ईश्वर में विश्वास का जीवन जीना चाहिए। हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। परमेश्वर हमारे विश्वास और आज्ञाकारिता से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा। इस्राएल का इतिहास हमें बाइबल की यह महत्त्वपूर्ण सच्चाई दिखाता है।

रविवार **जनवरी 21**

तूने मेरी माता के गर्भ में मेरी हड्डियाँ विकसित होते देखीं (भजन 139)।

भजन 139:1-18 पढ़ें। यह कविता हमें कैसे दिखाती है कि ईश्वर शक्तिशाली है (पद 1-6)? यह कविता हमें कैसे दिखाती है कि हम जहाँ भी जाते हैं परमेश्वर का आत्मा हमारे साथ है (पद 7-12)? यह कविता हमें यह दिखाने के लिए कि ईश्वर अच्छा है (पद 13-18) कौन से शब्द चित्रों का उपयोग करती है? निश्चित रूप से, भजन 139 हमें दिखाता है कि परमेश्वर उद्धार करने के लिए शक्तिशाली और विश्वासयोग्य है। बाइबल का यह सत्य हमें परमेश्वर और उसके वादों के बारे में क्या सिखाता है?

क्या आप किसी की मदद करना चाहते हैं और नहीं जानते कि कैसे? या हो सकता है किसी ने आपकी मदद करने की कोशिश की हो। लेकिन इस व्यक्ति को यह समझ नहीं आया कि आपको वास्तव में क्या चाहिए। ईश्वर वह सब कुछ जानता है जिसकी हमें आवश्यकता है। वह सब कुछ जानता है जो इस समय हमारे जीवन में घटित हो रहा है। इसलिए, ईश्वर हमेशा जानता है कि हमारी सर्वोत्तम सहायता कैसे करनी है। इसीलिए हम हमारी मदद करने और हमें बचाने के लिए परमेश्वर के वादों पर भरोसा कर सकते हैं।

परमेश्वर उस भजनकार के बारे में सब कुछ जानता है जिसने भजन 139 लिखा था। परमेश्वर कवि को उसके जन्म से पहले ही देख लेता है जब वह अपनी माँ के शरीर के अंदर होता है। उसकी माँ का शरीर उसे परमेश्वर से छिपा नहीं सकता (भजन 139: 13, 15)! परमेश्वर जानता है कि हम कब काम करते हैं (भजन 139: 2)। ईश्वर वह सब कुछ भी जानता है जो हम सोचते और महसूस करते हैं (भजन 139: 2,4)। परमेश्वर यह भी जानता है

कि हम कहाँ हैं और हम हर समय क्या करते हैं (भजन 139: 3)। हमारे बारे में परमेश्वर का अद्‌भुत ज्ञान उसके लोगों के साथ उसके घनिष्ठ संबंध का हिस्सा है। वह हमारे बारे में सब कुछ जानता है क्योंकि उसने हमें बनाया है। परमेश्वर हमारा बहुत अच्छे से ख्याल रखता है। हमारे लिए उसकी देखभाल से हमें पता चलता है कि वह हमारे बारे में कितना जानता है।

परमेश्वर से मत डरें क्योंकि वह आपके बारे में सब कुछ जानता है। खुश रहें कि वह सब कुछ जानता है और आपसे प्रेम करता रहता है। यीशु की बाहों में आ जाएँ और क्रूस पर उसने आपके लिए जो किया उसे स्वीकार करें। जब हमें यीशु पर विश्वास होगा, तो परमेश्वर अपनी दया से हमें बचाएगा और हमें स्वीकार करेगा (रोमियों 3: 5, 21)।

क्या कोई चीज हमें ईश्वर से अलग कर सकती है? क्या कब्र हो सकती है? या क्या रात हमें उससे छिपा सकती है (भजन 139: 8, 11, 12)? कब्र और अँधेरा वे स्थान नहीं हैं जहाँ प्रभु रहता है (भजन 56: 13)। ये शब्द चित्र हमें बाइबल का एक महत्त्वपूर्ण सत्य दिखाते हैं। परमेश्वर स्वर्ग या पृथ्वी पर जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है। ईश्वर सितारों और आकाश का हिस्सा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं। उसने उन्हें बनाया। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने सब कुछ बनाया और उसे चलाता है (इब्रानियों 1: 3), ईश्वर जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है।

परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है। तो, वह हमारी मदद कर सकता है और हमें नया बना सकता है। बाइबल का यह सत्य भजनकार के हृदय को विश्वास और प्रशंसा से भर देता है। भजनकार चाहता है कि ईश्वर उसके हृदय में झाँके और उसे उसके पाप दिखाए। तब ईश्वर भजनकार के जीवन से वह सब कुछ हटा सकता है जो उसे ईश्वर से अलग करता हो।

सोमवार **जनवरी 22**

परमेश्वर की देखभाल पर भरोसा रखना (भजन 40: 1-3)।

पढ़ें, भजन 40: 1-3; भजन 50: 15; भजन 55: 22 और भजन 121. परमेश्वर हमें हर दिन कैसे दिखाता है कि उसे हमारी परवाह है?

बाइबल हमें दिखाती है कि प्रभु जीवित ईश्वर है जो उन लोगों को बचाता है जो मदद के लिए उससे प्रार्थना करते हैं। भजन 16 में, एक भजनकार कहता है, "मैं सदैव स्मरण रखता हूँ कि प्रभु मेरे साथ है" (भजन 16: 8)। इसलिए, भजनकार परमेश्वर पर भरोसा करता है और उससे मदद

मांगता है (भजन 7: 1; भजन 9: 10)। जब भजनकार "गहरे संकट" में होता है और मदद के लिए ईश्वर को पुकारता है तो प्रभु उसकी सुनता है (भजन 130: 1, 2)। परमेश्वर के पास हमारे जीवन में कुछ भी बदलने की शक्ति है। वह हमारी हर समस्या का समाधान कर सकता है। इसीलिए भजनकार को सदैव आशा रहती है कि ईश्वर उसे बचायेगा।

भजन 121 हमें बचाने के लिए परमेश्वर की शक्ति का जश्न मनाता है। कविता में निम्नलिखित वादे शामिल हैं:

"वह तेरे पाँव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊँघेगा" (भजन 121: 3)। क्योंकि यहोवा इस्राएल का रक्षक है, वह अपने बच्चों को बचाने के लिए सदैव तैयार रहता है (भजन 121: 3, 4)।

"यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है। न तो दिन को धूप से, और न रात को चाँदनी से तेरी कुछ हानि होगी" (भजन 121: 5, 6)। यह शब्द चित्र हमें निर्गमन की पुस्तक में" बादल का खम्भा" को याद करने में मदद करता है (निर्गमन 13: 21, 22)। प्रभु ने मरुभूमि में अपने लोगों को वादा किए गए देश तक ले जाने के लिए बादल के खम्भे का उपयोग किया। उसी तरह, प्रभु अपने लोगों को सुरक्षा की ओर ले जाना जारी रखता है।

जैसा कि हमने पद 5 में पहले ही देखा, प्रभु आपकी रक्षा करता है और आपकी निगरानी करता है। प्रभु शक्तिशाली है। वह अपने लोगों की मदद करने के लिए कार्य करने को तैयार है (भजन 74: 11; भजन 89: 13)। प्रभु अपने लोगों के करीब है और उन्हें अपनी कृपा से आशीषित करता है (भजन संहिता 16: 8; भजन संहिता 109: 31; भजन संहिता 110: 5)।

भजन 121: 6-8 में, हम सीखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को हर खतरे से बचाएगा। परमेश्वर अपने बच्चों को सभी बुराईयों से सुरक्षित रखेगा। "सूर्य" और "चंद्रमा" उन्हें हानि नहीं पहुँचा सकते (पद 6)। परमेश्वर अपने बच्चों को सुरक्षित रखेगा जब वे अपने घरों से यात्रा करेंगे और जब वे वापस आएँगे। ये शब्द चित्र हमें यह समझने में मदद करते हैं कि परमेश्वर को हमारी बहुत परवाह है। वह हमारा ख्याल रखने के लिए हमेशा कड़ी मेहनत करता है।'

भजन 121 के ये सभी वादे हमें इसे लिखने वाले कवि के विश्वास के बारे में क्या सिखाते हैं? कवि को ईश्वर की प्रेमपूर्ण देखभाल पर भरोसा था। तो, हमें भी परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे आप परमेश्वर की आपके प्रति देखभाल के बारे में अधिक जान सकते हैं? इसके अलावा, आप ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे ईश्वर आपके अंदर और आपके लिए कार्य कर सके?

मंगलवार **जनवरी 23**

संकट के समय में आश्रय (भजन 17: 7-9)।

संकट के समय कवि क्या करता है? पढ़ें, भजन 17: 7-9; भजन 31: 1-3; भजन 91: 2-7 ।

कवि अनेक कष्ट सहता है। अपने अनुभवों के दौरान, वह मदद के लिए परमेश्वर के पास जाता है। परमेश्वर आश्रय के समान है। प्रभु हर कठिन समय में हमारी सहायता करेगा। भरोसा एक विकल्प है। जब हम ईश्वर पर भरोसा करते हैं, तो हम अपने जीवन के हर अनुभव में उसे परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना चुनते हैं। यदि हम कठिन समय के दौरान परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं, तो हम हर समय उस पर भरोसा कर सकते हैं।

भजन 91 में, भजनकार हमें बताता है: "मैं प्रभु के बारे में कहूँगा, 'वह मेरी सुरक्षा का स्थान है। वह एक किले [महल] के समान है; एक सुरक्षित जगह, मेरे लिए। वह मेरा परमेश्वर है। मुझे उस पर भरोसा है' (भजन 91: 2)। ईश्वर के प्रति भजनकार का अतीत का अनुभव उसके वर्तमान और भविष्य के विश्वास को मजबूत बनाता है। भजनकार ने ईश्वर को एक "शक्तिशाली" और "सर्वोच्च ईश्वर" नाम दिया है (भजन 91: 1)। भजनकार जानता है कि कोई भी उसके ईश्वर जितना शक्तिशाली या ताकतवर नहीं है। भजन 91 में, भजनकार हमें उस शांति और सुरक्षा के बारे में भी बताता है जो ईश्वर हमें देता है। हम आराम और "सुरक्षा" के लिए परमेश्वर के पास जा सकते हैं (भजन 91: 1)। वह हमारी रक्षा करेगा। प्रभु एक "किले [महल]" के समान है (भजन 91: 2)। वह छिपने के लिए "सुरक्षित और मजबूत जगह" के समान है। जब हम मुसीबत में हों तो हम उसके पास दौड़ सकते हैं। प्रभु "तुम्हें उस पक्षी की तरह ढँक लेगा जो अपने पंख फैलाकर अपने बच्चों को ढक लेता है" (भजन संहिता 91: 4)। और "उसके पंखों के नीचे तू सुरक्षित रहेगा" (भजन 91: 4)। प्रभु "मजबूत दीवार" के समान भी है (भजन 91: 4)। बाइबल के समय में, किले, मातृ पक्षी और मजबूत दीवारें सुरक्षा या सुरक्षित स्थान के शब्द चित्र थे।

भजन 17: 8 और मत्ती 23: 37 पढ़ें। इन पदों में किस शब्द चित्र का प्रयोग हुआ है? यह शब्द चित्र हमें क्या सिखाता है?

कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि "मुझे अपने पंखों की छाया में छिपा ले" (भजन 17: 8; भजन 57: 1; भजन 63: 7)। यह शब्द चित्र हमें एक मातृ पक्षी को अपने बच्चों की रक्षा करते हुए दिखाता है। यह शब्द चित्र हमें सुरक्षित महसूस कराने में मदद करता है। बाइबल ईश्वर की तुलना एक उकाब से करती है जो अपने बच्चों की रक्षा करती है (निर्गमन 19: 4) और एक मुर्गी से जो अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे छिपाती है (मती 23: 37)। जब बुरी घटनाएँ घटित होती हैं, तो हमें यह विश्वास करने में कठिनाई होती है कि परमेश्वर हमारे साथ है। लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि वह वहाँ है?

बुधवार **जनवरी 24**

वह जो हमारी रक्षा और उद्धार करता है (1कुरिन्थियों 10: 1-4)

1 कुरिन्थियों 10: 1-4 पढ़ें। निर्गमन की कहानी के बारे में पौलुस इन पदों में क्या कहता है? पौलुस हमें आध्यात्मिक सबक सिखाने के लिए निर्गमन की कहानी का उपयोग करता है। वह सीख क्या है?

भजन 114 पढ़ें। यह कविता हमें उस समय के बारे में क्या बताती है जब परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से मुक्त कराया था?

भजन 114 एक सुंदर कविता है कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से निकलने में मदद की। पुराने और नए नियम में, बाइबल लेखकों ने इस अनुभव को एक शब्द चित्र के रूप में इस्तेमाल किया ताकि हमें दिखाया जा सके कि परमेश्वर अपने लोगों को कैसे बचाता है। 1 कुरिन्थियों 10: 1-4 में, पौलुस निर्गमन की पुस्तक की पूरी कहानी को एक शब्द चित्र के रूप में देखता है कि कैसे यीशु मसीह हमें पाप से बचाता है।

भजन 114 हमें यह भी दिखाता है कि चूँकि ईश्वर ने सब कुछ बनाया, वह प्रकृति को नियंत्रित करता है। प्रकृति पर परमेश्वर का नियंत्रण था कि उसने अपने लोगों को मिस्र से कैसे बचाया। समुद्र, यरदन नदी, पहाड़ और पहाड़ियाँ प्रकृति और मानव शक्तियों के लिए शब्द चित्र हैं। ये शक्तियाँ इस्राएल के रास्ते में खड़ी हो गईं या उन्हें वादा किए गए देश के रास्ते में रोकने की कोशिश की (व्यवस्थाविवरण 1: 44; यहोशू 3: 14-17)। लेकिन ईश्वर प्रकृति और सभी मानवीय शक्तियों के नियंत्रण में है।

वही आज सत्य है। हर समय और हर जगह परमेश्वर के बच्चे स्वर्ग में वादा किए गए देश की ओर जा रहे हैं। वहाँ का रास्ता खतरों से भरा है। भजन संहिता की पुस्तक हमें पहाड़ों के खतरे से दूर उस व्यक्ति की ओर

देखने के लिए प्रोत्साहित करती है जिसने पृथ्वी को बनाया है (भजन 121: 1)।

हम भजन 114 का संदेश और कहाँ देखते हैं? हम इसे समुद्र में यीशु की कहानी में देखते हैं जब वह तूफान को शांत रहने का आदेश देता है (मती 8: 23-27)। बाद में, यीशु ने चर्च को साहसी बनने के लिए कहा क्योंकि उसने पाप के खिलाफ लड़ाई जीती थी। क्योंकि यीशु जीत गया, वह पृथ्वी पर नियंत्रण रखता है (यूहन्ना 16: 33)।

प्रभु बहुत शक्तिशाली है। बाइबल के इस सत्य को प्रभु के सामने पूरी पृथ्वी को "हिलाना" चाहिए (भजन 114: 7)। "शेक"(काम) शब्द एक शब्द चित्र है। हमें इस शब्द को कैसे समझना चाहिए? क्या ''हिलाने'' का मतलब यह है कि हमें ईश्वर से डरना चाहिए? बिल्कुल नहीं! ''हिलाना'' शब्द हमें दिखाता है कि हमें परमेश्वर की आराधाना करनी चाहिएों कुछ और उदाहरणों के लिए भजन 96: 9 और भजन 99: 1 पढ़ें जो इस विचार को समझाने में मदद करते है। परमेश्वर के साथ होने पर, हमें किसी भी चीज से डरने की जरूरत नहीं है!

मसीही होने के नाते हमें किन आध्यात्मिक खतरों का सामना करना पड़ सकता है? हम बचाये जाने के लिए प्रभु पर कैसे भरोसा कर सकते हैं?

बृहस्पतिवार **जनवरी 25**

स्वर्ग में परमेश्वर के मन्दिर से सहायता (भजन संहिता 3: 4)

हमारी सहायता कहाँ से आती है? पढ़ें, भजन 3: 4; भजन 14: 7; भजन 20: 1-3; भजन 27: 5; भजन 36: 8; भजन 61: 4; भजन 68: 5, 35।

_____

_____

परमेश्वर का मन्दिर सुरक्षा और सहायता का स्थान है। परमेश्वर का मंदिर मुसीबत में फंसे लोगों को आश्रय देता है। अपने मंदिर से, परमेश्वर अनाथों और विधवाओं की मदद करता है। वह अपने लोगों को शक्ति भी देता है। हम पढ़ते हैं, "सिय्योन से जो परम सुन्दर है, परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है" (भजन संहिता 50: 2)। सिय्योन परमेश्वर के मंदिर के लिए एक शब्द चित्र है। परमेश्वर अपने लोगों को सिय्योन से आशीर्वाद देता है (भजन 84: 4; भजन 128: 5; भजन 134: 3)।

क्या पृथ्वी पर परमेश्वर के मंदिर के समान सुरक्षित कोई जगह है? नहीं, परमेश्वर का मंदिर सबसे सुरक्षित स्थान क्यों है? क्योंकि ईश्वर स्वयं है। इसी प्रकार सिय्योन नाम ऊँची पहाड़ी सब पर्वतों से उत्तम है, क्योंकि परमेश्वर स्वयं वहाँ है (भजन संहिता 68: 15, 16; यशायाह 2: 2)।

"क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; ---------- " (इब्रानियों 4: 15, 16)। ये पद कैसे वही बात कहते हैं जो भजन संहिता की किताब परमेश्वर के मंदिर के बारे में कहती है?

परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है। भजन संहिता की किताब हमें सिखाती है कि सभी लोग पापी हैं। हम परमेश्वर के अनुग्रह या आशीष के योग्य नहीं हैं। परमेश्वर अपनी दया के कारण हमें पाप से बचाता है (भजन संहिता 143: 2, 9-12)। हम अपने अच्छे व्यवहार से ईश्वर की क्षमा या दया अर्जित नहीं कर सकते। हमें पहले अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और परमेश्वर की दया को ग्रहण करना चाहिए। तब हम परमेश्वर से बचाये जाने के लिए कह सकते हैं। परमेश्वर का मंदिर हमें दिखाता है कि केवल यीशु ही हमें बचा सकता है।

शुक्रवार **जनवरी 26**

अतिरिक्त अध्ययन: एलेन जी० व्हाइट की पुस्तक पैट्रिआर्क्स एंड प्रोफेट्स में पढ़ें, "द नाइट ऑफ रेसलिंग," पेज 195-203।

हम प्रार्थना और ईश्वर पर भरोसा करने के बारे में स्वर्गदूत के साथ याकूब के अनुभव से क्या सीख सकते हैं?

भजन संहिता की पुस्तक ईश्वर में हमारे विश्वास को मजबूत बनाती है। परमेश्वर अपने उन लोगों को कभी निराश नहीं करेगा जो अपने जीवन से उस पर भरोसा करते हैं। परमेश्वर उनकी सुरक्षा का "स्थान" है। "परमेश्वर उन लोगों के लिए पराक्रमी कार्य करेगा जो उस पर भरोसा रखते हैं। उसके कुछ लोगों के कमजोर होने का कारण यह है कि उन्हें अपनी बुद्धि पर भरोसा है। वे परमेश्वर को उन्हें मदद करने का मौका नहीं देते। ईश्वर अपने विश्वास करने वाले बच्चों को हर आपात स्थिति में मदद करेगा यदि वे उस पर पूरा भरोसा करेंगे और विश्वास के साथ उसकी आज्ञा पालन करेंगे।" - एलेन जी० ह्वाइट, पैट्रिआर्क्स एंड प्रोफेट्स, पृष्ठ 493।

कभी-कभी, हमें भजन संहिता की अद्‌भुत प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने में परेशानी होती है। हमारी परेशानियाँ और पीड़ाएँ हमें संदेह करने पर मजबूर कर देती हैं कि ईश्वर हमारी मदद करेगा। जब समय कठिन हो, तो हमें परमेश्वर की दया पर भरोसा करना चाहिए।

साथ ही, कभी-कभी, कुछ लोग वास्तव में परमेश्वर के वादों को नहीं समझते हैं। हमें शैतान की तरह परमेश्वर की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए। शैतान ने यीशु को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि भजन 91: 11, 12 में कुछ ऐसा वादा किया गया था जिसका वादा परमेश्वर ने बिल्कुल भी नहीं किया था। शैतान को यीशु का उत्तर हमें दिखाता है कि परमेश्वर पर भरोसा करना परमेश्वर को परीक्षा में डालने के समान नहीं है (मत्ती 4: 5-7)। ईश्वर पर भरोसा करना ही विश्वास है। ईश्वर की परीक्षा लेना पाप है। इसलिए, हमें परमेश्वर से ऐसा कुछ करने के लिए नहीं कहना चाहिए जो उसकी योजना या बाइबल के विरुद्ध हो।

"मसीहियों के रूप में हमें सफलता कैसे मिलती है? क्या हमारा कौशल या शिक्षा हमें सफलता दिलाती है? या क्या हम अपनी दौलत से या लोकप्रिय होने से सफलता पाते हैं? हमारी जीत का तरीका विश्वास के साथ परमेश्वर के पास जाना है। हमें अपनी सहायता के लिए ईश्वर की शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। तभी हमें सफलता मिलेगी।" - एलेन जी० ह्वाइट, पैट्रिआर्क्स एंड प्रोफेट्स, पृष्ठ 203।

चर्चागत प्रश्न:

1. **जब चीजें गलत हो जाती हैं तो हम परमेश्वर पर कैसे भरोसा करते हैं? जब हमारे पास परमेश्वर की सुरक्षा के बारे में इतने सारे अद्‌भुत वादे हैं तो परमेश्वर के लोगों के साथ बुरी चीजें क्यों होती हैं?**

2. **हम हर समय पूरे दिल से परमेश्वर पर कैसे भरोसा रख सकते हैं? (भजन 91: 14; भजन 143: 8, 10; और भजन 145: 18-20 पढ़ें। हमारे विश्वास खोने का क्या कारण हो सकता है? बुरे समय में भी उस पर भरोसा करना सीखने के लिए अच्छे समय में ईश्वर पर भरोसा करना इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है?**

पाठ 5

जनवरी 27-फरवरी 2

एक अजनबी देश में प्रभु के गीत गाना
(Singing the Lord's Songs in A Strange Land)

सब्त अपराह्न **जनवरी 27**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 74: 18-22; भजन 88: 3-12; भजन 42: 1-3; भजन 77; भजन 37: 1, 8; भजन 125: 3.

याद वचनः "हम यहोवा के गीत को पराये देश में कैसे गाएँ?" (भजन 137: 4)। (यशायाह 6: 8)।

भजन संहिता की पुस्तक में, कवियों ने समझा कि इस पृथ्वी पर जीवन पाप, बुराई, पीड़ा और मृत्यु से भरा है। शैतान और उसके अनुयायी हमेशा इस पृथ्वी को नष्ट करने और परमेश्वर के पवित्र नियमों पर हमला करने के लिए काम करते हैं। चूँकि पाप और बुराई पृथ्वी पर जीवन को बदतर बना देते हैं, परमेश्वर के लोग अक्सर, कभी-कभी महसूस करते हैं कि इस पृथ्वी पर रहना "परदेश" या एक अजनबी देश में रहने के समान है। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले कवियों को भी अक्सर ऐसा ही महसूस होता था। उन्होंने सोचा, हम पराये देश में विश्वास का जीवन कैसे जियें?

जैसा कि हमने पहले ही देखा, भजन संहिता के कवि जानते हैं कि ईश्वर नियंत्रण में है। वे यह भी मानते हैं कि परमेश्वर कठिन समय में अपने लोगों के लिए आश्रय के समान है। इसलिए, जब कवि बुराई को जीतता हुआ देखते हैं तो कभी-कभी भ्रमित हो जाते हैं। कवि आश्चर्य करते हैं, ईश्वर कहाँ है? हमें भी कभी-कभी इन बातों पर आश्चर्य होता है। हमें याद रखना चाहिए कि भजन संहिता की कविताएँ भी प्रार्थनाएँ हैं। इन प्रार्थनाओं में, कवि इस बारे

* सब्त, फरवरी 3 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

में बात करते हैं कि जब परमेश्वर चुप होता है और मदद के लिए उनकी प्रार्थनाओं का तुरंत जवाब नहीं देता है तो उन्हें कैसा महसूस होता है। हो सकता है आपको भी ऐसा ही महसूस हुआ हो, जब आपने प्रार्थना की हो। आपको आश्चर्य हो सकता है कि परमेश्वर ने आपकी प्रार्थनाओं का तुरंत उत्तर क्यों नहीं दिया। या हो सकता है कि आपको लगे कि ईश्वर बहुत दूर है। इस सप्ताह, हम भजन संहिता की पुस्तक में कुछ कविताओं को देखेंगे जो इस बारे में बात करती हैं कि जब परमेश्वर चुप होता है तो हमें क्या करना चाहिए।

रविवार **जनवरी 28**

बुराई के दिन (भजन 74:18-22)

भजन 74:18-22 और भजन 79:5-13 पढ़ें। ये दोनों कविताएँ भी प्रार्थनाएं हैं। ये प्रार्थनाएँ किस बारे में हैं? कवि परमेश्वर से क्या करने को कह रहा है?

भजनकार अच्छाई और बुराई के बीच के युद्ध को समझना चाहता है। भजनकार का कहना है कि इस युद्ध के दौरान परमेश्वर धैर्यवान, बुद्धिमान और शक्तिशाली है।

भजन संहिता की पुस्तक में, जब भी कवि बुराई के बारे में बात करते हैं, तो वे यह भी बात करते हैं कि परमेश्वर इस समस्या का समाधान कैसे करेगा। जब परमेश्वर के शत्रु यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर देते हैं, तो कवि परेशान हो जाते हैं। उन्हें चिंता है कि दूसरे देशों के लोग ईश्वर को कमजोर समझेंगे और फिर उसका अपमान करेंगे। इस्राएल के लोग परमेश्वर का विशेष खजाना हैं। परमेश्वर ने उन्हें अपना वादा दिया (व्यवस्थाविवरण 4:32-38; व्यवस्थाविवरण 32:8, 9)। इस्राएल "जीवित प्रमाण" है कि ईश्वर अपना वादा निभाएगा। बाइबल के समय में इस्राएल से किया गया परमेश्वर का वादा हमारे लिए भी अंत समय का वादा है। हम भी परमेश्वर का विशेष खजाना हैं। भविष्य में सभी लोग प्रभु को प्रणाम करेंगे। हर उम्र के लोग उसकी सेवा करेंगे। ये वादे कवियों के लिए अनमोल हैं। इसीलिए जब विदेशी सेनाएँ इस्राएल में जबरन प्रवेश करती हैं तो वे परेशान हो जाते हैं। ये सेनाएँ हर उस चीज के लिए खतरा हैं जिसका वादा परमेश्वर ने अपने लोगों से किया था। भजनकार जानता है कि इस्राएल के पाप ईश्वर के साथ उसके रिश्ते को नुकसान पहुँचाते हैं। उसके पूर्वजों के पापों के कारण उनकी भूमि और उसके बच्चों पर शाप आया (भजन संहिता 79:8, 9)। अब केवल परमेश्वर ही

अपने लोगों को बचा सकता है। कवि कहता है कि प्रभु "हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता" है (भजन 79: 9)। प्रभु के लिए ये नाम हमें दिखाते हैं कि वह अपना वादा निभाएगा (भजन 79: 9)।

भजनकारों के लिए परमेश्वर की आशीष इस्राएल से अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है? कुछ भी नहीं है। भजन 79 में, भजनकार चाहता है कि सभी लोग ईश्वर का सम्मान करें और उसकी स्तुति करें (भजन 79:9)। भजनकार चाहता है कि ईश्वर उन देशों को दंडित करे जिन्होंने इस्राएल को हानि पहुँचाई। यदि परमेश्वर इन लोगों को दण्ड देता है, तो वे जान लेंगे कि परमेश्वर शक्तिशाली है (भजन संहिता 74: 18-23; भजन 83: 16-18; भजन 106: 47). जब परमेश्वर अपने लोगों को बचाएगा, तो उसके नाम का सम्मान और प्रशंसा की जाएगी।

आज हमारे पाप भी हमें कष्ट देते हैं। हमारे पाप भी परमेश्वर को ठेस पहुँचाते हैं और दूसरे लोगों को उसका अपमान करने का कारण बनते हैं। मसीहियों के बुरे व्यवहार के कारण कितने लोगों ने ईश्वर को अस्वीकार कर दिया है?

"परमेश्वर का सम्मान और यीशु का सम्मान उसके लोगों के पवित्र जीवन में देखा जाएगा।" - एलेन जी० व्हाइट, द डिजायर ऑफ एजेस, पृष्ठ 671। इस महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य का आपके लिए क्या अर्थ है? इससे आपके जीने का तरीका कैसे बदलना चाहिए?

सोमवार **जनवरी 29**

मैं मरने के लिए तैयार हूँ! (भजन 88: 3-12

पढ़ें, भजन 41: 1- 4; भजन 88: 3-12; और भजन 102: 3-5, 11, 23, 24। ये कविताएँ किन अनुभवों के बारे में बात करती हैं? क्या आपको भी ऐसा महसूस हुआ है?

भजन 41, भजन 88, और भजन 102 प्रार्थनाएँ हैं। कवि ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें बीमारी और मृत्यु से बचाये। ये कविताएँ हमें यह याद रखने में मदद करती हैं कि परमेश्वर के बच्चों को जीवन में अक्सर कठिन अनुभव होते हैं। परमेश्वर के बच्चे पीड़ित हो सकते हैं और बीमार पड़ सकते हैं। भजनकार अपने-अपने दुख-दर्द की बात करते हैं। उनके पास कोई ताकत नहीं है। वे घास की तरह ही सूख जाते हैं। उन्हें ऐसा महसूस होता है मानो वे मरने वाले हैं और कब्र में लेट रहे हैं। इनके मित्र इनसे दूर रहते हैं। एक

भजनकार कहता है, "मेरे दु:ख के कारण, मेरा वजन इतना कम हो रहा है कि मेरी त्वचा मेरी हड्डियों से लटक रही है" (भजन 102: 5)।

भजन संहिता की पुस्तक में कई भजनकारों का मानना है कि इस्राएल को परेशानी का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया है। भजनकार समझते हैं कि पाप के कारण लोग बीमार हो सकते हैं। इसलिए, वे परमेश्वर से क्षमा माँगने की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं ताकि परमेश्वर उन्हें चंगा कर सके (भजन 41: 3, 4)। कभी-कभी हमने ऐसा कुछ नहीं किया जो हमारे दुख का कारण बने। भजन 88 और भजन 102 इस बारे में बात करते हैं कि परमेश्वर के लोग कैसे पीड़ित होते हैं, क्योंकि हम पाप से भरी पृथ्वी पर रहते हैं। तो, दुख जीवन का हिस्सा है। इस विचार को कई लोगों के लिए स्वीकार करना और समझना कठिन है। भजन 88 में, भजनकार शिकायत करता है कि परमेश्वर उसके दुख का कारण है (भजन 88: 6-8)। क्या आप देखते हैं कि भजनकार की शिकायत विश्वास से भरी है? यदि परमेश्वर ने भजनकार को मुसीबत झेलने की अनुमति दी, तो वह अपने बच्चे को इससे बचा भी सकता है।

जब भजनकार को लगता है कि वह मरने वाला है, तो वह परमेश्वर के प्यार और देखभाल को याद करता है (भजन 88: 10-12)। हाँ, भजनकार का मानना है कि परमेश्वर उसे दण्ड देता है। उसी समय, भजनकार परमेश्वर को मजबूती से पकड़ लेता है। भजनकार जानता है कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है और केवल वही उसे बचा सकता है। भजनकार पीड़ा के बारे में जानता है, लेकिन वह परमेश्वर की दया के बारे में भी जानता है।

भजन 88 हमें दिखाता है कि जीवन में जो कुछ भी होता है उसका नियंत्रण परमेश्वर के पास है। परमेश्वर दुख की अनुमति दे सकता है। वह अपने बच्चों को इससे बचा भी सकता है। हमारे साथ होने वाली हर चीज पर उसका नियंत्रण हमारे दिलों को आशा से भर देना चाहिए।

क्रूस पर यीशु के बारे में सोचें और पाप के कारण उसे क्या कष्ट सहना पड़ा। परमेश्वर पिता ने, यीशु के व्यक्तित्व में, यीशु के साथ कष्ट सहा। उन्हें हममें से किसी से भी अधिक बुरा सहना पड़ा। यह विचार हमें कष्ट के समय में विश्वास बनाए रखने में कैसे मदद कर सकता है?

परमेश्वर कहाँ है? (भजन 42: 1-3)

पढ़ें, भजन 42: 1- 3; भजन 63: 1; भजन 69: 1-3; भजन 102: 1 -7. भजनकार को अत्यधिक पीड़ा किस बात से होती है?

भजनकार को व्यक्तिगत कष्ट झेलना पड़ता है। इससे भी बुरी बात यह है कि उसे डर है कि परमेश्वर बहुत दूर है। यह भय भजनकार को उसके सभी व्यक्तिगत कष्टों से भी अधिक व्यथित करता है। भजनकार यह समझाने के लिए कि वह कैसा महसूस करता है, कई शब्द चित्रों का उपयोग करता है। वह अपनी चिंता की तुलना बिना पानी वाले देश में प्यास लगने से करता है (भजन 42: 1-3; भजन 63: 1)। परमेश्वर के बारे में भजनकार की चिंता उसे मरने के लिए इतना बीमार महसूस कराती है (भजन 102: 2-4)। भजनकार अपनी तुलना अकेले पक्षियों से करता है:

"मैं जंगल में धनेस के समान हो गया हूँ,
मैं उजड़े स्थानों के उल्लू समान बन गया हूँ।
मैं पड़ा पड़ा जागता रहता हूँ और गौरे समान हो गया हूँ
जो छत के ऊपर अकेला बैठता है" (भजन 102: 6,7)।

"मरुभूमि" एक शब्द चित्र है जो हमें यह देखने में मदद करता है कि भजनकार बहुत अकेला और ईश्वर से बहुत दूर महसूस करता है। "घर की छत पर अकेला पक्षी" अपने घोंसले में नहीं है, जहाँ वह आराम कर सके। भजनकार को ऐसा लगता है मानो वह डूब रहा है और भारी कीचड़ में धंस रहा है (भजन 69: 1-3; भजन 130: 1)। इनमें से प्रत्येक शब्द चित्र हमें दिखाता है कि भजनकार को लगता है कि वह ईश्वर की सहायता के बिना अपने कष्टों से बच नहीं सकता।

पढ़ें, भजन 10: 12; भजन 22: 1; भजन 27: 9; और भजन 39: 12। इन पदों में भजनकार को चिंता है कि परमेश्वर उससे बहुत दूर है। इस विचार को भजनकार कैसा महसूस कराता है?

जब परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता तो भजनकार चुप रहने से इंकार कर देता है। प्रार्थना में भजनकार का विश्वास प्रबल है। उसका मानना है कि परमेश्वर जीवित है और अपने बच्चों पर दया दिखाना पसंद करता है। भजनकार का मानना है कि ईश्वर है, तब भी जब वह कुछ नहीं कहता। जो परमेश्वर आज मौन है, वह वही परमेश्वर है जिसने अतीत में भजनकार की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया

था। तो, भजनकार का मानना है कि परमेश्वर अब उसकी प्रार्थना सुनता है।

जब परमेश्वर भजनकार की प्रार्थनाओं का तुरंत उत्तर नहीं देता, तो भजनकार अपने हृदय और जीवन पर दृष्टि डालता है। वह अपने पापों को स्वीकार करता है। वह प्रार्थना करता रहता है और परमेश्वर को अपनी जरूरतें बताता रहता है। भजनकार जानता है कि ईश्वर सदैव चुप नहीं रहेगा।

हम उस समय भजनकार की परमेश्वर से की गई प्रार्थनाओं से क्या सीख सकते हैं जब परमेश्वर तुरंत उसका उत्तर नहीं देता? जब परमेश्वर चुप हो जाता है तो आप क्या करते हैं? आपके विश्वास को क्या मजबूत रखता है?

बुधवार **जनवरी 31**

क्या परमेश्वर का वादा विफल हो गया है? (भजन 77)

भजन 77 में भजनकार को क्या अनुभव हो रहा है?

भजन 77 में, भजनकार मदद के लिए प्रार्थना से शुरुआत करता है। अतीत के बारे में भजनकार की यादें दर्दनाक हैं (भजन 77: 1-6)। भजनकार ऐसी किसी भी आशा से इनकार करता है जो परमेश्वर से नहीं आती।

भजनकार की यादें उसे बहुत दुखी करती हैं। वह जितना अतीत को याद करता है उतना ही बुरा महसूस करता है। "हे परमेश्वर, मैं ने तुझे स्मरण किया, और मैं कराह उठा [दुख से विलाप किया]" (भजन संहिता 77: 3)। "विलाप" के लिए इब्रानी शब्द "हमाह" है। भजन संहिता की पुस्तक में भजनकारों ने तूफान के दौरान "समुद्र उग्र और अंधकारमय हो जाते हैं" के बारे में बात करने के लिए "हमाह" का उपयोग किया (भजन 46: 3)। भजन 77 में, कवि को लगता है कि उसके पास कोई आराम या शांति नहीं है। परमेश्वर के बारे में भजनकार की स्मृति उसे इतना परेशान कैसे कर सकती है? जब हम भजनकार द्वारा पूछे गए प्रश्नों को देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि वह इतना दुखी क्यों महसूस करता है (भजन 77: 7-9)। कवि आश्चर्य करता है, क्या परमेश्वर बदल गया है? क्या वह अपना वादा निभाएगा? क्या उसने अपनी ताकत खो दी है? क्या वह अब शक्तिशाली नहीं है?

अतीत में, परमेश्वर ने भजनकार को बचाया था। लेकिन अब, परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं का जवाब नहीं दे रहा है। अत: भजनकार को लगता है कि वह बिल्कुल अकेला है। यदि परमेश्वर बदल गया है, तो भजनकार को

कोई आशा नहीं है। भजनकार इस मिथ्या विचार पर विश्वास करने से इन्कार करता है।

इस बीच, भजनकार को नींद नहीं आती। प्रभु उसे जगाए रखता है (भजन 77: 4)। भजनकार की नींद की समस्याएँ हमें अन्य लोगों के बारे में बाइबल की अन्य कहानियाँ याद करने में मदद करती हैं जिन्हें सोने में परेशानी होती थी। परमेश्वर ने अपने उद्धार की योजना को क्रियान्वित करने के लिए उसकी नींद की समस्याओं का उपयोग किया (उत्पत्ति 41: 1-8; एस्तेर 6: 1; दानिय्येल 2: 1-3)। जब भजनकार रात में जागता है, तो उसे याद आता है कि कैसे परमेश्वर ने अतीत में अपने लोगों को बचाया था। जब भजनकार याद करता है, तो वह परमेश्वर की और अधिक सेवा करना चाहता है (भजन 77: 5,10)।

अंत में, परमेश्वर भजनकार को उत्तर देता है। परमेश्वर का उत्तर इस स्पष्टीकरण से भरा नहीं है कि भजनकार अब क्यों पीड़ित है। परमेश्वर भजनकार को उस पर भरोसा बनाए रखने का कारण देता है। अब भजनकार को विश्वास के साथ प्रभु की प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भजनकार जानता है कि परमेश्वर वही परमेश्वर है जिसने इस्राएल के अतीत में चमत्कार किए थे (भजन 77: 11-18)। भजनकार जानता है कि परमेश्वर के लोग अक्सर उसे उनके लिए काम करते हुए नहीं देख सकते हैं: "तेरा मार्ग समुद्र में है, और तेरा रास्ता गहिरे जल में हुआय और तेरे पाँव के चिह्न मालूम नहीं होते" (भजन 77: 19)।

पिछले समय के बारे में सोचें जब प्रभु ने आपके जीवन में कार्य किया था। आपके वर्तमान कठिन समय में वे अनुभव किस प्रकार आपकी सहायता करते हैं?

बृहस्पतिवार **फरवरी 1**

दुष्ट लोग हमेशा भूमि (देश) पर नियंत्रण नहीं रखेंगे (भजन 125: 3)

देश, भजन 37: 1, 8; भजन 49: 5-7; भजन 94: 3-7; और भजन 125: 3. ये कविताएँ किस समस्या की बात कर रही हैं?

भजन 37; भजन 49; भजन 94; और भजन 125 में भजनकार बुरे लोगों के बारे में बात करता है। भजनकार को उनकी सफलता समझने में परेशानी होती है। वे परमेश्वर के प्रति अपनी नफरत को छिपाते नहीं हैं। वे दूसरे लोगों को ठेस पहुँचाते हैं और उन्हें खेद नहीं होता। हमें बताया गया है

कि दुष्ट लोग हमेशा भूमि पर कब्जा नहीं करेंगे (भजन 125: 3)। हमें बताया गया है कि परमेश्वर का राज्य सदैव बना रहेगा (भजन 45: 6)। लेकिन कभी-कभी हम सोच सकते हैं कि बुरे लोग जीत रहे हैं और जीवन का आनंद ले रहे हैं। इसलिए, हम शायद अपना विश्वास त्यागना चाहते हैं और पाप के जीवन में दुष्टों के साथ शामिल होना चाहते हैं।

कठिन समय के दौरान भजनकार को क्या मदद मिलती है? उत्तर के लिए भजन 73: 1-20, 27 पढ़ें। उन लोगों का क्या होता है जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते? (1 पतरस 1: 17 भी पढ़।)

_____

_____

जब भजनकार ने अपने आस-पास की बुराई को देखा, तो उसे परमेश्वर पर संदेह होने लगा। भजनकार ने देखा कि दुष्ट लोगों को बहुत सफलता मिली। उनकी सफलता ने कवि को परमेश्वर की योजना पर संदेह करने पर मजबूर कर दिया। भजनकार ने सोचा, "क्या विश्वास रखना बेकार है?"

फिर भजनकार परमेश्वर के मंदिर के बारे में सोचता है जहाँ परमेश्वर सभी लोगों का न्याय करेगा। बाइबल का यह सत्य भजनकार को यह समझने में मदद करता है कि परमेश्वर नियंत्रण में है। दुष्ट लोग सोच सकते हैं कि वे इस जीवन में जो चाहें कर सकते हैं। लेकिन भविष्य में, उन्होंने जो कुछ भी करने का निर्णय लिया है उसके लिए वे परमेश्वर को उत्तर देंगे। जब भजनकार इस बाइबिल सत्य को समझता है, तो वह जानता है कि परमेश्वर पर संदेह करना उसकी गलती थी। वह अपना पाप स्वीकार करता है। केवल परमेश्वर ही हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण है: हमें उसके लिए जीना चाहिए, तब भी जब हमारे आस-पास के अधिकांश लोग स्वयं और पाप के लिए जी रहे हैं।

परमेश्वर उन सभी का न्याय करेगा जो जीवित हैं। परमेश्वर उन सभी बुराइयों का न्याय करेगा जो लोग करते हैं। यह वादा आपको कैसे आशा देता है जब इतने सारे लोग बुराई करते हैं जिनकी अब सजा नहीं होती?

शुक्रवार **फरवरी 2**

अतिरिक्त अध्ययन: पढ़ें, भजन 56; एलेन जी ह्वाइट की पुस्तक ख्रीष्ट की ओर कदम में, "प्रभु में आनन्द," पृष्ठ 115-126।

"जब आप पीड़ित हों या परेशानी में हों, तो ऊपर देखें, नीचे नहीं। परमेश्वर की ओर देखें, अपनी समस्याओं को मत देखें कि वे कितनी कठिन

हैं। जब आप परमेश्वर की ओर देखेंगे तो आपमें सदैव साहस रहेगा। जल्द ही आप देखेंगे कि यीशु का हाथ आपकी मदद के लिए आ रहा है। आपको बस उसे विश्वास के साथ अपना हाथ देने की जरूरत है। उसे आपका नेतृत्व करने दीजिए। जब आप उस पर भरोसा करना सीख जाएँगे, तो आप आशा से भर जाएंगे।" - एलेन जी ह्वाइट, चर्च के लिए प्रशंसापत्र, खंड 5, पृष्ठ 578, 579।

क्या आपको कभी-कभी ऐसा लगता है कि आप बिल्कुल अकेले हैं? या क्या आपको लगता है कि परमेश्वर ने आपसे अपना मुँह फेर लिया है? सहन करते रहें। अंधकारमय समय में, भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले कवियों ने सोचा कि परमेश्वर बहुत दूर है। कवियों (भजनकारों) ने क्या किया? वे प्रार्थना करते रहे। उन्होंने अपने हृदय के अंदर झाँक कर देखा। उन्होंने अतीत में परमेश्वर के उद्धार के कार्यों को याद किया। उन्होंने परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार कर लिया। वे उससे सहायता माँगते रहते हैं (भजन 77: 10-12; भजन 89: 46-52)।

"जब हमारा शंकाओं और परेशानियों से सामना होता है और उनसे लड़ते हैं तो हमारा विश्वास मजबूत होता है। जब हम शंकाओं और परेशानियों से लड़ते हैं, तो हम जीवन के बारे में एक महत्त्वपूर्ण सबक सीखेंगे जो सबसे कीमती रत्नों से भी अधिक मूल्यवान होगा।" - एलेन जी० ह्वाइट, चर्च के लिए प्रशंसापत्र, खंड 3, पृष्ठ 555।

चर्चागत प्रश्न:

1. **कवियों ने किन शंकाओं और भयों के विरुद्ध संघर्ष किया? संदेह और भय के साथ आपका अपना अनुभव क्या रहा है? इस कठिन समय के दौरान आपने विश्वास को कैसे मजबूत बनाए रखा?**
2. **जब परमेश्वर में हमारे विश्वास की परीक्षा हो तो हमें उत्तर कहाँ ढूँढ़ना चाहिए? आप उन लोगों को क्या आशा दे सकते हैं जिनकी पीड़ा के कारण वे परमेश्वर के प्रेम पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं?**
3. **आप इस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं कि प्रेम का सर्वशक्तिमान परमेश्वर इस पृथ्वी पर बुराई क्यों होने देता है? अच्छे और बुरे के बीच विश्वव्यापी युद्ध इस प्रश्न का उत्तर कैसे देता है?**

पाठ 6

फरवरी 3 -9

मैं गरीबों की मदद करूंगा
(I will help the poor)

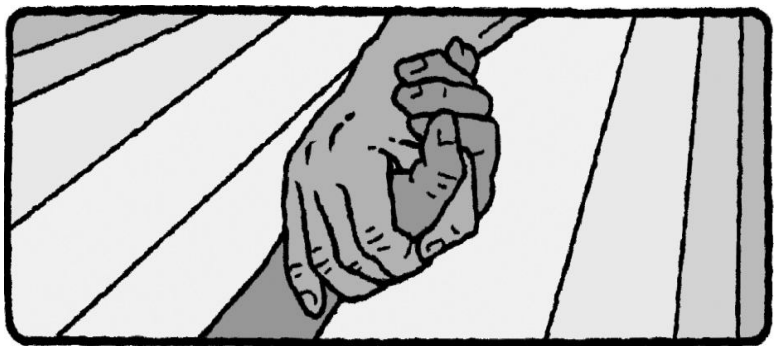

सब्त अपराह्न **फरवरी 3**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 18: 3-18; भजन 9: 18; भजन 82; भजन 58: 6-8; भजन 96: 6-10; भजन 99: 1-4.

याद वचन:"दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों के कराहने के कारण, परमेश्वर कहता है, "अब मैं उठूँगा, जिस पर वे फुंकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दूंगा" (भजन 12: 5)।

हम अकेले नहीं हैं जो बुरे युग में जी रहे हैं। भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकार भी बुरे समय में जी रहे थे। भजन संहिता की पुस्तक हमें इस धरती पर होने वाले सभी पापों और पीड़ाओं के खिलाफ परमेश्वर के क्रोध के बारे में बताती है।

हाँ, प्रभु धैर्यवान है। वह अपना क्रोध रोक लेता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई मरे। प्रभु चाहता है कि हर कोई अपने पापों को स्वीकार करे और अपने बुरे तरीकों को बदल दे (2 पतरस 3:9-15)। परमेश्वर हमेशा तब कार्य नहीं करता जब हम उससे अपेक्षा करते हैं या चाहते हैं कि वह कार्य करे। परन्तु हम जानते हैं कि वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर न्यायाधीश के रूप में अपना कार्य पूरा करेगा (भजन 96: 13; भजन 98: 9)। हमें उस दिन आने तक उस पर भरोसा रखना होगा। परमेश्वर एक निष्पक्ष और पवित्र न्यायाधीश है (भजन संहिता 89: 14; भजन संहिता 97: 2)। वह वही है जिसने हमें बनाया है। तो, परमेश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो जीवन को नया बना सकता है या हमारा न्याय कर सकता है। हमारे न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर

* सब्त, फरवरी 10 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

के कार्य के दो भाग हैं: (1) परमेश्वर अपने बच्चों को बचाएगा, और (2) वह दुष्ट लोगों को नष्ट कर देगा क्योंकि उन्होंने उसकी दया को स्वीकार करने से इनकार कर दिया है।

परमेश्वर अपने लोगों के लिए ये दो चीजें करने का वादा करता है। हम अपने वादों को निभाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। लेकिन भजन संहिता की किताब हमें सिखाती है कि परमेश्वर अपना काम अपने समय में करेगा, हमारे समय (हिसाब से) में नहीं।

रविवार **फरवरी 4**

प्रभु एक शक्तिशाली योद्धा है (भजन 18: 3-18)

पढ़ें, भजन 18: 3-18; भजन 76: 3-9, 12; भजन 144: 5-7. इन पदों में कौन से शब्द चित्रों का उपयोग किया गया है? ये शब्द चित्र हमें कैसे दिखाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए तैयार है?

भजन 18; भजन 76; और भजन 144 भजन (गीत) हैं। ये भजन अपने लोगों को उनके शत्रुओं से बचाने के लिए ईश्वर की स्तुति करते हैं।

ये भजन हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर एक न्यायाधीश और एक शक्तिशाली योद्धा है। भजन संहिता की पुस्तक अक्सर परमेश्वर को एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में दिखाती है। कवियों ने हमें यह दिखाने के लिए शब्द चित्र का उपयोग किया है कि परमेश्वर अपने पीड़ित लोगों के लिए लड़ता है जो मदद के लिए उसकी ओर आवाज उठाते हैं:

"तब यहोवा आकाश में गरजा,
और परमप्रधान ने वाणी सुनाई, ओले और अंगारे।
उसने अपने तीर चला चलाकर उनको तितर-बितर किया;
वरन बिजलियाँ गिरा गिराकर उनको परास्त किया।
तब जल के नाले देख पड़े, और जगत की नींव प्रगट हुई,
यह तो हे यहोवा तेरी डांट से, और तेरे नथनों की साँस की झोंक से हुआ"
(भजन 18: 13-15)।

भजन 18 हमें यह समझने में मदद करता है कि हमें संदेह नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर को हमारी परवाह है। वह हमारे शत्रुओं से लड़ने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है। हमें बस उसके समय में हमारी सहायता करने के लिए उसकी प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है।

जब परमेश्वर के लोगों को बचाने की जरूरत थी, तो वे जानते थे कि मानवीय सहायता बेकार थी। राजा दाऊद बाइबल की यह सच्चाई जानता था।

राजा दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति की जिसने उसे उसके द्वारा लड़े गए युद्धों को जीतने में मदद की। दाऊद ने अपनी सफलता की सारी प्रशंसा ईश्वर को दी।

हाँ, दाऊद कहता है कि प्रभु उसके हाथों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित करता है (भजन 18:34)। परन्तु दाऊद कभी भी युद्ध में अपने कौशल की प्रशंसा नहीं करता। दाऊद हमेशा उसके लिए लड़ने और उसे बचाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखता है (भजन 18:47, 48)।

भजन संहिता की पुस्तक में, राजा दाऊद अपने लोगों के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में प्रभु की स्तुति करता है (भजन 144:10-15)। प्रभु की स्तुति और प्रार्थना दाऊद की सफलता और शक्ति का रहस्य है। प्रभु की स्तुति और प्रार्थना युद्ध के किसी भी हथियार से अधिक शक्तिशाली हैं। हम केवल परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। वह एकमात्र व्यक्ति है जो हमारी आराधना के योग्य है।

आपको जीवन में कौशल और सफलता किसने दी? आपको हमेशा यह क्यों याद रखना चाहिए कि आप पर सब कुछ परमेश्वर का बकाया है?

सोमवार **फरवरी 5**

गरीबों और जरूरतमंद लोगों की मदद करना (भजन 9:18)।

पढ़ें, भजन 9:18; भजन 12:5; भजन 40:17; भजन 113:7; भजन 146:6-10; और भजन 41:1-3. इन पदों से हमें क्या संदेश मिलता है?

बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर उन लोगों की परवाह करता है जो गरीब, जरूरतमंद, विधवा, अनाथ और परदेशी हैं (निर्गमन 22:21-27; यशायाह 3:13-15)। भजन संहिता की पुस्तक हमें यही संदेश देती है। भजन संहिता की पुस्तक में कई पदस्थल "गरीब और जरूरतमंद" शब्दों का उपयोग उन लोगों के बारे में बात करने के लिए करता है जिन्हें परमेश्वर की विशेष सहायता की आवश्यकता है। भजनकार यह दिखाने के लिए ऐसा करते हैं कि परमेश्वर हर जगह सभी लोगों की मदद करना चाहता है, न कि केवल अपने चुने हुए लोगों की।

"गरीब और जरूरतमंद" शब्द का अर्थ उन लोगों से अधिक है जिनके पास बहुत अधिक सामान या पैसा नहीं है। "गरीब और जरूरतमंद" हमें ऐसे लोगों को भी दिखाता है जो असहाय हैं और सहज आहत हो जाते हैं। परमेश्वर गरीब और जरूरतमंद लोगों से बहुत प्रेम करता है। "गरीब और जरूरतमंद"

शब्द हमें यह भी दिखाते हैं कि पीड़ित व्यक्ति बिल्कुल अकेला होता है। परमेश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो इस व्यक्ति की मदद कर सकता है। "गरीब और जरूरतमंद" का एक आध्यात्मिक अर्थ भी है। कवि इसका उपयोग ऐसे व्यक्ति के लिए करते हैं जो परमेश्वर और उसकी बाइबल सच्चाई से प्रेम करता है। यह व्यक्ति स्वयं पर नहीं बल्कि पूर्णत: परमेश्वर पर निर्भर रहता है। जब हम गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करते हैं (भजन 41: 1-3), तो हम परमेश्वर में अपना विश्वास दिखाते हैं। बाइबल के समय में, जो लोग गरीबों और जरूरतमंदों को हानि पहुँचाते थे वे एक भयानक अपराध के दोषी होते थे (व्यवस्थाविवरण 15: 7-11)। भजन संहिता की पुस्तक हमें गरीबों और जरूरतमंदों की मदद के लिए हर संभव प्रयास करना सिखाती है। हमें गरीबों को हानि पहुँचाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कड़ा रुख अपनाना चाहिए।

भजन संहिता की पुस्तक दर्शाती है कि हम ज्ञान और सुरक्षा के लिए केवल परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर के लोगों को मनुष्यों को बचाने और उनकी समस्याओं को हल करने के लिए अपना सारा विश्वास उन पर नहीं रखना चाहिए। इनमें से बहुत से लोग परमेश्वर या उसके तरीकों का पालन नहीं करते हैं।

प्रभु यीशु इस धरती पर आया और एक गरीब मनुष्य के रूप में रहा। उसने अपने जीवन में दिखाया कि उसे गरीबों और जरूरतमंदों की परवाह है। यीशु हमें अमीर बनाने के लिए गरीब बन गया (2 कुरिन्थियों 8: 9)। यीशु के धन में हमें पाप और पीड़ा से बचाना शामिल है। यीशु ने हमें परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन का वादा किया है (प्रकाशितवाक्य 21: 4)। यीशु हमारा न्यायाधीश है, जो गरीबों या जरूरतमंदों को हानि पहुँचाने वाले या उनकी मदद करने से इनकार करने वाले हर किसी को दंडित करेगा (मत्ती 25: 31-46)। हम अपने आसपास मौजूद "गरीबों और जरूरतमंदों" के बारे में कितना सोचते हैं? हम उनके लिए कितना कुछ करते हैं?

मंगलवार **फरवरी 6**

दुष्ट अगुए (भजन 82)।

प्रभु ने इस्राएल के राजाओं को निष्पक्ष निर्णय लेने की बुद्धि दी (भजन 72: 1-7, 12-14)। इस्राएल के राजा न्यायाधीश के रूप में भी कार्य करते थे। परमेश्वर ने इन अगुओं को इस्राएल में शांति बनाए रखने और गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करने की आज्ञा दी। जब अगुओं ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, तो उसने लोगों और भूमि को आशीर्वाद देने का वादा किया। एक अगुए

के रूप में राजा की ताकत परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता से आती थी, न कि मानवीय शक्ति या बुद्धि से।

क्या होता है जब अगुए निष्पक्ष नहीं होते हैं और उन लोगों को हानि पहुँचाते हैं जिनकी उन्हें रक्षा करनी चाहिए? उत्तर के लिए भजन 82 पढ़ें। भजन 82 में, परमेश्वर ने इस्राएल के दुष्ट न्यायियों के विरुद्ध अपने दंड की घोषणा की। भजन 82: 1, 6 में, "देवता" मूर्तियाँ या स्वर्गदूत नहीं हैं। स्वर्गदूत और मूर्तियाँ परमेश्वर के लोगों को नहीं बचा सकते। इसलिए, इस्राएल को न बचाने के लिए देवताओं को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हम सीखते हैं कि देवता इस्राएल के नेता हैं। हम कैसे जानते हैं? क्योंकि अगुओं के अपराध भजन 82: 2-4 में सूचीबद्ध हैं। ये अपराध हमें उन व्यवस्थाओं को याद रखने में मदद करते हैं जो परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण 1: 16-18 और व्यवस्थाविवरण 16: 18-20 में मूसा को दिए थे। (यूहन्ना 10:33-35 भी पढ़ें।) परमेश्वर अगुओं से पूछता है कि क्या वे समस्याओं का न्याय करते समय निष्पक्ष हैं। परमेश्वर जानता है कि अगुए निष्पक्ष नहीं रहे हैं। इसलिए परमेश्वर उनकी सजा की घोषणा करता है। अगुओं को कोई समझ नहीं है (भजन 82: 5, क्योंकि वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने से इनकार करते हैं (भजन 119:105)।

बाइबल हमें बार-बार बताती है कि प्रभु ही एकमात्र ईश्वर है। परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपना नियंत्रण अपने द्वारा चुने गए मानवीय अगुओं के साथ साझा करता है (रोमियों 13: 1)। अक्सर, ये अगुए परमेश्वर के प्रति वफादार नहीं होते हैं।

भजन 82 कुछ अगुओं के दिलों में व्याप्त बुराई को दर्शाता है। ये अगुए ऐसे व्यवहार करते हैं मानो वे "परमेश्वर" हों जो अन्य लोगों से ऊपर हों। परमेश्वर ने इस्राएल के अगुओं को बुद्धि और शक्ति दी। परमेश्वर ने इन अगुओं को अपनी संतान का नाम दिया। परन्तु परमेश्वर दुष्ट अगुओं को अस्वीकार करता है। परमेश्वर चाहता है कि दुष्ट अगुए यह याद रखें कि वे हमेशा जीवित नहीं रहेंगे। उन्हें उन्हीं व्यवस्थाओं का पालन करना होगा जिनका लोग पालन करते हैं। ये नियम परमेश्वर के नियम हैं। प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था का पालन करना चाहिए (भजन 82: 6-8)।

परमेश्वर मरे हुओं और जीवितों का न्याय करेगा। परमेश्वर के लोगों को भी परमेश्वर के सामने खड़ा होना चाहिए और अपने कार्यों और अपने व्यवहार को परमेश्वर को बताना चाहिए। अगुओं और लोगों दोनों को वैसे ही जीना चाहिए जैसे यीशु, उनका न्यायाधीश, ने तब जीया था जब वह इस धरती पर था। यीशु ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो उन्हें बचा सकता है।

क्या आप अगुआ हैं या किसी के बॉस? आप कितने निष्पक्ष हैं?

हे प्रभु, अपना क्रोध उँडेल! (भजन 58: 6-8)।

पढ़ें, भजन 58: 6-8; भजन 69: 22-28; भजन 83: 9-17; भजन संहिता 94:1, 2; और भजन 137: 7-9 और फिर प्रश्नों के उत्तर दें। कवि किस बात से परेशान है? इन पदों में बदला लेने वाला कौन है जो बुराई को सजा देता है?

भजन संहिता की पुस्तक में कुछ पदस्थल परमेश्वर से उन लोगों और राज्यों को दंडित करने के लिए कहता है जो इस्राएल को हानि पहुँचाना चाहते हैं या जिन्होंने अतीत में उन्हें हानि पहुँचाई है। हमें यह समझने में कठिनाई हो सकती है कि कवि अपने पदों में इतने क्रोधित और परेशान क्यों हो जाते हैं। हमें सिखाया गया है कि हमें अपने दुश्मनों से प्रेम करना चाहिए। इसलिए, हम महसूस कर सकते हैं कि भजनकारों की क्रोधपूर्ण भाषा अपने शत्रुओं से प्रेम करने के बाइबिल नियम के विरुद्ध है (मती 5:44)।

लेकिन बुराई के प्रति भजनकार का गुस्सा हमें दिखाता है कि उसके दिल में क्या है। उनका गुस्सा हमें दिखाता है कि उन्हें इसकी परवाह है कि लोगों के साथ क्या होगा। वह परमेश्वर के पवित्र नियम की भी परवाह करता है और इस नियम को तोड़ने वाले किसी भी पाप से नफरत करता है।

भजनकार अपने शत्रुओं से बदला लेने या उन्हें दंडित करने का प्रयास नहीं करता है। उसका मानना है कि केवल ईश्वर ही अपने लोगों का बदला लेने वाला है। भजनकार परमेश्वर से यह याद रखने के लिए कहता है कि उसने अपने वादे में दुष्ट लोगों को शापों से दंडित करने का वादा किया था (व्यवस्थाविवरण 27: 9-16)। इसलिए, भजनकार परमेश्वर से अपना वादा निभाने और अब कार्य करने के लिए कहता है।

हमें याद रखना चाहिए कि भजन संहिता की कविताएँ प्रार्थनाएँ हैं। साथ ही, वे न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर के भविष्य के कार्य के बारे में भी घोषणाएँ हैं। भजन 137 चेतावनी देता है कि परमेश्वर बेबीलोन का न्याय करेगा। बेबीलोन ने कई लोगों और राज्यों पर हमला किया और बहुत पीड़ा पहुँचाई। परमेश्वर बेबीलोनियों को उस पीड़ा का एहसास कराएगा जो उन्होंने अन्य लोगों को पहुँचाई है। भजन संहिता की पुस्तक की कविताओं में दुष्ट लोगों के लिए परमेश्वर की ओर से कई चेतावनियाँ हैं। परमेश्वर हमेशा बुरे लोगों को वह करने की अनुमति नहीं देगा जो वे चाहते हैं। परमेश्वर उन्हें सजा देगा।

जब परमेश्वर लोगों का न्याय करता है, तो वह निष्पक्ष होता है। वह दया दिखाता है। उसी तरह, परमेश्वर अपने बच्चों से उन लोगों के लिए प्रार्थना

करने के लिए कहता है जिन्होंने उन्हें हानि पहुँचाई है। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन लोगों के दिल और जीवन को बदल दे जिन्होंने हमें हानि पहुँचाई है ताकि वे उसकी सेवा कर सकें (भजन संहिता 83: 18; यिर्मयाह 29: 7)।

परमेश्वर वह सब जानता है जो उसके बच्चे सहते हैं। "परमेश्वर को उसके अनुयायियों का जीवन बहुत प्रिय है। जब वे मृत्यु का सामना करते हैं तो वह परवाह करता है" (भजन 116: 15)। चूँकि परमेश्वर बुरे लोगों का न्याय करेगा, इसलिए हमें सभी को पाप और बुराई के विरुद्ध चेतावनी देनी चाहिए। भजन संहिता के भजनकारों ने पीड़ितों को यह बताया कि परमेश्वर उनके सारे दर्द देखता है। परमेश्वर उनका बदला लेने वाला होगा। वह उन दुष्ट लोगों को दंडित करने का वादा करता है जो उसके बच्चों को हानि पहुँचाते हैं।

बृहस्पतिवार **फरवरी 8**

हमारा न्यायी और उसका मन्दिर (भजन 96: 6-10।

न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर का कार्य कहाँ होता है? इस उत्तर का हमारे लिए क्या अर्थ है? स्वर्ग में परमेश्वर का मंदिर हमें यह समझने में कैसे मदद करता है कि परमेश्वर पाप और बुराई की समस्या को कैसे हल करेगा? पढ़ें, भजन 96: 6-10; भजन 99: 1-4; भजन 132: 7-9, 13-18।

न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर का कार्य स्वर्ग में मंदिर से जुड़ा हुआ है। मंदिर के बारे में बाइबल की सच्चाई ने भजन 73 के भजनकार को यह समझने में मदद की कि परमेश्वर पाप और बुराई की समस्या को कैसे हल करेगों भजन 73: 17-20)। इस्राएल के महायाजक, या आध्यात्मिक अगुए के कपड़ों से पता चलता है कि परमेश्वर का मंदिर वह स्थान है जहाँ वह न्यायाधीश के रूप में अपना काम करेगा और पाप की समस्या का समाधान करेगा (गिनती 27: 21; निर्गमन 28: 15, 28-30)। भजन संहिता की कई कविताओं में परमेश्वर को स्वर्ग के मंदिर में सिंहासन पर बैठे हुए दिखाया गया है। वहाँ, परमेश्वर मृतकों और जीवितों का उनके इस जीवन में किए गए हर काम के अनुसार न्याय करने के लिए तैयार है।

परमेश्वर का मंदिर हमें हमारे पापों से बचाने की उसकी योजना को समझने में मदद करता है। बाइबल के समय में, झूठे देवताओं की पूजा करने वाले लोगों का मानना था कि पाप एक ऐसी चीज है जिसे जादू से दूर किया जाना चाहिए। बाइबल हमें बताती है कि पाप परमेश्वर के नियम को तोड़ रहा है। परमेश्वर के पवित्र जीवन का अर्थ है कि वह हर उस चीज से प्यार करता है जो निष्पक्ष और स्वच्छ है। इसलिए, परमेश्वर के लोगों को अपने हर काम

में निष्पक्ष और पवित्र होना चाहिए। पवित्र होने के लिए, परमेश्वर के लोगों को उसकी व्यवस्था का पालन करना चाहिए। व्यवस्था हमें परमेश्वर का पवित्र हृदय और जीवन दिखाती है।

स्वर्ग में मंदिर वह स्थान है जहाँ परमेश्वर पापों को क्षमा करता है। वह हमें अपने मंदिर से नया और पवित्र भी बनाता है। साथ ही, क्षमा करने वाला परमेश्वर अपने लोगों का बदला लेने वाला भी है। वह उन दुष्ट लोगों को दण्ड देता है जो अपने पापों को स्वीकार नहीं करते और उन्हें करना बंद नहीं करते (भजन 99:8)।

न्यायाधीश के रूप में प्रभु का कार्य सिय्योन पर्वत पर होता है। सिय्योन पर्वत परमेश्वर के पवित्र मंदिर का एक नाम है। न्यायाधीश के रूप में अपने कार्य में, परमेश्वर अपने बच्चों को बचाएगा और दुष्ट लोगों को दंडित करेगा (भजन 132:13-18)। परमेश्वर का मंदिर उसके लोगों को आशा देता है। मंदिर हमें परमेश्वर से न्यायाधीश के रूप में अपना कार्य करने की अपेक्षा करना सिखाता है। भजन संहिता की पुस्तक हमें न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर के कार्य में विश्वास और आशा देती है (भजन 96:13; भजन 98:9)। यीशु मसीह हमारा न्यायाधीश है जो स्वर्ग के मंदिर में हमें बचाने का काम करता है (प्रकाशितवाक्य 11:15-19)।

रोमियों 8:34 पढ़ें। यह पद हमें कैसे दिखाता है कि स्वर्ग के मंदिर में हमारे लिए यीशु का कार्य उसके लोगों के लिए अच्छी खबर है?

शुक्रवार **फरवरी 9**

अतिरिक्त अध्ययन: Read Ellen G. White] "The Beatitudes]" pages 6-13] 29-35] in Thoughts From the Mount of Blessing.

यीशु ने कहा, 'लोग तुम्हारा अपमान करेंगे और तुम्हें हानि पहुँचाएँगे। वे झूठ बोलेंगे और तुम्हारे विषय में सब प्रकार की बुरी बातें कहेंगे, क्योंकि तुम मेरे पीछे हो लेते हो। लेकिन जब वे ऐसा करते हैं, तो जान लो कि तुम बड़े आशीष के भागीदार हो ' [मती 5:11]। यीशु ने अपने चेलों से पुराने नियम में परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं के शब्दों को याद रखने के लिए भी कहा। ये भविष्यवक्ता परमेश्वर के विशेष दूत थे। उन्होंने उन सभी शब्दों का प्रचार किया जो प्रभु ने उन्हें प्रचार करने के लिए कहा था। ये विशेष दूत यीशु के चेलों के लिए उदाहरण थे। बाइबल कहती है, 'भाइयों और बहनों, उन भविष्यवक्ताओं के उदाहरण का अनुसरण करो जिन्होंने प्रभु के लिए बात की थी। उन्होंने बहुत सी बुरी विपत्तियाँ उठाईं, परन्तु उन्होंने धैर्य रखा।' याकूब 5:10। आदम के सभी बच्चों में हाबिल पहला मसीही था। हाबिल को प्रभु में उसके विश्वास

के कारण मार दिया गया। हनोक ने आज्ञाकारिता का जीवन जीया। उस समय लोग हनोक को नहीं समझते थे क्योंकि वह परमेश्वर के साथ चलता था। नूह के दिनों में, लोग उसके विश्वास और भरोसा के लिए उसका मजाक उड़ाते थे। 'कई एक ठठ्ठों में उड़ाए जाने; और कोड़े खाने वरन बांधे जाने, और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए' [इब्रानियों 11:36,। 'ऐसी स्त्रियाँ थीं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया था, लेकिन जब उन्हें मृत्यु से उठाया गया (जीवन में वापस लाया गया) तो उन्होंने उन्हें वापस पा लिया। दूसरों [परमेश्वर के कुछ बच्चों] पर अत्याचार किया गया लेकिन उन्होंने अपनी स्वतंत्रता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होंने [परमेश्वर के बच्चों ने] ऐसा किया (स्वतंत्रता से इनकार कर दिया) ताकि उन्हें मृत्यु से उठाकर बेहतर जीवन दिया जा सके।' इब्रानियों 11:35।"– एलेन जी० ह्वाइट, थॉट्स फ्रॉम द माउंट ऑफ ब्लेसिंग, पृष्ठ 33।

चर्चागत प्रश्नः

1. **जब हम अपने चारों ओर बुराई होते देखते हैं, तो हमें आश्चर्य हो सकता है, "क्या प्रभु वास्तव में नियंत्रण में है?" ऐसे समय में जब हमारे विश्वास की परीक्षा हो रही है, हम प्रभु में कैसे मजबूत रह सकते हैं? परमेश्वर के प्रेम और शक्ति में अपना विश्वास मजबूत बनाए रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए? क्रूस हमें परमेश्वर के प्रेम और शक्ति के बारे में क्या सिखाता है?**
2. **हमेशा निष्पक्ष निर्णय लेने या हमारे आस-पास दिखाई देने वाली समस्याओं को हल करने के लिए अगुओं, सरकारों या विशेष समूहों पर निर्भर रहना या उन पर भरोसा नहीं करना क्यों महत्त्वपूर्ण है? हमें केवल परमेश्वर के वचन, बाइबल और हमारे न्यायाधीश के रूप में उसके कार्य पर ही भरोसा क्यों करना चाहिए?**

पाठ 7

फरवरी 10-16

परमेश्वर की अद्‌भुत दया और प्रेम
(God's wonderful Mercy and Love)

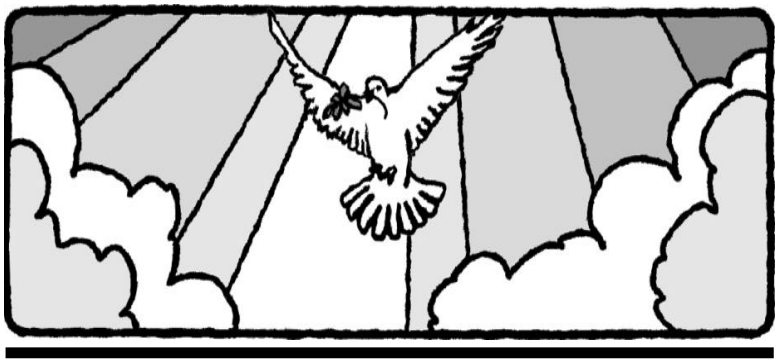

सब्त अपराह्न **फरवरी 10**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 136; भजन 51; भजन 130; भजन 113; भजन 123; भजन 103.

याद वचन: "हे प्रभु, मैं देश देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं राज्य राज्य के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊँगा। क्योंकि तेरी करुणा स्वर्ग तक बड़ी है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँचती है" (भजन 57: 9, 10)।

भजन संहिता की पुस्तक लिखने वाले भजनकार समझते हैं कि वे गरीब और जरूरतमंद हैं। उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर की दया की जरूरत है। वे यह भी जानते हैं कि वे अपने अच्छे व्यवहार से परमेश्वर की दया हासिल नहीं कर सकते। इसलिए, उनके पास परमेश्वर को अर्पित करने के लिए कुछ भी अच्छा नहीं है।

भजन की किताब हमें सिखाती है कि लोगों को पूरी तरह से परमेश्वर की दया पर निर्भर रहना चाहिए। हम आभारी हो सकते हैं कि परमेश्वर की दया अनन्त है। परमेश्वर के लोगों का इतिहास हमें बाइबल की यह सच्चाई दिखाता है। परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया है, वह वैसा ही है (भजन 136)। परमेश्वर अनन्त है, परन्तु मानव जीवन घास के समान है। हम इस धरती पर बहुत कम समय तक जीवित रहते हैं और फिर मर जाते हैं। इसलिए, परमेश्वर हम मनुष्यों पर दया करता है और हमारी शक्ति को नया बनाता है (भजन

* सब्त, फरवरी 17 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

103: 3, 5, 15)। परमेश्वर हमें अनन्त जीवन का वादा देता है।

परमेश्वर के लोग जानते हैं कि वे स्वर्ग में अपने पिता से प्रार्थना करते हैं जो उनसे प्रेम करता है (भजन 103: 13; भजन 68: 5; भजन 89: 26)। प्रतिदिन उन्हें नए अनुभव होते हैं जो उन्हें ईश्वर की दया और प्रेम के बारे में सिखाते हैं। ये अनुभव उन्हें परमेश्वर की अधिक आराधना और सेवा करने में मदद करते हैं। चूँकि परमेश्वर बहुत अद्‌भुत है, उसके लोग केवल उसकी आराधना और सेवा करना चाहते हैं।

रविवार **फरवरी 11**

परमेश्वर की दया सदैव बनी रहती है (भजन 136)

भजन 136 पढ़ें। इस कविता में बाइबल का सबसे महत्वपूर्ण सत्य क्या है? भजनकार को इस विचार का प्रमाण कहाँ मिलता है?

भजन 136 परमेश्वर के लोगों से अनुग्रह के लिए परमेश्वर की स्तुति करने को कहता है। परमेश्वर के लोग, इस्राएल और उनके इतिहास में, उसकी बनाई चीजों में उसकी दया देख सकते हैं (भजन 136: 4-9) (भजन 136: 10-22)। शब्द "दया" हिब्रू शब्द "खेसेद" से आया है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर का प्रेम कभी विफल नहीं होता या बदलता नहीं है। प्रभु "ईश्वरों का ईश्वर" और "प्रभुओं का प्रभु" है (भजन 136: 2, 3)। परमेश्वर के लिए इन विशेष नामों का मतलब यह नहीं है कि अन्य देवता भी हैं। "ईश्वरों का ईश्वर" और "प्रभुओं का प्रभु" हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर ही एकमात्र ईश्वर है।

कोई भी ऐसे अद्‌भुत चमत्कार नहीं कर सकता जो परमेश्वर कर सकता है (भजन 136: 4)। परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी, तारे और ग्रह बनाये। बाइबल के समय में बहुत से लोग तारों और ग्रहों को देवता मानते थे और उनकी पूजा करते थे (व्यवस्थाविवरण 4: 19)। भजन की पुस्तक हमें दिखाती है कि ये "देवता" केवल ईश्वर द्वारा बनाई गई चीजें हैं। ये "देवता" कुछ भी नियंत्रित नहीं कर सकते।

भजन 136: 12 में, भजनकार हमें यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है, शब्द चित्र के रूप में ईश्वर के हाथों और भुजाओं का उपयोग करता है। परमेश्वर के हाथ और भुजाएँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि परमेश्वर की दया कहीं भी मिल सकती है और किसी के भी दिल को छू सकती है।

परमेश्वर की दया से उसके लोगों को उस पर भरोसा करना चाहिए और उसके और उसके वादे के प्रति वफादार रहना चाहिए। भजन 136 में, भजनकारों ने 26 बार घोषणा की है कि परमेश्वर की दया हमेशा बनी रहती है। यह घोषणा हमें आशा देती है कि प्रभु नहीं बदलेगा। वह अपने लोगों पर

कृपा करेगा और उसके बच्चों को आशीर्वाद देना जारी रखेगा। परमेश्वर अपने लोगों को स्मरण रखता है (भजन 136: 23)। परमेश्वर अपना वादा निभाता है। परमेश्वर के वादे की नींव दया है। जब हम परमेश्वर की दया पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर की आराधना करते समय हम आनंद से भर जाएँगे।

भजन 136: 23-25 हमें यह बताने के साथ समाप्त होता है कि कैसे परमेश्वर इस पृथ्वी पर हर किसी और हर चीज की परवाह करता है। परमेश्वर अपने लोगों और अपनी बनाई हर चीज पर दया करता है। भजन संहिता की किताब हमें बताती है कि परमेश्वर की बचाने वाली दया सभी के लिए है। इसलिए, भजनकार सभी को इस्राएल में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं क्योंकि वे प्रभु की स्तुति करते हैं (लूका 2: 10; यूहन्ना 3: 16; प्रेरितों 15: 17)।

क्रूस पर यीशु की मृत्यु हमें कैसे सशक्त तरीके से दिखाती है कि परमेश्वर का प्रेम और दया हमेशा बनी रहेगी?

सोमवार **फरवरी 12**

मुझे शुद्ध हृदय दे (भजन संहिता 51: 1-5)

भजन 51:1-5 पढ़ें। भजन 51 में भजनकार प्रभु से दया दिखाने के लिए क्यों कहता है?

राजा दाऊद ने भजन 51 लिखा। इस भजन में, राजा दाऊद ने अपने दिल की बात प्रभु के सामने रखी। दाऊद ने ईश्वर से अपने जीवन के अंधकारमय समय में किए गए पापों के लिए उसे क्षमा करने के लिए कहा (2 शमूएल 11 और 12)। दाऊद ने दूसरे व्यक्ति की पत्नी के साथ यौन संबंध बनाए और फिर उस व्यक्ति को युद्ध में मारने का आदेश दिया। राजा दाऊद जानता है कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है (भजन 103: 10)। लेकिन दाऊद ने परमेश्वर से उस पर दया दिखाने के लिए कहा (भजन 51: 1; निर्गमन 34: 6, 7)। क्षमा परमेश्वर की दया और उसके प्रेम का एक उपहार है (भजन 51: 1)।

भजन 51: 6-19 पढ़ें। ये पद हमें परमेश्वर की क्षमा के बारे में क्या सिखाते हैं? परमेश्वर की क्षमा हमें कैसे बदलती है? परमेश्वर की क्षमा हमारे लिए और क्या करती है?

परमेश्वर की क्षमा एक कानूनी घोषणा से कहीं अधिक है कि पापी अब परमेश्वर की नजर में निर्दोष है। परमेश्वर की क्षमा हमें अंदर से बाहर तक बदल देती है (भजन 51: 6; इब्रानियों 4: 12)। परमेश्वर हमारे जीवन को नया बनाता है (भजन 51: 10; यूहन्ना 3: 3-8)। हिब्रू शब्द "बारा" का अर्थ है "बनाना।" "बारा" हमें दिखाता है कि परमेश्वर शून्य से भी जो चाहे

बना सकता है! परमेश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो "बारा" या "बना" सकता है। केवल परमेश्वर ही पापी का हृदय बदल सकता है (2 कुरिन्थियों 4:6)।

दाऊद ने परमेश्वर से अपने हृदय को जूफा से साफ करने के लिए कहा (लैव्यव्यवस्था 14:2-8; भजन 51:7)। जूफा एक पौधा है जिसे इस्राएल के आध्यात्मिक अगुए परमेश्वर की उपासना में विशेष समय पर इस्तेमाल करते थे। राजा दाऊद को लगता है कि उसका अपराध उसे परमेश्वर से उसी तरह अलग कर देता है जैसे एक कोढ़ी, या बीमार व्यक्ति, अपने समुदाय से अलग हो जाता है और उसे त्वचा रोग होने पर अकेले रहना पड़ता है (भजन 51:11)। दाऊद का मानना है कि जानवरों की बलि उसे नया या संपूर्ण नहीं बनाएगी। वह जानता है कि कोई भी उपहार जो वह परमेश्वर के पास ला सकता है वह उसके भयानक पापों के लिए कोई कीमत अदा नहीं करेगा (भजन 51:16; निर्गमन 21:14; लैव्यव्यवस्था 20:10)।

परमेश्वर की दया उसे दाऊद के दु:खी हृदय की भेंट को स्वीकार करने की अनुमति देती है। इसीलिए दाऊद कहता है, "टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है" (भजन 51:17)। जब दाऊद परमेश्वर से अपने दिल को जूफा से साफ करने के लिए कहता है, तो दाऊद दिखाता है कि वह परमेश्वर के पास वापस आना चाहता है।

यदि परमेश्वर हत्या, धोखाधड़ी और झूठ को माफ कर सकता है, तो हम सभी को क्या आशा है?

मंगलवार **फरवरी 13**

क्या होता यदि प्रभु हमें सभी पापों का दण्ड देता? (भजन 130:3)

भजन 130 पढ़ें। यह भजन हमें पाप के बारे में क्या बताती है और यह कितना भयानक है? पापियों को क्या आशा है?

भजनकार के पाप और उसके लोगों के पाप भजनकार की पीड़ा का कारण बनते हैं (भजन 130:3, 8)। लोगों के पाप इतने बुरे हैं कि उन्हें हमेशा के लिए परमेश्वर से अलग कर सकते हैं (भजन 130:3)। स्वर्ग में, परमेश्वर हमारे पापों का लेखा-जोखा रखता है। जब परमेश्वर हमारा न्याय करेगा तो वह इन अभिलेख (रिकॉर्ड) पुस्तकों का उपयोग करेगा (दानिय्येल 7:10; प्रकाशितवाक्य 20:12)। पापियों के नाम जीवन की पुस्तक से हटा दिए जाएँगे यदि वे अपने पापों को स्वीकार करने से इनकार करते हैं (निर्गमन 32:32; भजन 69:28; प्रकाशितवाक्य 13:8)।

भजनकार परमेश्वर से क्षमा माँगता है। परमेश्वर की क्षमा ही एकमात्र ऐसी चीज है जो स्वर्ग में रिकॉर्ड पुस्तकों से पाप को मिटा सकती है (भजन 51:1,9; यिर्मयाह 31:34; मीका 7:19)। भजनकार जानता है कि

"परमेश्वर एक प्रेम करने वाला ईश्वर है, न कि कोई क्रोध करने वाला। परमेश्वर केवल तभी क्रोधित होता है जब लोग उसके प्रेम के उपहार के प्रति आभारी नहीं होते हैं। . . . परमेश्वर हमें हानि पहुँचाने के लिए अपना क्रोध हम पर नहीं बरसाता है। परमेश्वर का क्रोध हमें चंगा करने के लिए है। परमेश्वर हमें नष्ट नहीं करना चाहता। वह अपने लोगों को बचाना चाहता है (होशे 6: 1, 2 पढ़ें)। परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करना पसंद करता है, न कि उनके लिए हमें दंडित करना! परमेश्वर का क्षमाशील प्रेम हमारे हृदयों को भी प्रेम से भर देता है। तब हम उसकी आराधना और सम्मान करना चाहते हैं (भजन 130: 4; रोमियों 2: 4)। हमें परमेश्वर की उपासना इसलिए करनी चाहिए क्योंकि हम उसका सम्मान करते हैं और उससे प्यार करते हैं, न कि इसलिए कि हम उसकी सजाओं से डरते हैं।

परमेश्वर के बच्चों को धैर्य रखना चाहिए और प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए (भजन 27: 14; भजन 37: 34)। क्या हम प्रभु द्वारा हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने की प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहते हैं और कुछ नहीं करते हैं? बिल्कुल नहीं! जब हम प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, तो हम विश्वास के साथ प्रभु के वादों को पकड़ लेते हैं और मजबूती से पकड़ लेते हैं। प्रभु में भजनकार की आशा बाइबिल से आती है (भजन 130: 5)। इसलिए, प्रभु पर हमारी प्रतीक्षा कभी भी समय की बर्बादी नहीं है। प्रभु की प्रतीक्षा करना वह समय नहीं है जब हम कुछ नहीं करते हैं। परमेश्वर की ओर से सहायता तब मिलेगी जब हमें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होगी।

क्या आपने देखा कि भजनकार कैसे परमेश्वर से अपने विश्वास के समुदाय में सभी की मदद करने के लिए कहता है (भजन 130: 7, 8)? भजनकार जानता है कि समुदाय में हर कोई जुड़ा हुआ है। इसलिए, वह अपने और पूरे समुदाय के लिए प्रार्थना करता है। मसीही होने के नाते, हम भी एक विश्वासी समुदाय का हिस्सा हैं। इसलिए, हमें एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करना याद रखना चाहिए।

बुधवार **फरवरी 14**

परमेश्वर की महिमा हो (भजन 113 और भजन 123)

भजन 113 और भजन 123 पढ़ें। ये भजन किस लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं?

भजन 113 और भजन 123 दोनों ही परमेश्वर की दया और उसकी राजकीय शक्ति या महिमा के लिए स्तुति करते हैं। केवल परमेश्वर ही स्वर्ग में सिंहासन पर बैठ सकता है। अत:, परमेश्वर का सिंहासन हमें उसकी

महिमा दिखाता है और वह शक्तिशाली भी है। परमेश्वर पृथ्वी पर या आकाश में किसी भी अगुए से अधिक शक्तिशाली है। परमेश्वर उन सब से ऊपर है (भजन 113: 4, 5; भजन 123: 1)। इसीलिए भजनकार कहता है, "हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है?" (भजन 113: 5)। यह भजन भजनकार के विश्वास को दर्शाता है। भजनकार का मानना है कि पृथ्वी पर या स्वर्ग में कोई भी इस्राएल के परमेश्वर से अधिक शक्तिशाली नहीं है।

यहोवा का सिंहासन पृथ्वी से ऊँचा है। भजनकार कहता है, प्रभु "हमसे इतना ऊपर है कि वह आकाश और पृथ्वी को देखने के लिए नीचे देखता है" (भजन 113: 6)। लेकिन प्रभु अपने बच्चों की देखभाल के लिए झुकने को तैयार है। परमेश्वर यहाँ पृथ्वी पर जो कुछ भी होता है उसे देखता है। क्योंकि प्रभु दया से परिपूर्ण है, वह गरीबों और जरूरतमंदों को उनकी परेशानियों से बचाने के लिए तैयार है। प्रभु स्वयं को अपने सेवकों से नहीं छिपाता, भले ही वे बहुत दूर हों।

हम हमारे लिए परमेश्वर की परवाह को पूरी तरह से नहीं समझ सकते। परमेश्वर गरीबों और जरूरतमंदों का ख्याल रखता है। वह उनका जीवन बदल देता है। परमेश्वर उनकी मदद करने के लिए शक्तिशाली चमत्कार करता है। परमेश्वर हमें दिखाता है कि वह बहुत शक्तिशाली है जब वह दुखी और क्लेशित लोगों की मदद करता है। लोगों को लगता है कि वे परमेश्वर के पास आ सकते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वही एक है जिसने उन्हें बनाया है और वही एक है जो उन्हें जीवित रखता है। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के सेवक और उसकी प्रेमी संतान हैं।

हम परमेश्वर की उपासना करते हैं क्योंकि वह महान है। इससे भी अधिक, हम परमेश्वर की आराधना करते हैं क्योंकि वह प्रेममय और पवित्र है। हम किसी भी समय और कहीं भी परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं (भजन 113: 2, 3)। हम यीशु में परमेश्वर की महिमा और दया देखते हैं। यीशु हमें बचाने के लिए स्वर्ग में अपना सिंहासन छोड़कर इस धरती पर आने को तैयार था। पापियों को परमेश्वर के पास वापस लाने के लिए यीशु क्रूस पर मरा (फिलिप्पियों 2: 6-8)। क्रूस हमें सबसे अच्छा कारण दिखाता है कि हमें परमेश्वर की उपासना और प्रशंसा क्यों करनी चाहिए जो वह हमारे लिए करता है।

क्रूस और उस सब के बारे में सोचें जो यीशु ने आपके लिए किया था। यीशु ने आपको किससे बचाया है? आपको हमेशा इन चीजों के बारे में सोचना क्यों याद रखना चाहिए?

परमेश्वर की सभी आशीषों को याद करें (भजन 103)।

भजन 103 पढ़ें। यह भजन हमें परमेश्वर की बहुतायत की आशीषों के बारे में क्या सिखाती है?

भजन 103 हमें प्रभु की अनेक आशीषों के बारे में बताता है। आशीर्वाद में प्रभु द्वारा हमारे लिए किया गया हर अच्छा कार्य शामिल है (भजन संहिता 103: 2)। प्रभु "हमें बहुत सी अच्छी वस्तुएँ देता है" (भजन 103: 3-6)। प्रभु हमें ये आशीष देता है क्योंकि वह प्रेम का परमेश्वर है। प्रभु हमें ये आशीष भी देता है क्योंकि वह अपने लोगों के साथ किये गये अपने वादे को याद रखता है और उसे निभाता है (भजन संहिता 103: 7-18)। प्रभु को याद है कि मनुष्य कमजोर है और केवल थोड़े समय के लिए ही जीवित रहता है। इसलिए, प्रभु को अपने लोगों पर दया आती है (भजन 103: 13-17)।

बाइबल में याद रखने का क्या अर्थ है? याद रखना अतीत में हुई किसी चीज के बारे में सोचने से कहीं अधिक है। याद रखने का मतलब है कि हम अब कुछ करने के लिए कार्रवाई करते हैं। जब परमेश्वर को अपना वादा याद आता है, तो वह कार्य करता है। वह अपने लोगों की मदद करने के लिए आता है। वह अपनी दया के कारण उन्हें जीवित रखता है (भजन 103: 3-13)। भजन संहिता 103: 11-16 में, भजनकार हमें यह दिखाने के लिए शक्तिशाली शब्द चित्रों का उपयोग करता है कि परमेश्वर की दया की तुलना केवल आकाश से की जा सकती है जहाँ सभी ग्रह और तारे हैं।

परमेश्वर के लोगों को उसकी दया के लिए कैसे धन्यवाद देना चाहिए? सबसे पहले, परमेश्वर के लोगों को प्रभु को धन्य कहना चाहिए (भजन 103: 1, 2)। जब हम किसी को आशीर्वाद देते हैं तो हमारा आशीर्वाद एक उपहार के समान होता है। हमारा उपहार आध्यात्मिक हो सकता है। या हमारा उपहार कुछ ऐसा हो सकता है जिसकी किसी को आवश्यकता हो (उत्पत्ति 49: 25; भजन 5: 12)। हमारे पास जो कुछ भी है वह परमेश्वर से आया है। तो, हम परमेश्वर को कैसे आशीर्वाद दे सकते हैं जब वह पहले से ही हमारे पास मौजूद हर चीज का मालिक है? बाइबल हमें दिखाती है कि हम परमेश्वर की स्तुति या धन्यवाद उसी तरह कर सकते हैं जैसे इस्राएलियों ने राजा सुलैमान को उनके लिए किए गए हर काम के लिए धन्यवाद दिया था (1 राजा 8: 66; अय्यूब 29: 13 भी पढ़ें)। जब, परमेश्वर अपने बच्चों को

अच्छे उपहार देता है, तब वह उन्हें आशीर्वाद देता है। तब उसके लोग परमेश्वर को उसके प्रेम की स्तुति करके उसे धन्यवाद देते हैं।

दूसरा, परमेश्वर के लोगों को उसके वादे और अतीत में उसके आशीर्वाद को याद रखना चाहिए (भजन संहिता 103: 2, 18-22)। जब हम परमेश्वर के आशीर्वाद को याद रखेंगे, तो हम परमेश्वर से और अधिक प्रेम करेंगे और उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।

एलेन जी ह्वाइट ने लिखा, "हमें हर दिन यीशु के जीवन के बारे में सोचने में एक घंटा बिताना चाहिए। . . . जब हम हमारे लिए यीशु की मृत्यु के बारे में सोचते हैं, तो हम उस पर अधिक भरोसा करेंगे। हमारा प्यार मजबूत हो जाएगा। तब हम उसकी आत्मा से भर जायेंगे।" द डिजायर ऑफ एजेस, पृष्ठ 83 से संकलित।

शुक्रवार **फरवरी 16**

अतिरिक्त अध्ययनः E W White] "The Sinners' need of Christ]" pages 17-22] in Steps to Christ.

"हमने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। हम परमेश्वर की आशीष के योग्य नहीं हैं। परन्तु स्वयं परमेश्वर ने हमें यह कहना सिखाया है: 'अपने नाम के निमित हमें न ठुकरा; अपने तेजोमय सिंहासन का अपमान न कर; जो वाचा तू ने हमारे साथ बाँधी, उसे स्मरण कर और उसे न तोड़' यिर्मयाह 14:21। जब हम परमेश्वर के पास आते हैं, तो हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए। हम जानते हैं कि हम उसके अनुग्रह पाने के योग्य नहीं हैं। परमेश्वर मदद के लिए हमारी पुकार सुनेगा। उसने वादा किया कि वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। जब वह हमसे किया गया अपना वादा निभाता है, तो वह अपने नाम और अपने सिंहासन का सम्मान करता है।" - एलेन जी० ह्वाइट, क्राइस्ट्स ऑब्जेक्ट लेसन्स, पृष्ठ 148।

भजन 103 में, भजनकार जानता है कि परमेश्वर ने उस पर दया की (भजन 103: 2)। परमेश्वर की दया का उपहार भजनकार को यह कहने के लिए प्रेरित करता है, "प्रभु उन सभी के लिए वही करता है जो सही और उचित है जिनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है" (भजन 103:6)। भजनकार चाहता है कि हर कोई यह जाने कि परमेश्वर दया और प्रेम का ईश्वर है। जब लोग बाइबल की इस सच्चाई को समझेंगे, तो वे अपना

हृदय परमेश्वर को समर्पित कर देंगे। वे उसकी उद्धार करने वाली दया को स्वीकार करेंगे और उसकी स्तुति करेंगे (भजन 9:11, 12; भजन 22: 22-27; भजन 66: 16)।

चर्चागत प्रश्न:

1. **परमेश्वर की दया अनन्त है। बाइबल का यह सत्य आपको परमेश्वर के प्रेम और उसकी उद्धार करने वाली दया को बेहतर ढंग से समझने में कैसे मदद करता है? क्या इस शिक्षा का अर्थ यह है कि हम पाप करना जारी रख सकते हैं क्योंकि परमेश्वर की दया सदैव बनी रहेगी? स्पष्ट करें।**
2. **जो परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है वही परमेश्वर हमारे पापों का न्याय भी करेगा। हम इन दो भिन्न विचारों को कैसे समझाएँ?**
3. **पढ़ें कि नया नियम परमेश्वर की दया के बारे में क्या कहता है: इफिसियों 2: 4, 5; 1तीमुथियुस 1: 16; तीतुस 3: 5; इब्रानियो 4: 16. परमेश्वर की दया के बारे में ये पद भजन संहिता की पुस्तक में परमेश्वरकी दया के बारे में जो कुछ हम पढ़ते हैं, उससे कैसे मेल खाते हैं ?**

पाठ 8

फरवरी 17-23

पवित्र कैसे बनें
(How to be Holy)

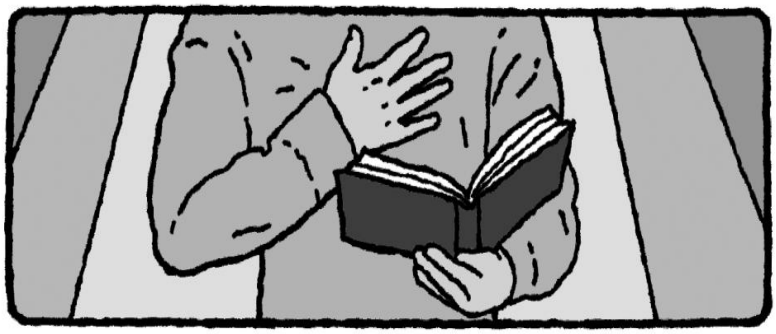

सब्त अपराह्न **फरवरी 17**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 119: 1-16; भजन 90; भजन 81: 7, 8; भजन 141; भजन 1: 1-3।

याद वचन: "हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएँ" (भजन 90: 12)।

जैसा कि हमने पिछले सप्ताह देखा, परमेश्वर अपनी दया के कारण हमें क्षमा कर सकता है। परमेश्वर हमें नए दिल दे सकता है और अपनी दया के कारण हमें पवित्र भी बना सकता है।

बाइबल हमें पवित्र जीवन जीना सिखाती है (भजन 119: 9)। इस शिक्षा में परमेश्वर के नियम का पालन करना शामिल है। जब हम परमेश्वर के नियम का पालन करते हैं, तो हम उसके साथ घनिष्ठ संबंध में रहेंगे। तब परमेश्वर हमारे जीवन को आशीषों से भर देगा (भजन 119: 1, 2; भजन 128)। यह वादा अच्छी खबर है।

क्या हमें आशीष देने के परमेश्वर के वादे का मतलब यह है कि अब से मसीहियों के रूप में हमारा जीवन आसान हो जाएगा? बिल्कुल नहीं। पाप शक्तिशाली है (भजन 141: 2-4)। यदि हम सावधान नहीं हैं, तो पाप हमें परमेश्वर से अलग कर सकता है। परमेश्वर हमें परीक्षाएँ देता है। वह शैतान को हमें प्रलोभित करने या हमसे पाप करवाने का प्रयास करने की भी अनुमति देता है। क्यों? परमेश्वर हमें दिखाना चाहता है कि हमारे हृदय में क्या है। यदि परमेश्वर की संतान उसकी आज्ञा का

* सब्त, फरवरी 24 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

पालन करेंगे, तो परमेश्वर उनका विश्वास मजबूत करेगा। परमेश्वर पर उनका भरोसा बढ़ेगा। परीक्षाएँ और परेशानियाँ हमारे पास आएँगी। परमेश्वर इन चीजों को घटित होने देता है ताकि हम सीख सकें कि पवित्र कैसे बनें। हमें प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर से यह जानने में मदद करने के लिए कहना चाहिए कि हमारा जीवन कितना छोटा है। तब हम बुद्धि में बढ़ेंगे (भजन संहिता 90: 12)। जब हम यह प्रार्थना करते हैं, तो हम परमेश्वर को दिखाते हैं कि हम हमेशा उसमें आशा और विश्वास के साथ रहना चाहते हैं।

रविवार **फरवरी 18**

परमेश्वर की शिक्षाओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन (भजन 119: 1-16)।

हम परमेश्वर के नियम का पालन कैसे करते हैं? इसे पालन करने से हमें क्या आशीर्वाद मिलता है? उत्तर के लिए पढ़ें, भजन 119: 1-16, भजन 161-168।

विश्वास का जीवन क्या है? विश्वास का जीवन हमारे शेष जीवन के लिए परमेश्वर के साथ यात्रा पर जाने के समान है। इस यात्रा में, हम परमेश्वर के नियम का पालन करेंगे (भजन 119: 1)। उसका प्रेम उस प्रकाश के समान है जो उसके साथ हमारी यात्रा के दौरान हम पर चमकता है (भजन 89: 15)। हम पूरे मन से परमेश्वर की सेवा और आज्ञापालन करने का भी वादा करते हैं (भजन 119: 1, 2, 10)।

जब हम परमेश्वर की शिक्षाओं का पालन करेंगे, तो हम पवित्र जीवन जिएँगे (भजन 119: 1)। हमारा जीवन परमेश्वर को एक संपूर्ण भेंट के समान होगा (निर्गमन 12: 5)। हम "जीवित" बलिदान के समान होंगे (रोमियों 12: 1)। हम पाप से घृणा करेंगे। पाप हृदय को गंदा कर देता है। परमेश्वर का प्रेम हमें स्वच्छ बनाता है। जब हम अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप देते हैं, तो हम वह काम करेंगे जिससे परमेश्वर खुश होता है (पढ़ें, भजन 101: 2, 6; भजन 18: 32)।

परमेश्वर की आज्ञाएँ नियमों के समूह से कहीं अधिक हैं। जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं, तो हम समझेंगे कि क्या सही है और क्या गलत है, क्या अच्छा है और क्या बुरा है (भजन 111: 10; 1 इतिहास 22: 12)। परमेश्वर के नियम के प्रति हमारी आज्ञाकारिता हमारे व्यवहार से अधिक बदलती है। परमेश्वर का नियम हमारे दिल और दिमाग को भी बदल देगा।

परमेश्वर की आज्ञाएँ पृथ्वी पर सभी के लिए उसकी योजना दिखाती हैं। परमेश्वर का नियम हमें दिखाता है कि कैसे बुद्धिमान बनें और कैसे स्वतंत्रता और शांति से रहें (भजन 119: 7-11, 133)। भजन 119 में, भजनकार परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करता है, क्योंकि व्यवस्था उसे सिखाती है कि परमेश्वर अपने वादे निभाएगा (भजन 119: 77, 174)।

"तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शांति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती" (भजन 119: 165)। बाइबल में, "गिरना" परमेश्वर को विफल करने या पाप करने के लिए एक शब्द चित्र है। परमेश्वर का वचन, बाइबल, एक दीपक के समान है (भजन 119: 105) जो प्रकाश से चमकता है और हमें स्वर्ग का मार्ग दिखाता है। बाइबल हमें रास्ते में फिसलने और पाप में गिरने से बचाती है (भजन 119: 110)।

यीशु ने अपने जीवन में कैसे दिखाया कि परमेश्वर का वचन बहुत शक्तिशाली है (मत्ती 4: 1-11)? आपका उत्तर आपको क्या बताना चाहिए कि हमें परमेश्वर के नियम का पालन क्यों करना चाहिए?

सोमवार **फरवरी 19**

हमें समझ दे कि हमारा जीवन कितना छोटा है (भजन 90)

परमेश्वर की तुलना में हम कितने समय तक जीवित रहते हैं? पढ़ें, भजन 90; भजन 102: 11; भजन 103: 14-16।

मानव जीवन परमेश्वर की तुलना में बहुत छोटा है, जो सदैव जीवित रहता है। परमेश्वर की दृष्टि में, 1,000 वर्ष रात के तीन या चार घंटों के समान हैं (भजन संहिता 90: 4)। परमेश्वर की तुलना में, हमारा जीवन बहुत लंबे समय तक नहीं चलता (भजन 90: 10)। सबसे मजबूत मनुष्य सबसे कमजोर पौधों के समान है (भजन 90: 5, 6; भजन 103: 15, 16)। हमारा छोटा जीवन कड़ी मेहनत और दु:ख से भरा है (भजन 90: 10)। बहुत से लोग दु:खी हो जाते हैं जब उन्हें याद आता है कि जीवन बहुत छोटा है। वे परेशान हो जाते हैं कि जब वे मरेंगे तो उनके बिना भी जीवन चलेगा।

भजन 90 हमें दिखाता है कि परमेश्वर हमारे बहुत ही छोटे जीवन काल के दौरान हमारी परवाह करता है। प्रभु अपने लोगों के लिए आश्रय के समान है (भजन संहिता 90: 1, 2)। हमारे आश्रय के रूप में, परमेश्वर कठिन समय के दौर में अपने लोगों के लिए एक सुरक्षित स्थान है।

भजन 90 हमें यह भी सिखाता है कि परमेश्वर पाप से घृणा करता है। भजनकार कहता है: "तेरे क्रोध की शक्ति को और भय के योग्य तेरे रोष को

कौन समझता है?" (भजन 90: 11)। किसी ने भी पाप के विरुद्ध परमेश्वर के पूरे क्रोध को महसूस नहीं किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर अपने क्रोध को रोकता है और हम पर अपनी दया दिखाता है। इसलिए, हमें आशा है। परमेश्वर हमें यह कहने के कई मौके देता है कि हमें अपने पाप के लिए खेद है। हम उसके पास आ सकते हैं और पवित्र होने के लिए ज्ञान और मदद माँग सकते हैं।

बाइबल में बुद्धि का अर्थ हमारे ज्ञान रखने या चतुर होने से कहीं अधिक है। बुद्धि परमेश्वर के प्रति सम्मान है। हमें किस प्रकार की बुद्धि की आवश्यकता है? हमें यह जानने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है कि हमारा जीवन बहुत छोटा है। हम जितने वर्ष जीवित रहेंगे उसकी संख्या सीमित है। जब हम बाइबल की इस सच्चाई को समझ लेंगे, तो हम बुद्धिमान हो जाएँगे। यह ज्ञान हमें विश्वास और आज्ञाकारिता के बारे में सिखाएगा। यह बुद्धि हमें तभी मिल सकती है जब हम अपने पापों को स्वीकार कर लें और उन्हें पुनः करना बंद कर दें (भजन संहिता 90: 8, 12)। तब हमें परमेश्वर की क्षमा, प्रेम और दया के उपहारों को स्वीकार करना चाहिए (भजन 90: 13, 14)। हमारी समस्या यह है कि हम पापी हैं। पाप ने इस धरती को नुकसान पहुचाया है और कई जिंदगियों को बर्बाद कर दिया है। हम जहाँ भी देखते हैं और हर व्यक्ति में पाप के कारण आए भयानक बदलाव को देखते हैं।

यीशु को धन्यवाद, परमेश्वर ने हमारे लिए पाप की समस्या से बचने का एक रास्ता बनाया (यूहन्ना 1: 29; यूहन्ना 3: 14-21)। यीशु के बिना, हमें कोई आशा नहीं है।

हाँ, हमारा जीवन बहुत छोटा है। परन्तु हमें यीशु में क्या आशा है (यूहन्ना 3: 16)? उसके बिना हमारी क्या आशा है?

मंगलवार **फरवरी 20**

प्रभु की परीक्षा (भजन 81: 7, 8)।

पढ़ें, भजन 81: 7, 8; भजन 95: 7-11; और भजन 105: 17-22। ये पद हमें उन परीक्षाओं के बारे में क्या सिखाते हैं जो परमेश्वर हमें देता है? मरीबा वह स्थान है जहाँ इस्राएल ने परमेश्वर की परीक्षा ली थी। इस्राएल ने उनकी जरूरतों का ख्याल रखने के अपने वादे को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया (निर्गमन 17: 1-7; भजन 95: 8, 9)। भजन 81 मरीबा के बारे में कहानी को एक नए तरीके से देखता है। भजन 81 लिखने वाले

भजनकार का कहना है कि परमेश्वर ने इस्राएल को मरीबा में एक परीक्षा दी (भजन 81: 7)। जब इस्राएल ने परमेश्वर की अवज्ञा की और उस पर भरोसा करने से इनकार कर दिया (भजन 81: 11), तो लोग परमेश्वर की परीक्षा में विफल रहे।

भजन 81 हमें मरीबा के बारे में दो महत्त्वपूर्ण सबक सिखाता है। सबसे पहले, परमेश्वर के लोगों को वही गलतियाँ नहीं करनी चाहिए जो उनके पिताओं ने अतीत में की थीं। परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए (भजन 81: 13)। दूसरा, परमेश्वर ने अपने लोगों को उस परीक्षा में विफल होने के बाद बचाया जो उसने उन्हें दी थी (भजन 81: 7)। अतीत में परमेश्वर की उद्धार करने वाली दया हमें आशा देती है कि भविष्य में परमेश्वर हम पर दया दिखाएगा।

भजन 105 हमें दिखाता है कि परमेश्वर कठिन समय को परीक्षा के रूप में उपयोग करता है। परमेश्वर ने यूसुफ को अपने वादे के बारे में उसके दिल से किसी भी संदेह को दूर करने के लिए एक परीक्षा दी। परीक्षण ने यूसुफ के परमेश्वर में विश्वास को मजबूत करने में भी मदद की। यूसुफ ने अपनी अगुवाई के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा (उत्पत्ति 37:5-10; भजन 105: 19)।

हम समझते हैं कि परमेश्वर हमें परीक्षाएँ क्यों देता है। लेकिन परमेश्वर हमें सजा क्यों देता है? जब परमेश्वर अपने लोगों को दंड देता है, तो वह चाहता है कि वे अपनी गलतियों से सीखें। वह चाहता है कि वे मजबूत बनें और उसकी आशीष के लिए तैयार रहें। इसीलिए परमेश्वर ने यूसुफ को इतने कठिन अनुभव के दौर से ले गया (भजन 105: 20-22)। लेकिन हमें अपने परीक्षणों से सीखना चाहिए। यदि हम परमेश्वर की शिक्षाओं को अस्वीकार करते हैं, तो हमारे हृदय कठोर और जिद्दी हो जायेंगे।

"परमेश्वर अपने बच्चों से अपेक्षा करता है कि वे तुरंत और बिना किसी प्रश्न के उसकी व्यवस्था का पालन करें। लेकिन लोग सोये हुए हैं। शैतान का झूठ उन्हें सही काम करने से रोकता है। शैतान उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न करने का बहाना देता है। शैतान झूठ बोलता है और लोगों से वह सब करवाता है जो वे जानते हैं कि गलत है। शैतान उसी झूठ का उपयोग करता है जो उसने अदन बारी में हवा के साथ इस्तेमाल किया था। 'तुम निश्चय न मरोगे' [उत्पत्ति 3: 4,। जब हम परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, तो हम अपने हृदय कठोर कर लेते हैं। हम दूसरे लोगों को भी पाप करने के लिए प्रेरित करते

हैं। पहले तो हमारा पाप उन्हें बहुत बुरा लगता है। लेकिन कुछ समय बाद हमारा पाप उनकी नजरों में उतना बुरा नहीं लगने लगेगा क्योंकि उन्हें पाप की आदत हो जाती है। वे प्रश्न करते हैं कि क्या पाप वास्तव में पाप है। फिर वे वही पाप करना शुरू कर देते हैं।" - एलेन जी० ह्वाइट, टेस्टीमोनीज फॉर द० चर्च, खंड 4, पृष्ठ 146।

बुधवार **फरवरी 21**

पाप जिस प्रकार हमारे हृदयों में कार्य करता है (भजन 141)

भजन 141 में भजनकार किस लिए प्रार्थना करता है?

भजन 141 सुरक्षा के लिए प्रार्थना है। भजनकार परमेश्वर से उसे पाप से बचाने के लिए कहता है। भजनकार को दुष्ट लोगों और उसके विरुद्ध बनाई गई योजनाओं से खतरा है (भजन 141: 9, 10)। भजनकार को अपने मन के पाप से भी खतरा है। भजनकार का कहना है कि उसका हृदय ही उसकी सुरक्षा के लिए वास्तविक खतरा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अच्छे और बुरे के बीच युद्ध दिल में होता है। कभी-कभी भजनकार पाप करना चाहता है और बुरे काम करने वाले लोगों से जुड़ना चाहता है।

क्या भजनकार परमेश्वर की बुद्धि का अनुसरण करेगा? या पाप के जीवन में दुष्ट लोगों के साथ शामिल हो जाएगा (भजन संहिता 141: 4,5)? एकमात्र चीज जो भजनकार को पाप करने से बचा सकती है वह प्रार्थना करना और परमेश्वर पर पूरा भरोसा करना है (भजन 141: 1, 2)। इसलिए, भजनकार मदद के लिए प्रार्थना करता है। भजनकार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह जो कहता है उसे नियंत्रित करने में उसकी मदद करे और पाप को न कहने की शक्ति दे (भजन 141: 3, 4)।

भजन 1: 1 और भजन 141: 4 पढ़ें। ये भजन हमें पाप और बुराई के बारे में क्या सिखाती हैं?

भजन 141: 4 हमें दिखाता है कि पाप कैसे कार्य करता है। सबसे पहले, पाप हृदय में शुरू होता है। पाप हमें बुराई करने के लिए प्रेरित करता है। दूसरा, पाप हमें कार्य करने और बुरा करने के लिए प्रेरित करता है। पहली बार पाप करने के बाद, हम अक्सर बार-बार पाप करते रहते हैं। तीसरा, हम अपने हृदय में बुराई को अच्छी चीज के रूप में स्वीकार करते हैं।

उसी तरह, भजन 1:1 हमें बताता है कि जब हम पाप करते हैं तो क्या होता है। पाप परमेश्वर की संतानों को परमेश्वर का अनुसरण करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने से रोकता है। पाप हमें उन बुरे लोगों से जुड़ने का कारण बनता है जो परमेश्वर का नियम तोड़ते हैं और परमेश्वर का मजाक उड़ाते हैं। परमेश्वर हमें चिताता है कि हम वैसा व्यवहार न करें जैसा ये पापी व्यवहार करते हैं। हमें उन्हें हमारे प्रभु से दूर ले जाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

भजन संहिता की पुस्तक हमें दिखाती है कि पाप से सुरक्षित रहने का एकमात्र तरीका प्रभु पर निर्भर रहना है। प्रभु हमें पाप से मुक्त करेगा। भजन संहिता की पुस्तक हमें जो कहते हैं उसे नियंत्रित करना सिखाती है। हमें अपने शब्दों का चयन सावधानी से करना चाहिए। हमें यह भी सावधान रहना चाहिए कि हम किसका अनुसरण करते हैं। दुष्ट लोग हमें ऐसी सलाह देंगे जो हमें परमेश्वर से दूर ले जायेगी। हमें बुद्धि के लिए परमेश्वर के पास जाना चाहिए, क्योंकि वह अच्छे लोगों और बुरे लोगों दोनों का न्याय करेगा (भजन 1:4-6; भजन 141:8-10)। उस समय तक, परमेश्वर के लोगों को धैर्य रखना चाहिए और उस पर भरोसा रखना चाहिए।

बृहस्पतिवार **फरवरी 22**

एक पवित्र जीवन और उसकी अनेक आशीषें (भजन 1:1-3)

परमेश्वर उन लोगों को कौन-सी आशीषों का वादा करता है जो उसका आदर करते हैं? पढ़ें, भजन 1:1-3; भजन 112:1-9; और भजन 128।

परमेश्वर उन लोगों को अनेक आशीषों का वादा करता है जो उसका सम्मान करते हैं। शांति परमेश्वर द्वारा दिए गए सबसे अद्‌भुत आशीर्वादों में से एक है। भजन 1 एक पवित्र व्यक्ति की तुलना एक पेड़ से करता है। पेड़ पानी की धारा के बगल में उगता है। पेड़ पर फल लगते हैं। पेड़ की पत्तियाँ सूखकर नष्ट नहीं होती हैं (पढ़ें, भजन 1:3; यिर्मयाह 17:7, 8 और यहेजकेल 47:12)। पेड़ का शब्द चित्र हमें दिखाता है कि परमेश्वर ही वह है जो पेड़ को आशीर्वाद देता है। जब हम स्वर्ग में परमेश्वर के मंदिर में उसके साथ विश्वास में रहेंगे, तो हम उसके साथ एक प्रेमपूर्ण रिश्ते का आनंद लेंगे। दुष्ट लोग फल और हरी पत्तियों वाले प्यारे पेड़ के समान नहीं होते। दुष्ट लोग उस भूसे के समान हैं जिसे हवा उड़ा देती है। दुष्ट लोगों को भविष्य की कोई आशा नहीं होती। परमेश्वर के लोगों को अनन्त जीवन की आशा है।
भजन 128:2,3 उन आशीषों के बारे में बात करता है जिनका आनंद हम नई

पृथ्वी पर लेंगे। उस समय हम अपनी अपनी अंगूर की बेलों और अंजीर के वृक्षों के नीचे बैठेंगे। ये पौधे शांति के प्रतीक हैं (मीका 4: 4)। भजन 122 में, भजनकार लोगों से यरूशलेम को शांति का आशीर्वाद देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहता है (भजन 122: 6-8; भजन 128: 5, 6)। यह प्रार्थना आने वाले उद्धारकर्ता में भजनकार की आशा को दर्शाती है जो बुराई को समाप्त करेगा और पृथ्वी पर शांति स्थापित करेगा।

"बाइबल में, परमेश्वर अपने लोगों को एक विशेष उपहार का वादा करता है। यह उपहार 'एक देश' है। इब्रानियों 11: 14-16। यीशु स्वर्ग से आया चरवाहा है। यीशु अपने झुण्ड को पीने के लिए जीवन जल की ओर ले जाता है। जीवन का वृक्ष भी वहाँ पर है। जीवन का वृक्ष हर महीने नए फल उगाता है। जीवन के वृक्ष की पत्तियाँ लोगों को चंगा करने में मदद करती हैं। स्वर्ग में ऐसी धाराएँ हैं जिनमें सदैव साफ पानी बहता रहता है। झरनों के बगल में पेड़ों की छाया पैदल पथों को छाया से शीतल बना देती है। प्रभु ने ये रास्ते अपने लोगों के लिए बनाये। मैदानों से परे खूबसूरत पहाड़ियाँ और परमेश्वर के ऊँचे पर्वत हैं। मैदान शांति का स्थान हैं। वहाँ, परमेश्वर के लोगों को एक घर मिलेगा। वे अब तीर्थयात्री या पथिक नहीं होंगे।" - एलेन जी ह्वाइट, द॰ ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, पृष्ठ 675।

नये जीवन की यह आशा तब घटित होगी जब यीशु पृथ्वी को नया बनायेंगे (मती 26: 29; प्रकाशितवाक्य 21)। तब परमेश्वर हमें वह सब कुछ देगा जिसका उसने वादा किया था।

क्रूस इस बात का प्रमाण क्यों है कि परमेश्वर हमसे पृथ्वी को नया बनाने का अपना वादा निभाएगा?

शुक्रवार **फरवरी 23**

अतिरिक्त अध्ययन: — आज के आधुनिक जीवन में, अधिकत्तर लोग बुद्धिमान बनने से अधिक खुश रहना चाहते हैं। क्या हम परमेश्वर की बुद्धि के बिना इस जीवन में सचमुच खुश रह सकते हैं? भजन कहता है कि हम ऐसा नहीं कर सकते। अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर हमसे ज्ञान और खुशी के बीच चयन करने के लिए नहीं कहता है। परमेश्वर की बुद्धि हमारे जीवन में सच्ची खुशी लाती है।

बाइबिल में, बुद्धि और खुशी विचारों से कहीं अधिक हैं। वे वास्तविक अनुभव हैं जो हमारे परमेश्वर को जानने, उसकी स्तुति करने और उस पर भरोसा करने से आते हैं। भजन 25: 14 कहता है, "यहोवा

अपने अनुयायियों को अपने रहस्य बताता है। वह उन्हें अपने वादे के बारे में सिखाता है"।

"परमेश्वर ने हमें जो आशीर्वाद दिया है, उसके लिए उसे धन्यवाद दें। उन सभी प्रमाणों के बारे में सोचें जो परमेश्वर हमें अपने प्रेम के बारे में देता है। अपने मन में परमेश्वर की अनेक आशीषों की एक तस्वीर बनायें। जितनी बार संभव हो सके इन चित्रों के बारे में सोचें: परमेश्वर के पुत्र यीशु ने स्वर्ग छोड़ दिया। तब यीशु मनुष्य बन गया ताकि वह हमें शैतान के झूठ से बचा सके। यीशु ने हमारे लिए शैतान के विरुद्ध लड़ाई जीती। यीशु ने हमारे लिए स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने का एक रास्ता संभव बनाया। यीशु ने पतित मनुष्यों को पाप से बचाया। यीशु ने हमें फिर से परमेश्वर से जोड़ा। यीशु हमें जीवन में विभिन्न परीक्षाओं से गुजरने की शक्ति देता है। यीशु हमारा परमेश्वर और हमारा उद्धारकर्ता है। वह हमें अपने पवित्र जीवन में कपड़ों की तरह ही ढकता है। फिर यीशु हमें स्वर्ग में उसके सिंहासन पर उसके साथ बैठने के लिए आमंत्रित करता है। परमेश्वर चाहता है कि हम इन सभी चीजों के बारे में अपने मन में चित्र बनाएँ और उनके बारे में ध्यान से सोचें।" – एलेन जी० ह्वाइट, स्टेप्स टू क्राइस्ट, पृष्ठ 118।

चर्चागत प्रश्न:

1. **बाइबल हमें बहुत सी बातें सिखाती है। बाइबल का ज्ञान हमें कैसे खुशी भी दे सकता है? यीशु जीवित शब्द या बाइबिल है। यदि हम परमेश्वर के वचन, बाइबल से सीखना चाहते हैं तो हमें यीशु को अपने हृदयों में रहने के लिए क्यों आमंत्रित करना चाहिए?**
2. **आज क्या होता है जब परमेश्वर के लोग उसकी शिक्षा को अस्वीकार करना जारी रखते हैं जैसा कि इस्राएलियों ने किया था (भजन 81; भजन 95)? परमेश्वर क्यों कहता है कि ये "आधुनिक" इस्राएली "भविष्य में उस आराम का आनंद कभी नहीं लेंगे जिसकी मैंने उनके लिए योजना बनाई है" (भजन 95: 11)?**
3. **कभी-कभी पाप का जीवन आज्ञाकारिता के पवित्र जीवन की तुलना में अधिक रोमांचक और मजेदार लगता है (भजन 141)। ऐसा क्यों है? बहुत से लोग जो परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं वे सफलता का आनंद लेते हैं। हम उनकी "सफलता" की व्याख्या कैसे करें?**

पाठ 9

फरवरी 24 - मार्च 1

वह जो प्रभु के नाम से आता है
(The One Who Comes In the Lord's Name)

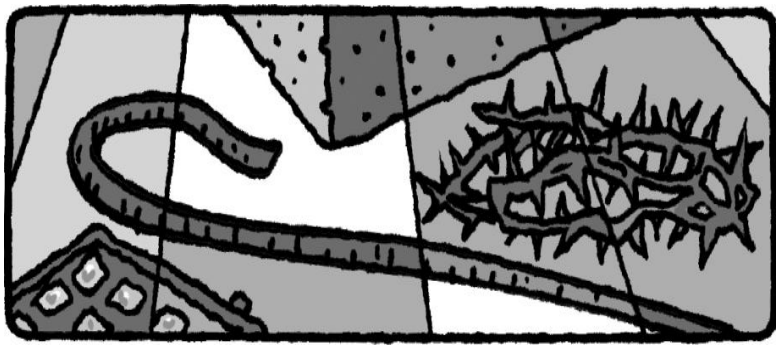

सब्त अपराह्न **फरवरी 24**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 23; भजन 22; भजन 89: 27-32; भजन 2; भजन 110: 4-7; इब्रानियों 7: 20-28।

याद वचन: "राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा है। यह तो यहोवा की ओर से हुआ है, यह हमारी दृष्टि में अद्‌भुत हुआ है" (भजन 118: 22, 23)।

भजन संहिता की पुस्तक हमें यीशु और परमेश्वर के लिए उनके कार्य के बारे में बताती है। भजन संहिता की पुस्तक में हम लगभग हर उस चीज के बारे में पढ़ सकते हैं जो यीशु हमें बचाने के लिए करेगा।

भजन संहिता की पुस्तक में यीशु के बारे में कौन से विषय शामिल हैं? भजन संहिता की पुस्तक हमें सिखाती है कि (1) यीशु ही परमेश्वर है। (2) यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (3) यीशु अच्छा चरवाहा है। (4) यीशु के अनुयायियों में से एक उसे उसके शत्रुओं को अर्पित कर देगा। (5) यीशु आज्ञाकारी होगा (6) यीशु की हड्डियाँ नहीं तोड़ी जाएँगी। (7) यीशु मर जायेगा। (8) यीशु मृतकों में से जी उठेगा। (9) वह स्वर्ग जायेगा। (10) वह हमारा सहायक होगा। (11) वह राजा है। यीशु के इस धरती पर आने से सैकड़ों साल पहले भजनकारों ने भजन की किताब में इन विषयों के बारे में लिखा था।

* सब्त, मार्च 2 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

यीशु ने इमाउस के रास्ते में अपने अनुयायियों से भजन संहिता (लूका 24:44) के बारे में बात की। अब हम समझ सकते हैं कि यीशु ने ऐसा क्यों किया। वह चाहता था कि उसके चेले भजन संहिता की पुस्तक और बाइबिल के बाकी हिस्सों में सबूत खोजें जिससे पता चले कि वह कौन था।

भजन 24, 45, 72, और 101 दिखाते हैं कि यीशु हमारा राजा और न्यायी है। भजन 88 और 102 ऐसी प्रार्थनाएँ हैं जो दिखाती हैं कि यीशु ने हममें से एक के रूप में क्या-क्या सहा है। भजन संहिता की पुस्तक में, हम मानव परिवार को बचाने के लिए परमेश्वर से यीशु की प्रार्थना पढ़ते हैं।

रविवार **फरवरी 25**

यीशु, हमारा चरवाहा (भजन 23)

पढ़ें, भजन 23; भजन 28:9; भजन 80:1; भजन 78:52, 53; भजन 79:13; और भजन 100:3. इन पदों में परमेश्वर और उनके लोगों के बीच संबंध कैसे दिखाया गया है?

भजन संहिता की पुस्तक हमें सिखाती है कि प्रभु एक चरवाहे के समान है। परमेश्वर के लोग उसकी भेड़ें हैं। यह शब्द चित्र हमें यह समझने में मदद करता है कि परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल कैसे करता है। लोग अपनी जरूरत की हर चीज पाने के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं। यह शब्द चित्र हमें परमेश्वर और उसके लोगों के बीच प्रेमपूर्ण संबंध को दर्शाता है। चरवाहे अपनी भेड़-बकरियों के साथ रहते थे और प्रत्येक भेड़ की देखभाल करते थे। परमेश्वर झुंड का मालिक है। भेड़ें उसकी हैं क्योंकि उसने उन्हें जीवन दिया (भजन 95:6, 7; भजन 100:3) और क्योंकि उसने उन्हें आशीष की प्रतिज्ञा दी है (इब्रानियों 13:20)।

भजन 80:1 में, हम उस चरवाहे के बारे में पढ़ते हैं जो यूसुफ को झुंड की तरह ले जाता है। इस शब्द चित्र में, यूसुफ इस्राएल का प्रतीक है। यूसुफ का नेतृत्व करने वाले चरवाहे का यह शब्द चित्र हमें उस अद्‌भुत वादे को याद करने में मदद करता है जो याकूब ने यूसुफ को इस्राएल के बारे में दिया था। कवि इस शब्द चित्र का उपयोग परमेश्वर से अपने लोगों से किए गए इस अद्‌भुत वादे को निभाने के लिए कहने के तरीके के रूप में करता है (उत्पत्ति 49:24)।

बाइबल के समय में, राजा अपने लोगों के चरवाहे थे (2 शमूएल 5: 2)। दुख की बात है कि मानव राजा अक्सर अपने लोगों की उतनी अच्छी तरह देखभाल नहीं करते थे जितनी यीशु ने लोगों की देखभाल की थी। इसीलिए यीशु को अच्छा चरवाहा नाम दिया गया है।

यूहन्ना 10: 11-15 पढ़ें। यीशु, अच्छा चरवाहा, इन पदों में अपने बारे में क्या कहता है?

यीशु कहता है कि उसकी भेड़ें उसकी आवाज पहचानती हैं (यूहन्ना 10: 4, 27)। आज तक, मध्य पूर्व में चरवाहे अपनी भेड़ों को अपने पास बुला सकते हैं। जब भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज सुनती हैं, तो वे अन्य भेड़ों से अलग हो जाती हैं जो उनके झुंड का हिस्सा नहीं हैं। तब भेड़ें अपने चरवाहे के पीछे-पीछे चलती हैं। कभी-कभी, परमेश्वर का झुंड कठिन समय के दौर से गुजरता है। वे जानते हैं कि ये अनुभव इस बात का संकेत हैं कि परमेश्वर उनसे खुश नहीं है। लेकिन अच्छा चरवाहा उन्हें कभी नहीं छोड़ता। वह हमेशा अपनी खोई हुई भेड़ों को बचाने के लिए उनकी तलाश करता है। यह सशक्त चित्र हमें अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है। परमेश्वर अपनी भेड़ों के लिए मरने को तैयार है (यूहन्ना 10: 11, 15)। यीशु, चरवाहा, अपनी भेड़ों को बचाने के लिए मेम्ना बन जाता है (यूहन्ना 1: 29)।

सोमवार **फरवरी 26**

क्लेशित उद्धारकर्ता (भजन 22)

भजन 22 और भजन 118: 22 पढ़ें। जो उन्हें बचाने आया था, लोगों ने उसके साथ क्या किया?

कई भजनकार पीड़ित उद्धारकर्ता और उसके दर्द और अकेलेपन की भावनाओं के बारे में बात करते हैं (भजन 42; भजन 88; भजन 102)। भजन 22 हमें यीशु की मृत्यु के बारे में बताता है। यीशु ने क्रूस पर भजन 22: 1 के शब्दों में प्रार्थना की (मती 27: 46)।

यीशु और उसके पिता एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। वे दिल और दिमाग से एक थे (यूहन्ना 1: 1, 2; यूहन्ना 10: 30)। इसलिए, जब हमारे पापों ने उसे उसके पिता से अलग कर दिया तो यीशु को गहरा कष्ट हुआ। लेकिन पीड़ा उनके बीच के प्यार को नष्ट नहीं कर सकी।

जब पिता ने क्रूस पर यीशु से अपना मुँह मोड़ लिया, तो यीशु ने अपने आप को पिता पर और भी अधिक भरोसा कर लिया।

"यीशु हमारा विकल्प था। यीशु ने हमारे पापों का दण्ड स्वीकार कर लिया। परमेश्वर के नियम को तोड़ने के दण्ड से हमें बचाने के लिए वह हमारे लिए पाप बन गया। यीशु ने अपने हृदय में समस्त मानव परिवार के पाप का भार अनुभव किया। पाप के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध ने यीशु के हृदय को भय और आश्चर्य से भर दिया।" – एलेन जी० ह्वाइट, द डिजायर ऑफ एजेस, पृष्ठ 753।

भजन 22 जानवरों के प्रतीकों का उपयोग करता है: मजबूत बैल, दहाड़ने वाले शेर और कुत्ते। ये जानवर क्रूस पर उसके अंतिम घंटों के दौरान उद्धारकर्ता के प्रति लोगों की नफरत को दर्शाते हैं। उद्धारकर्ता की तुलना एक असहाय कीड़े से की जाती है जो किसी को चोट नहीं पहुँचा सकता। भजन 22 हमें बताता है कि क्रूस पर भीड़ ने कैसे यीशु का मजाक उड़ाया जब उसने अपने पिता को पुकारा (भजन 22: 1, 8; मत्ती 27: 43)। सैनिकों ने यीशु के कपड़े बाँट लिए (भजन 22: 18; मत्ती 27: 35)। लोगों ने सोचा कि यीशु एक कीड़ा जैसा ही था। वे उसे कुचलना या नष्ट करना चाहते थे। वे नहीं जानते थे कि वह मन्दिर के सबसे महत्त्वपूर्ण पत्थर के समान बन जायेगा (भजन 118: 22)। वह पापियों के लिए परमेश्वर के पास आने का एक नया मार्ग बनाएगा।

वही उद्धारकर्ता जिसे लोगों ने अस्वीकार कर दिया था, वह मृतकों में से जागने पर परमेश्वर के लोगों की आशा बन गया (मत्ती 21: 42; प्रेरितों 4: 10-12)। यीशु को तब कष्ट सहना पड़ा जब जिन मनुष्यों को वह बचाने आया था उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। परन्तु परमेश्वर ने अपने पुत्र का आदर किया। परमेश्वर ने यीशु को अपनी कलीसिया का मुखिया (नींव) बनाया (इफिसियों 2: 20-22; 1पतरस 2: 4-8)। जो कोई यीशु को अस्वीकार करता है वह पापियों को बचाने की परमेश्वर की योजना को अस्वीकार करता है। हमें चट्टान पर गिरना चाहिए और बचना चाहिए। या चट्टान हम पर गिरेगी और हमें तोड़ देगी (यशायाह 8: 14; मत्ती 21: 44)। यीशु ने आपके लिये कष्ट उठाया। इससे आपको पाप के बारे में कैसा महसूस होना चाहिए?

यीशु अपने वायदे को हमेशा के लिए याद रखता है (भजन 89: 27 -32)।

दाऊद के साथ कौन-सी प्रतिज्ञा है? पढ़ें, भजन 89: 27-32, 38-46 और भजन 132: 10-12।

परमेश्वर ने दाऊद से एक विशेष वादा किया। परमेश्वर ने दाऊद के भविष्य की संतानों की देखभाल करने और इस्राएल को हमेशा के लिए आशीर्वाद देने का वादा किया (1 शमूएल 7: 5-16; भजन 89: 1-4, 19-37; भजन 132: 12-18)। परमेश्वर ने अपने वादे को हमेशा के लिए याद रखने हेतु सहमति व्यक्त की अगर राजा ने परमेश्वर की आज्ञा पालन किया होता। भजन 89 में, भजनकार दुखी है क्योंकि लोगों ने आशीष को खो दिया है जो परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया था। क्या परमेश्वर ने इस्राएल को हमेशा के लिए खारिज कर (त्याग) दिया है? बिल्कुल नहीं!

हाँ, परमेश्वर का गुस्सा उसके लोगों को दिखाता है कि वह पाप के बारे में कैसा महसूस करता है (भजन 38: 1; भजन 74: 1)। लेकिन परमेश्वर का गुस्सा हमेशा के लिए जारी नहीं रहता है। जब वे अपने अपराध को स्वीकार करते हैं तो उनका चिरस्थायी प्रेम लोगों के पापों को क्षमा करता है। जबकि परमेश्वर नाखुश है, वह अपने लोगों को दिखाता है कि वह उनसे परेशान है। लोग सीखते हैं कि पाप दुख की ओर ले जाता है। वे समझते हैं कि पाप भयानक है (भजन 89: 38-46)। वे जानते हैं कि परमेश्वर का गुस्सा हमेशा के लिए जारी नहीं रहेगा (भजन 89: 46)। जब लोग याद करते हैं कि परमेश्वर हमेशा अपना वादा याद रखता है, तो वे उसकी दया को याद करते हैं। तब उनके दिल आशा से भर जाते हैं कि परमेश्वर उन्हें याद करता है (भजन 89: 47, 50)।

संक्षेप में, हम परमेश्वर को भूल सकते हैं। लेकिन परमेश्वर हमें कभी भी नहीं भूलेगा। हम यीशु के कारण बचाये जाने के उसके वादों पर भरोसा कर सकते हैं।

यीशु दाऊद और उद्धारकर्ता का पुत्र है (मत्ती 1: 1; इब्रानियों 1: 8)। यीशु "नियमों पर नियम सब कुछ जो बनाया गया है" (कुलु॰ 1: 15)। कुलु॰ 1: 15 हमें भजन 89: 27 को याद रखने में मदद करता है, जो कहता है: "मैं उसे अपना पहला बेटा [एक परिवार में पैदा हुआ पहला

बेटा] बनाऊँगा। वह पृथ्वी पर सबसे बड़ा [सबसे शक्तिशाली] राजा होगा"।

भजन 89:27 में "पहिलौठा बेटा" कौन है? क्या भजन राजा दाऊद के बारे में बात कर रहा है? नहीं, क्योंकि दाऊद 8 वाँ बच्चा था जो उसके माता-पिता के पास था, न कि प्रथम (1 शमूएल 16:10, 11)। "पहिलौठा पुत्र" शब्द यीशु के बारे में बात कर रहा है। शब्द हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को विशेष सम्मान दिया (कुलु 1:16, 20-22)। जब यीशु मृतकों में से जाग उठा, तो परमेश्वर ने यीशु को पूरी पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली राजा बनाया (प्रेरितों 2:30, 31)।

कुलु॰ 1:16, 20-22 पढ़ें। ये पद हमें यीशु के बारे में क्या सिखाते हैं? वह कौन था? उसने हमारे लिए क्या किया है?

बुधवार **फरवरी 28**

सनातन राजा (भजन 2)।

पढ़ें, भजन 2; भजन 110:1-3, 5, 6; और भजन 89:4, 13-17। ये पद हमें हमारे राजा यीशु के बारे में क्या सिखाते हैं?

_____

_____

भजन संहिता की पुस्तक हमें उद्धारकर्ता के पिता के रूप में परमेश्वर की एक तस्वीर दिखाती है। यह चित्र हमें इस्राएल में उस विशेष उत्सव को याद करने में मदद करता है जब एक व्यक्ति को राजा बनाया गया था। परमेश्वर ने राजा को अपने पुत्र के रूप में अपनाया और राजा से एक वादा किया (भजन 2:7; भजन 89:26-28)। भजन 2:7 हमें बताता है कि उद्धारकर्ता मृतकों में से जी उठेगा और अपने लोगों के साथ एक नया और चिरस्थायी वादा करेगा (प्रेरितों 13:33-39; इब्रानियों 1:5)। भजन 2:7 हमें यह भी बताता है कि यीशु अपने लोगों का महायाजक या आध्यात्मिक नेता होगा (इब्रानियों 5:5)। उद्धारकर्ता परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठता है। सम्मान का यह स्थान दर्शाता है कि यीशु सर्वशक्तिमान है और उसका सारी पृथ्वी पर नियंत्रण है (भजन 110:1; प्रेरितों 7:55, 56)।

जब परमेश्वर और शैतान के बीच विश्वव्यापी युद्ध समाप्त हो जाएगा, तो परमेश्वर यीशु के सभी शत्रुओं को अपने नियंत्रण में कर लेगा (भजन

110: 2; भजन 2: 9)। ऐसा होने से पहले, दुष्ट राजाओं को अपने पापों को स्वीकार करने और उद्धारकर्ता की उपासना करने का मौका दिया जाता है (भजन 2: 10-12)।

दानिय्येल 7 में, हम यीशु द्वारा अपने शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई जीतने के बाद भविष्य की एक तस्वीर देखते हैं। उस समय, यीशु का राज्य पृथ्वी पर स्थापित हो गया है। दानिय्येल हमें बताता है कि यीशु का राज्य एक शाश्वत राज्य है (दानिय्येल 7: 27)। क्रूस के कारण, हम इस प्रतिज्ञा पर भरोसा कर सकते हैं।

परमेश्वर उन सभी को आशीर्वाद देने का वादा करता है जो राजा यीशु पर भरोसा करते हैं (भजन 2: 12)। परमेश्वर के लोग खुशी से भरे हुए हैं क्योंकि उनका उद्धारकर्ता उनका राजा भी है। वह एक पवित्र राजा है, और उसका राज्य भी पवित्र है (भजन 89: 15-17)।

हम जानते हैं कि अंत में अच्छाई की जीत होगी। बुराई हारेगी। परमेश्वर निष्पक्ष होगा। वह दु:ख और पीड़ा को हमेशा के लिए खत्म कर देगा। बाइबल का यह सत्य अब हमें कैसा महसूस कराना चाहिए जब बुराई अक्सर ऐसी दिखती है मानो वह अच्छाई के विरुद्ध लड़ाई जीत रही हो?

बृहस्पतिवार **फरवरी 29**

यीशु, हमारा आत्मिक अगुआ (भजन 110: 4-7)

यीशु हमारा महायाजक या आत्मिक अगुआ है (भजन 110: 4-7)। महायाजक के रूप में उसका कार्य हमारे लिए इतना विशेष क्यों है? स्वर्ग में महायाजक के रूप में उसका कार्य हमें क्या आशा देता है?

प्रभु अपने लोगों से एक विशेष प्रतिज्ञा करता है (इब्रानियों 6: 18)। यीशु हमेशा के लिए उनका राजा (भजन 110: 1-3) और महायाजक, या आत्मिक नेता रहेगा (भजन 110: 4-7)। यह वादा हमें परमेश्वर की दया दिखाता है। हमारे पाप हमें ईश्वर से अलग करते रहते हैं। लेकिन परमेश्वर ने हमसे एक वादा किया। उसका वादा नहीं बदल सकता। उसकी दया इस बात का प्रमाण है कि वह अपने लोगों से किया गया वादा निभाएगा जब वे उसके सामने अपने पापों को स्वीकार करेंगे (निर्गमन 32: 14; भजन 106: 45)। परमेश्वर की शपथ विशेष है क्योंकि वह वादा करता है कि उद्धारकर्ता एक राजा और एक महायाजक दोनों है (भजन 110: 4)। इस्राएल के राजा को

याजक के रूप में सेवा करने की अनुमति नहीं थी (गिनती 8: 19; 2 इतिहास 26: 16-21)। जब बाइबल कहती है कि राजा या लोग याजकों के लिए भेंट लाते थे, तो याजक वे थे जो परमेश्वर को जानवर चढ़ाते थे। भजन 110 कहता है कि उद्धारकर्ता राजा इस्राएल के बाकी राजाओं और याजकों से अलग है। यीशु मलिकिसिदक के समान ही एक याजक है। मलिकिसिदक सलेम (यरूशलेम का प्रारंभिक नाम) का राजा और परमेश्वर का याजक (उत्पत्ति 14: 18-20) दोनों था। क्या पुराना नियम कहीं और कहता है कि राजा दाऊद या इस्राएल का कोई अन्य राजा मलिकिसिदक के समान राजा और याजक था? हम इसके बारे में केवल भजन 110 में पढ़ते हैं। यह भजन इस्राएल के इतिहास में एक विशेष राजा - याजक के बारे में बात करता है जो केवल एक ही व्यक्ति हो सकता है: यीशु।

इब्रानियों 7: 20-28 पढ़ें। महायाजक के रूप में यीशु का कार्य हमें आशा क्यों देता है और हमारे दिलों को विश्वास से भर देता है?

यीशु राजा और शाश्वत याजक दोनों हैं। इसलिए, वह किसी भी अन्य मानव याजक या राजा से बेहतर है। यीशु स्वर्ग के मंदिर में हमारी सेवा करता है। पाप और मृत्यु उसके कार्य को उस प्रकार समाप्त नहीं कर सकते जिस प्रकार पाप और मृत्यु ने मानव याजकों के कार्य को समाप्त कर दिया। तो, यीशु परमेश्वर के पास जा सकता है और अपने लोगों के लिए हमेशा के लिए सहायता प्राप्त कर सकता है। हमारे प्रेमी महायाजक के रूप में यीशु का कार्य हमें परमेश्वर में आशा देता है (इब्रानी 6: 19, 20)। हम भरोसा कर सकते हैं कि यीशु, हमारे राजा और महायाजक, हमारे दिलों में और इस धरती पर भी बुराई को खत्म कर देगा। भजन 2: 6-9 में दिए गए वादे को यीशु हमेशा निभाएगा: वह पृथ्वी पर हर अगुआ और लोगों के समूह का न्याय करेगा।

शुक्रवार **मार्च 1**

अतिरिक्त विचार: एलेन जी॰ ह्वाइट की किताब द॰ डिजायर ऑफ एजेस में "गॉड विद अस," पृष्ठ 19-26 पढ़ें।

एलेन जी ह्वाइट बताती है कि कैसे यीशु ने स्वयं को मानव परिवार से जोड़ा। "यीशु मानव बन गया। एक इंसान के रूप में, यीशु ने इंसानों के दिलों को छुआ। परमेश्वर के रूप में, यीशु ने हमारे लिए परमेश्वर के सिंहासन तक जाने का रास्ता बनाया। यीशु मनुष्य का पुत्र था। उसने हमें एक उदाहरण दिया कि हमें परमेश्वर की आज्ञा कैसे माननी चाहिए। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, यीशु हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की शक्ति देता है। यीशु ने स्वयं होरेब पर

जलती हुई झाड़ी में से मूसा से बात की। यीशु ने मूसा से कहा: "मैं जो हूँ सो हूँ।" जब तुम इस्राएलियों के पास जाओ, तो उन से कहना, 'उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है' निर्गमन 3: 14। प्रभु का नाम प्रतिज्ञा के समान था। जब उसने मूसा को अपना नाम दिया, तो उसने उसे इस्राएल को बचाने का वादा भी दिया। इसलिए, जब यीशु मानव शरीर में इस धरती पर आया, तो उसने घोषणा की कि वह "मैं जो हूँ सो हूँ" है। यीशु बेथलेहेम का पुत्र है। वह उद्धारकर्ता है जिसका हृदय सभी अभिमान से खाली था। यही यीशु परमेश्वर है जो मानव शरीर में आया। 1 तीमुथियुस 3: 16। हमसे, यीशु कहता है, 'मैं अच्छा चरवाहा हूँ।' 'मैं जीवन की रोटी हूँ।' 'मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।' 'परमेश्वर मुझे पूरे स्वर्ग और पृथ्वी पर नियंत्रण देता है।' यूहन्ना 10: 11; यूहन्ना 6: 51; यूहन्ना 14: 6; मत्ती 28: 18। मैं तेरे दिल की वह आशा हूँ जो तुझसे कहती है कि मैं हर वादा निभाऊँगा। मैं हूँ; डर मत"। द० डिजायर ऑफ एजेस, पृष्ठ 24, 25।

चर्चागत प्रश्न :

1. **परमेश्वर ने अपने लोगों को कैसे दिखाया है कि वह अपना वादा निभाएगा, तब भी जब वे उस पर कोई विश्वास नहीं दिखाते? आज यह विचार हमें क्या आशा देता है जब हम परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं और पाप में गिर जाते हैं?**
2. **यीशु एक विशेष महायाजक या आध्यात्मिक अगुआ है। वह मलिकिसिदक के समान ही एक महायाजक है। बाइबल का यह सत्य हमें यह विश्वास कैसे दिलाता है कि यीशु अपने लोगों को पाप से बचा सकता है?**
3. **मती, मार्क, लूका और यूहन्ना हमें दिखाते हैं कि यीशु ने भजन की पुस्तक में उद्धारकर्ता के बारे में किए गए वादों को कैसे निभाया। यह विचार हमें बाइबल पर भरोसा करने में कैसे मदद करता है?**
4. **यीशु ने कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार [नियंत्रण] मुझे दिया गया है" (मती 28: 18)। ये शब्द हमें क्या आशा देते हैं?**

पाठ 10

मार्च 2 -8

अतीत से सबक
(Lessons from the past)

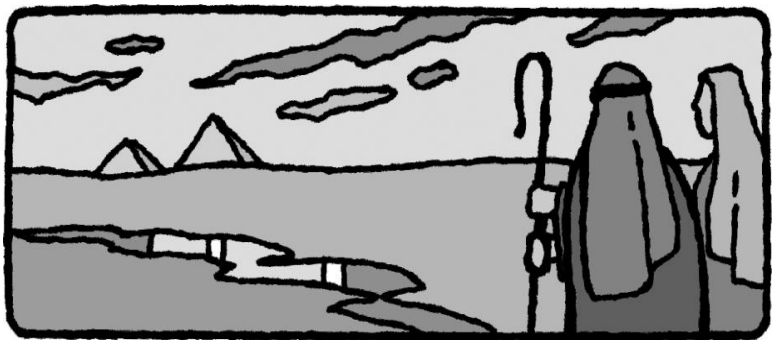

सब्त अपराह्न **मार्च 2**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 78; भजन 105; गलातियों 3: 29; भजन 106; भजन 80; गिनती 6: 22-27; भजन 135.

याद वचन:"जिन बातों को हमने सुना, और जान लिया, और हमारे बाप दादों ने हमसे वर्णन किया है। उन्हें हम उनकी संतान से गुप्त न रखेंगे, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्य कर्मों का वर्णन करेंगे" (भजन 78: 3, 4)।

भजन संहिता की पुस्तक उन भजनों से भरी हुई है जो परमेश्वर और उसके शक्तिशाली कार्यों की प्रशंसा करते हैं। ये भजन इस्राएल के इतिहास के बारे में बात करते हैं। ये भजन हमें उन चीजों के बारे में सिखाते हैं जो परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाने के लिए अतीत में किए थे। इन भजनों को इतिहास में कविताएँ नाम दिया गया है। इतिहास की कुछ कविताएँ परमेश्वर के लोगों को उन गलतियों से सीखने के लिए कहती हैं जो उनके पिताओं ने अतीत में की थीं। इतिहास की कुछ कविताएँ भजन हैं। ये भजन उन अद्‌भुत चीजों के बारे में बात करते हैं जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए उनके विश्वास को मजबूत बनाने के लिए कीं।

---

* सब्त, मार्च 9 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

इतिहास की कविताएँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि हमारा जीवन इस्राएल के इतिहास का हिस्सा है। बाइबिल में इस्राएल का इतिहास भी हमारा इतिहास है। परमेश्वर ने हमें अपने परिवार में अपनाया। यीशु के कारण, परमेश्वर ने हमें इस्राएल के लोगों का हिस्सा बनाया (रोमियों 8: 15; रोमियों 9: 24-26; गलातियों 4: 6, 7)। इस प्रकार, बाइबल में इस्राएली लोगों के बारे में इतिहास हमारे अपने आत्मिक इतिहास के बारे में भी कहानी है। हमें उनके अतीत से भी सीखना चाहिए। परमेश्वर के लोगों के रूप में, अच्छे और बुरे के बीच विश्वव्यापी युद्ध में उनकी योजना में हमारी भी भूमिका है, जैसा कि पुराने नियम के समय में इस्राएलियों ने किया था।

रविवार **मार्च 3**

परमेश्वर हमेशा अपने वायदे निभाता है (भजन 78)।

भजन 78 पढ़ें। इस भजन में, भजनकार आसाप इस्राएल के अतीत में हुए तीन अनुभवों के बारे में बात करता है। वे क्या कर रहे थे? ये अनुभव हमें क्या सबक सिखाते हैं?

आसाप इस्राएल के अतीत की समीक्षा करता है। इतिहास हमें दिखाता है कि परमेश्वर अपने वायदे निभाता है। परन्तु लोग परमेश्वर से किये अपने वादे तोड़ देते हैं। लोगों को अतीत की गलतियों से सीखना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों को ईश्वर पर भरोसा करना और उसके वादों पर विश्वास करना सिखाना चाहिए। आसाप की कविता एक चित्र कहानी के समान है (भजन 78: 2)। यीशु ने अपने चेलों को महत्त्वपूर्ण बाइबल सच्चाई सिखाने के लिए चित्र कहानियों का उपयोग किया (मती 13: 34, 35)। उसी तरह, आसाप चाहता है कि उसका भजन इस्राएलियों को महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सबक सिखाए। भजन निर्गमन के समय के बारे में बात करता है (भजन 78: 9-54)। निर्गमन वह समय था जब परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्रियों से बचाया था। भजन उस समय के बारे में भी बात करता है जब परमेश्वर अपने लोगों को वादा किए गए देश में ले गया (भजन 78: 55-64) और राजा दाऊद के समय की भी बात हम पाते हैं (भजन 78: 65-72)। इस दौर में परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए कई शक्तिशाली कार्य किये। परन्तु लोगों ने परमेश्वर से किया हुआ वादा तोड़ दिया। इस्राएल का इतिहास हमें बार-बार दिखाता है कि लोगों ने

परमेश्वर पर भरोसा करने से इनकार कर दिया। इस्राएल ने झूठे देवताओं पर भरोसा किया और उनकी पूजा की (भजन 78:58)।

आसाप चाहता है कि उसके लोग समझें कि अतीत में उनके पिताओं ने परमेश्वर को क्यों अस्वीकार कर दिया था। उनके पिता परमेश्वर ने उनके लिये जो कुछ किया वह सब भूल गये। उन्हें परमेश्वर पर भरोसा नहीं था। उन्होंने परमेश्वर की परीक्षाएँ लीं (भजन 78:18, 41, 56)। वे उसके विरुद्ध लड़े। वे उसकी व्यवस्था, उसकी प्रतिज्ञा और उसके नियमों को निभाने में असफल रहे (भजन 78:10, 37, 56)। आसाप इतिहास से दिखाता है कि इस्राएल ने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे यहोवा पर भरोसा करने में विफल रहे (भजन 78:7, 8)।

जब हम भजन 78 पढ़ते हैं, तो हम लोगों से परेशान हो सकते हैं। हम खुद से पूछ सकते हैं, वे इतने जिद्दी कैसे हो सकते हैं? वे अतीत की गलतियों से कैसे नहीं सीखते? इससे पहले कि हम इस्राएलियों का न्याय करें, हमें अपने बारे में सोचना चाहिए। हम कितनी बार उन अद्‌भुत कार्यों को भूल जाते हैं जो परमेश्वर ने अतीत में हमारे लिए किए थे ? हम कितनी बार वह काम करना भूल जाते हैं जो वह कहता है? भजन 78 हमें सिखाता है कि हमें खुद पर भरोसा नहीं करना चाहिए। हमें परमेश्वर और उसकी दया पर भरोसा रखना चाहिए। जब इस्राएल ने परमेश्वर की सहायता के बिना, अपनी ताकत से लड़ाई लड़ी, तो वे हार गए (भजन 78:9, 62-64)। हमें पहले परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, अन्यथा हम जो कुछ भी करेंगे उसमें अंत में असफल हो जायेंगे।

आपने अपनी पिछली गलतियों से क्या सबक सीखा है?

सोमवार **मार्च 4**

हमारे इतिहास को याद रखना (भजन 105)।

भजन 105 पढ़ें। भजन 105 इतिहास में किस समय के बारे में बात करता है? ये अनुभव हमें क्या सबक सिखाते हैं?

भजन 105 अपने लोगों के साथ परमेश्वर के वादे के बारे में बात करता है। परमेश्वर ने अब्राहम और उसके भावी बच्चों को वादा किया हुआ देश देने का वादा किया। परमेश्वर ने इसहाक और याकूब से भी

यही प्रतिज्ञा की। तब परमेश्वर ने यूसुफ, मूसा, हारून, और यहोशू से किया हुआ वचन पूरा किया। परमेश्वर ने अपने लोगों को कनान देश दिया। भजन 105 हर समय परमेश्वर के लोगों को आशा देता है। अतीत में परमेश्वर के अद्‌भुत कार्य हमें यह समझने में मदद करते हैं कि हमारे लिए उनका प्यार कभी नहीं बदलता है। इसलिए, हम हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम पर हमेशा के लिए भरोसा कर सकते हैं (भजन 105: 1-5, 7, 8)।

भजन 105 उन सभी अद्‌भुत चीजों को दर्शाता है जो परमेश्वर ने अपने लोगों की मदद के लिए अतीत में किए थे। (जैसा कि हमने कल देखा, भजन 78 ने भी यही किया।) परमेश्वर के अद्‌भुत कार्य हमें उसकी स्तुति करने और उस पर भरोसा करने में मदद करते हैं। भजन 105 भजन 78 से अलग है क्योंकि यह लोगों की पिछली गलतियों के बारे में बात नहीं करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भजन 78 एक अलग कारण से लिखा गया था।

भजन 105 में, हम इस्राएल के इतिहास के बारे में उसके पहले पिताओं: अब्राहम, इसहाक और याकूब और अन्य शुरुआती अगुओं के जीवन के बारे में सीखते हैं। ये लोग कठिन समय में धैर्यवान बने रहे। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी। परमेश्वर ने उनकी आज्ञाकारिता का प्रतिफल दिया। इसलिए, भजन 105 लोगों को इस्राएल के पहले पिताओं के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए आमंत्रित करता है। हमें परमेश्वर पर आशा और विश्वास रखना चाहिए। हमें बचाये जाने के लिए उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

भजन 105 भी एक भजन है (भजन 105: 1-7) जो हमें बाइबल का एक महत्त्वपूर्ण सत्य सिखाता है: यदि हम पूरी तरह से परमेश्वर की स्तुति करना चाहते हैं, तो हमें अपने इतिहास के बारे में जानना चाहिए। जब हम अपना इतिहास जानेंगे तो हमारा विश्वास मजबूत होगा। हमारे अतीत के बारे में ज्ञान हमें परमेश्वर की स्तुति करने के कई कारण देता है।

भजन 105 में, भजनकार ने परमेश्वर के लोगों को अब्राहम और याकूब की संतान का नाम दिया है (भजन 105: 6)। ये नाम हमें दिखाते हैं कि इस्राएल एक लोग बन गया क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम से अपना वादा निभाया (उत्पत्ति 15: 3-6)। भजनकार लोगों को याद दिलाता है कि पूरी पृथ्वी उनके परमेश्वर यहोवा के नियंत्रण में है (भजन 96: 1; भजन 97: 1)। यह

सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी लोगों से उतना ही प्रेम करता है जितना वह अपनी प्रजा इस्राएल से करता है।

भजन 105 हर युग में हर किसी के लिए प्रभु पर भरोसा करने का निमंत्रण है।

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के रूप में हम अब्राहम की संतान कैसे हैं? (उत्तर के लिए गलातियों 3: 29 पढ़ें)। हम इस्राएल के इतिहास से क्या सबक सीखते हैं?

मंगलवार **मार्च 5**

हमारे पापों को मान लेना (भजन 106)।

भजन संहिता 106 पढ़ें। यह भजन इस्राएल के अतीत की किन चीजों के बारे में बात करता है? ये चीजें हमें क्या सबक सिखाती हैं?

भजन संहिता 106 इस्राएल के इतिहास के महत्त्वपूर्ण अनुभवों के बारे में बात करता है। इन पिछले अनुभवों में इस्राएल का मिस्र छोड़ना, मरुभूमि में यात्रा करना और प्रतिज्ञा किए गए देश में रहना शामिल है। भजन संहिता 106 उन भयानक पापों के बारे में बात करता है जो इस्राएलियों ने अतीत में किए थे। परमेश्वर ने अपने लोगों को इन पापों के लिए दंडित किया। उसने उन्हें बेबीलोन ले जाने की अनुमति दी। इसलिए, हमारा मानना है कि भजन संहिता 106 तब लिखा गया था जब इस्राएली बेबीलोन में कैदी थे, या जब वे घर वापस आए थे।

भजन संहिता 106 में, भजनकार परमेश्वर के लोगों को उनके अतीत और उन सबक के बारे में बताता है जो उन्हें अपने इतिहास से सीखना चाहिए था। भजन संहिता 106 कहता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा निभाता है। अपनी प्रतिज्ञा और दया के कारण, परमेश्वर ने अतीत में अपने लोगों को बचाया (भजन 106: 45)। भजनकार को आशा है कि परमेश्वर फिर से अपने लोगों पर कृपा करेगा जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। परमेश्वर के लोग परदेशी भूमि में रह रहे हैं। भजनकार प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपने लोगों को फिर से घर लाएगा (भजन 106: 47)। भजनकार की आशा की प्रार्थना परमेश्वर में उसके विश्वास से आती है। भजनकार अब अपने लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करता है क्योंकि उसने उन्हें बीते समय में बचाया था (भजन 106: 1-3)। भजनकार अपने लोगों के प्रति परमेश्वर

के प्रेम पर भी भरोसा करता है। भजनकार जानता है कि प्रभु सदैव अपनी प्रतिज्ञा निभाता है।

जब लोग अपना इतिहास याद करते हैं, तो वे अपने पापों को स्वीकार करते हैं। वे समझते हैं कि वे अतीत में अपने पिताओं से बेहतर नहीं थे। लोग जानते हैं कि वे सचमुच अपने पिताओं से भी बदतर हैं। क्यों? क्योंकि लोग जानते हैं कि जब उनके पुरखाओं ने पाप किया, तब उनका क्या हुआ, और लोगों ने तो पाप ही किया। परमेश्वर अपने लोगों के प्रति बहुत धैर्यवान था। उसने उन पर दया की और उन्हें बचाया। हम यह भी जानते हैं कि अतीत में क्या हुआ था। हम परमेश्वर के प्रेम और उसके उद्धार करने वाली दया के बारे में जानते हैं। उसने हमें ये बातें दिखाने के लिए यीशु को दिया। इसलिए, हमारे पास परमेश्वर को अस्वीकार करने का कोई बहाना नहीं है।

भजन संहिता 106 अच्छी खबर है। परमेश्वर का प्रेम सदैव अंत में जीतता है (भजन संहिता 106: 8-10, 30, 43-46)। हमारे पाप का परमेश्वर या उसकी शक्ति से कोई मुकाबला नहीं है!

भजन संहिता 106: 13 कहता है: "परन्तु वे शीघ्र ही भूल गए कि उसने क्या किया। उन्होंने उसकी सलाह नहीं मानी"। हमारे लिए वही काम करना इतना आसान क्यों है?

बुधवार **मार्च 6**

प्रभु की दाखलता के बारे में चित्र कहानी (भजन संहिता 80)

भजन संहिता 80 पढ़ें। यह भजन परमेश्वर के लोगों की तुलना किससे करता है? लोग परमेश्वर से क्या माँगते हैं?

भजन संहिता 80 में, परमेश्वर के लोगों की तुलना अंगूर के बगीचे से की गई है। परमेश्वर ने अंगूर के बगीचे को जड़ समेत खोद डाला। फिर वह बगीचे को प्रतिज्ञा भूमि पर ले गया जहाँ उसने इसे लगाया। अंगूर के बगीचे का शब्द चित्र हमें इस्राएल के लिए परमेश्वर की विशेष देखभाल को दिखाता है (पढ़ें, उत्पत्ति 49: 11, 12, 22; व्यवस्थाविवरण 7: 7-11)।

भजन संहिता 80 में, परमेश्वर अपने अंगूर के बगीचे से क्रोधित है (भजन 80: 12)। परमेश्वर के विशेष दूतों ने घोषणा की कि परमेश्वर उसके

अंगूर के बगीचे को नष्ट कर देगा क्योंकि दाख बुरी हो गई है (यशायाह 5: 1-7; यिर्मयाह 2: 21)।

भजन संहिता 80 में, भजनकार स्वीकार करता है कि परमेश्वर को अपने लोगों का न्याय करना चाहिए। वहीं, भजनकार असमंजस में है। वह जानता है कि परमेश्वर दया से परिपूर्ण है। इसलिए, भजनकार को यह समझने में कठिनाई हो रही है कि परमेश्वर अपने लोगों पर दया दिखाने से इनकार क्यों करता है। भजनकार को डर है कि कहीं परमेश्वर का क्रोध उसकी दया पर हावी न हो जाए। यदि ऐसा हुआ, तो इस्राएल नष्ट हो जाएगा (भजन 80: 16)।

गिनती 6: 22-27 में आशीर्वाद के बारे में पढ़ें। भजन 80 में भजनकार इस आशीर्वाद के बारे में कैसे बात करता है?

भजन 80 हमें इस्राएल से हारून के वादे को याद रखने में मदद करता है कि परमेश्वर उन्हें हमेशा आशीष देगा (संख्या 6: 22-27)। यह वादा हमें भजनकार की आशा दिखाता है कि परमेश्वर की दया उसके लोगों को उनके कष्टों से बचाएगी: "परमेश्वर, हमें फिर से स्वीकार करे। हम पर मुस्कुराए और हमें बचाए!" (भजन 80: 3, भजन 80: 7, 19)।

"स्वीकार करे" शब्द का अर्थ है कि परमेश्वर अपने लोगों को, जो भटक गए हैं, अपने पास वापस आने के लिए आमंत्रित कर रहा है। यह शब्द हमारे पापों को स्वीकार करने के विचार से भी जुड़ा है। जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो हम पाप करना बंद कर देते हैं और परमेश्वर के पास वापस आ जाते हैं। प्रभु ने यिर्मयाह को समझाया कि जब उसके लोग उसके पास वापस आते हैं तो क्या होता है: "मैं उनमें मेरे बारे में जानना चाहूँगा। वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा। मैं ऐसा इसलिए करूँगा क्योंकि बेबीलोन के कैदी पूरे मन से मेरी ओर फिरेंगे" (यिर्मयाह 24: 7)।

क्या आपको ऐसा अनुभव हुआ है जब आपने अपना पाप स्वीकार करने के बाद अपने दिल में परमेश्वर के करीब हो गए? आपके पाप को ना कहने से आपको अपने दिल में परमेश्वर के करीब होने का एहसास कैसे हुआ?

बृहस्पतिवार **मार्च 7**

प्रभु इतिहास को नियंत्रित करता है (भजन संहिता 135)

भजन 135 पढ़ें। भजन 135 अतीत की किन चीजों के बारे में बात करता है? हम उनसे क्या सबक सीख सकते हैं?

भजन 135 परमेश्वर के लोगों से प्रभु की स्तुति करने के लिए कहता है। प्रभु भला है। हम उसकी बनाई हर चीज में उसका प्रेम देखते हैं (भजन 135: 6, 7)। इस्राएल का पिछला इतिहास हमें यह भी दिखाता है कि परमेश्वर भला है। उसने अपने लोगों को मिस्रियों से बचाया (भजन 135: 8, 9)। उसने अपने लोगों को प्रतिज्ञा किया हुआ देश दिया (भजन 135:10-12)। जब प्रभु ने इस्राएल के लोगों को अपनी प्रजा बनने के लिए चुना तो उसने अपनी दया दिखाई। वे उसके विशेष खजाने बन गए (भजन 135: 4)। लोगों का परमेश्वर के साथ एक विशेष संबंध था (व्यवस्थाविवरण 7: 6-11; 1पतरस 2: 9, 10)। परमेश्वर ने इस्राएल को इसलिए चुना क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था, न कि इसलिए कि वे विशेष थे। इसलिए, इस्राएल किसी भी अन्य लोगों से बेहतर होने का दावा नहीं कर सकता। भजन 135: 6, 7 हमें दिखाता है कि मानव परिवार को बचाने की परमेश्वर की योजना इस्राएल से शुरू नहीं हुई थी। परमेश्वर के उद्धार की योजना तब शुरू हुई जब उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया। इसलिए, इस्राएल को अपने दिल में परमेश्वर के विशेष लोग होने का बिलकुल भी घमंड नहीं होना चाहिए। इस्राएल को परमेश्वर के साथ काम करना चाहिए और अन्य लोगों को बचाने के लिए वह जो कुछ भी करने को कहता है वह करना चाहिए।

भजन 135 यह भी बताता है कि परमेश्वर अपने लोगों का न्याय कैसे करेगा। साथ ही, परमेश्वर अपने लोगों पर दया दिखाएगा (भजन 135: 14)। न्यायाधीश के रूप में, परमेश्वर गरीबों और जरूरतमंदों को बचाएगा (भजन 9: 4; भजन 7: 8; भजन 54: 1)। परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करेगा (व्यवस्थाविवरण 32: 36)। भजन 135 परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर और उसके वादे पर भरोसा करने में मदद करता है।

भजनकार परमेश्वर की तुलना झूठे देवताओं से करता है। झूठे देवता कुछ भी नहीं हैं। वे शक्तिशाली नहीं हैं। परन्तु यहोवा पृथ्वी पर नियन्त्रण

पाठ 11

मार्च 9-15

प्रभु के साथ रहने के लिए उत्साहित हूँ
(Excited to be with the Lord)

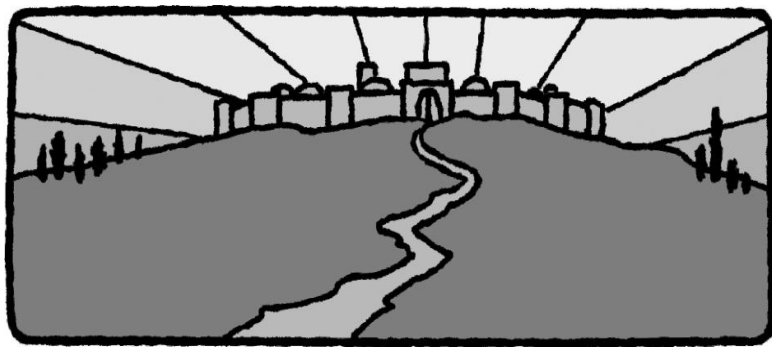

सब्त अपराह्न **मार्च 9**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: भजन 84: 5-12; भजन 122: 1-5; भजन 87: 1, 2; भजन 46: 1-7; भजन 125: 1, 2।

याद वचन: "मेरा प्राण यहोवा के आँगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला; मेरा तन मन दोनों जीवते परमेश्वर को पुकार रहे" (भजन संहिता 84: 2)।

भजन संहिता की पुस्तक सिय्योन के बारे में गीतों से भरी हुई है। सिय्योन परमेश्वर के पवित्र पर्वत का एक नाम है। सिय्योन के गीत हमें इसकी सुंदरता के बारे में बताते हैं। वे हमें प्रभु के पवित्र पर्वत के बारे में बताते हैं। सारी पृथ्वी उसके अधीन है। सिय्योन के बारे में गीत अक्सर प्रभु के उपासना घर की प्रशंसा करते हैं। कोरह के पुत्रें ने सिय्योन के बारे में इनमें से कई गीत लिखे। कोरह के पुत्र प्रभु के मन्दिर में संगीतकार थे (1 इतिहास 6: 31-38)। कोरह के पुत्र मंदिर के द्वारों के प्रभारी थे (1 इतिहास 9: 19)।

सिय्योन परमेश्वर के लोगों को आशा और आनंद से क्यों भरता है? सिय्योन परमेश्वर के अपने लोगों के साथ रहने का एक प्रतीक है। इस्राएल के लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे (व्यवस्थाविवरण 7: 6)। तो, सिय्योन परमेश्वर का चुना हुआ पर्वत है (भजन 78: 68; भजन 87: 2)। यहोवा सिय्योन में राजा के रूप में विराजमान है (भजन 99: 1,2)। प्रभु का मन्दिर सिय्योन पर भी स्थित है (भजन 87: 1,2)। सिय्योन वह स्थान है जहाँ

---

* सब्त, मार्च 16 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देता है। साथ ही, सिय्योन परमेश्वर के लोगों के लिए सुरक्षा का स्थान है। सिय्योन का प्रयोग अक्सर परमेश्वर के मंदिर और यरूशलेम शहर के नाम के रूप में किया जाता है। परमेश्वर का मंदिर पृथ्वी पर मानव परिवार को बचाने के उसके कार्य का केंद्र है।

परमेश्वर सिय्योन से सारी पृथ्वी को आशीष देता है। सारी पृथ्वी प्रभु की है। इसलिए, सिय्योन पृथ्वी पर हर जगह के लोगों के लिए आनंद का स्थान है (भजन 48:2)।

रविवार **मार्च 10**

तेरे आंगनों में का एक दिन और कहीं के 1,000 दिन से उत्तम है (भजन 84:5-12)

भजनकार परमेश्वर के मंदिर में क्यों रहना चाहता है? उत्तर के लिए भजन 84:1-4 पढ़ें।

भजनकार जीवन भर परमेश्वर के मंदिर में रहना चाहता है। तब वह सदैव परमेश्वर के निकट रहेगा (भजन 84:1,2)। परमेश्वर अपने मन्दिर में रहता है (भजन 84:2)। इसलिए मंदिर एक विशेष स्थान है। मंदिर में, परमेश्वर के लोग "प्रभु की सुंदरता देख सकते हैं" (पढ़ें, भजन 27:4; भजन 63:2)। तब परमेश्वर के लोग "तेरे भवन अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर में अच्छी वस्तुओं से भर जाएँगे" (भजन 65:4)। भजन 84 में, लोग खुश हैं क्योंकि उनका परमेश्वर के साथ रिश्ता है। वे उसकी स्तुति करते हैं (भजन 84:4), क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को शक्ति देता है (भजन 84:5)। इसलिए, लोग उस पर भरोसा करते हैं (भजन 84:12)। लोग परमेश्वर के मंदिर में उसकी की उपासना करने और अन्य लोगों के साथ संगति करने के लिए आते हैं। परमेश्वर अपने मंदिर में रहता है। इसलिए, उसके लोग उसके राज्य को बेहतर ढंग से समझते हैं। उन्हें अनन्त जीवन की भी बेहतर समझ है।

आशीष पाने के लिए परमेश्वर के मंदिर में और कौन आ सकता है? उत्तर के लिए भजन 84:5-12 पढ़ें।

परमेश्वर अपने मंदिर से अपनी आशीष की वर्षा करता है। सबसे पहले, परमेश्वर उन लोगों को अपनी आशीष देता है जो उसके मंदिर में उसकी सेवा करते हैं (भजन 84:4)। तब परमेश्वर उन यहूदी यात्रियों पर अपनी आशीष बरसाता है जो उसके मंदिर की ओर जा रहे हैं (भजन 84:5-10)। अंततः, परमेश्वर की आशीष पृथ्वी पर हर जगह के लोगों को मिलता है। जो लोग सिय्योन की यात्रा करते हैं वे परमेश्वर से उसके मंदिर में मिलने की उम्मीद करते हैं। यह आशा उनके विश्वास को मजबूत बनाती है (भजन 84:7)।

जब परमेश्वर के लोग उसके मंदिर को छोड़ते हैं, तो वे परमेश्वर से मिलने का अनुभव अपने दिलों में घर कर जाते हैं। यह अनुभव उन्हें पवित्र जीवन जीने में मदद करता है (भजन 84: 11)। लोग हर समय पवित्र जीवन जीने का प्रयास करते हैं ताकि वे फिर से परमेश्वर के मंदिर में प्रवेश करने के योग्य हो सकें (भजन 15: 1, 2)। भजन 84: 11 में, हम यह भी देखते हैं कि भजनकार परमेश्वर की तुलना "सूरज" से करता है। प्रभु की आशीष उसके मंदिर से उसी तरह चमकती है जैसे सूर्य की किरणें पृथ्वी के छोर तक चमकती हैं (भजन 84: 11)। परमेश्वर उन सभी पर अपनी दया "चमकाता" है जो उसके साथ विश्वास में बने रहते हैं।

प्रकाशितवाक्य 21: 3 पढ़ें। यह पद हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे साथ नई पृथ्वी पर अपना घर बनाएगा। यह भजन आपको क्या आशा देता है?

सोमवार **मार्च 11**

यरूशलेम में शांति के लिए प्रार्थना करें (भजन 122: 1-5)

जब परमेश्वर के लोग यरूशलेम पहुँचते हैं तो उन्हें कैसा महसूस होता है? वे यरूशलेम में क्या पाने की आशा करते हैं? उत्तर के लिए भजन 122: 1-5 पढ़ें।

भजन 122 में, परमेश्वर के लोग यरूशलेम पहुँचने के लिए खुश और उत्साहित हैं। यरूशलेम की यात्रा एक आनंददायक समय था। परमेश्वर के लोगों ने उस वर्ष और अपने पिछले इतिहास के लिए परमेश्वर के प्रेम का जश्न मनाने के लिए वर्ष के दौरान तीन बार यात्रा की (व्यवस्थाविवरण 16: 16)। यरूशलेम इस्राएल के जीवन का केंद्र था। साथ ही, "उसने [परमेश्वर] ने इस्राएल को जो व्यवस्था दी" वह यरूशलेम में थी (भजन 122: 4)। यरूशलेम वह स्थान था "जहाँ लोगों का न्याय किया जाता था" (भजन 122: 5)। जब लोग धार्मिक उत्सवों के लिए यरूशलेम जाते थे, तो वे अदालत में जा सकते थे और मदद माँग सकते थे।

भजन 122: 6-9 में, परमेश्वर के लोग किसके लिए प्रार्थना करते हैं?

लोग यरूशलेम शहर को शांति का आशीर्वाद देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। यह प्रार्थना परमेश्वर के सभी लोगों को दिल और दिमाग से एक साथ जुड़ने का कारण बनती है। जब लोग इस प्रकार एक साथ जुड़ते हैं, तो उनके बीच शांति होती है (भजन संहिता 122: 8)। यरूशलेम में शांति तभी हो सकती है जब परमेश्वर के लोग उसके और एक-दूसरे के साथ शांति

से रहें। इसलिए, यरूशलेम में शांति के लिए प्रार्थना करना परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ शांति से रहने का निमंत्रण भी है। जब यरूशलेम में शांति होती है, तो लोग जीवन में सफलता का आनंद लेते हैं (भजन 147: 12-14)।

भजन 122 हमें सिखाता है कि हमें अपने चर्च और उसके सदस्यों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जब हम एक-दूसरे के साथ शांति और सहमति पर होंगे, तो हम एक चर्च के रूप में मजबूत होंगे। तब हम पृथ्वी पर सभी के लिए परमेश्वर की शांति और उसकी बचाने वाली दया के बारे में खुशखबरी की घोषणा कर सकते हैं (यूहन्ना 13: 34, 35)।

जब हम चर्च में शांति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो हम परमेश्वर के अंतिम समय के शांति के राज्य में आशा को जीवित रखते हैं। यह राज्य यरूशलेम शहर से भी बहुत बड़ा है। इस राज्य में पूरी पृथ्वी शामिल है (यशायाह 52: 7; यशायाह 66: 12, 13; प्रकाशितवाक्य 21-22)।

हम लोगों के बीच शांति स्थापित करने के लिए अब क्या कर सकते हैं?

मंगलवार **मार्च 12**

सिय्योन: सभी लोगों के लिए घर (भजन 87: 1, 2)

सिय्योन को क्या खास बनाता है? यह एक अद्‌भुत जगह क्यों है? उत्तर के लिए भजन 87: 1,2 पढ़ें।

भजन 87 एक भजन है जो सिय्योन का जश्न मनाता है। परमेश्वर सिय्योन से प्रेम करता है। परमेश्वर ने सिय्योन को अपना विशेष शहर चुना। परमेश्वर का मन्दिर सिय्योन पर्वत पर है (भजन 2: 6; भजन 15: 1)। सिय्योन में प्रभु एक सर्वशक्तिमान राजा है। वहाँ पृथ्वी पर हर कोई उसका आदर करेगा (भजन 99: 2; यशायाह 2: 2; मीका 4: 1)। भजनकार कहता है, "प्रभु ने अपना नगर पवित्र पर्वत पर बनाया है" (भजन संहिता 87: 1)। वहाँ से, प्रभु लोगों को अनन्त जीवन की आशीष देता है (भजन 133: 3)। परमेश्वर बेतेल और शीलो सहित पूरे इस्राएल में किसी भी अन्य स्थान से अधिक सिय्योन से प्रेम करता है (भजन संहिता 87: 2)। अतीत में, बेथेल और शीलो परमेश्वर के लोगों के लिए विशेष मिलन स्थल थे। भजन 87 हमें दिखाता है कि हमें परमेश्वर की आराधना उसी स्थान पर करनी चाहिए जिसे वह चुनता है।

हमें उसकी आराधना भी उसी प्रकार करनी चाहिए जिस प्रकार वह आदेश देता है।

सिय्योन के बारे में कौन सी अद्‌भुत बातें कही गई हैं? उत्तर के लिए भजन 87: 3-7 पढ़ें।

सिय्योन की महिमा अन्य लोगों को परमेश्वर के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रेरित करती है। तो, परमेश्वर के राज्य में पूरी पृथ्वी शामिल है। क्या आप देखते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को अस्वीकार नहीं करता जो इस्राएल से नहीं हैं? परमेश्वर उन सभी लोगों को स्वीकार करेगा जो उसके पास आते हैं और परमेश्वर को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं।

बाइबल के समय में, लोग उस देश के थे जहाँ वे पैदा हुए थे (नहेमायाह 7: 5; लूका 2: 1-3)। भजन 87 में, भजनकार हमें तीन बार बताता है कि इस्राएल के बाहर अन्य देशों के लोग सिय्योन में "जन्म" लेते हैं। इस विचार का क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर इन लोगों को सिय्योन का नागरिक बनाता है। परमेश्वर उन्हें वही आशीर्वाद देता है जो वह सिय्योन में पैदा हुए बच्चों को देता है (भजन 87: 4-6)।

भजन 87 उस दिन के बारे में बात करता है जब यहूदी और गैर-यहूदी दोनों एक पवित्र राज्य के सदस्य होंगे (रोमियों 3: 22; रोमियों 10: 12; गलातियों 3: 28, 29 भी पढ़ें)। भजन 87 में सिय्योन की तस्वीर की तुलना परमेश्वर के राज्य के बारे में दानिएल के सपने से करें (दानिएल 2: 34, 35, 44, 45)। दानिएल के सपने में, परमेश्वर का राज्य एक बड़ा पहाड़ बन जाता है जो पृथ्वी को भर देता है।

भजन संहिता 87 हमें दिखाता है कि परमेश्वर सिय्योन में सभी लोगों को अपनाने के लिए तैयार है। यह विचार हमें पृथ्वी पर सभी को सुसमाचार का प्रचार करने के लिए यीशु की महत्त्वपूर्ण आज्ञा को बेहतर ढंग से समझने में कैसे मदद करता है (मती 28: 18-20)?

बुधवार **मार्च 13**

सिय्योन में सुरक्षा और शांति (भजन 46: 1-7)

भजन 46: 1-7 पढ़ें। ये पद हमें पृथ्वी के बारे में क्या बताते हैं?

भजन 46 हमें पृथ्वी को संकट में दिखाता है। प्राकृतिक आपदाएँ हर जगह हो रही हैं (भजन 46: 2,3)। बाइबल हमें दुष्ट लोगों या इस पृथ्वी पर उनके द्वारा उत्पन्न समस्याओं को दिखाने के लिए शब्द चित्र के रूप में टकराती लहरों या पानी का उपयोग करती है (भजन 93: 3, 4; भजन 124: 2-5)।

भजन 46 में, हम एक ऐसे समय के बारे में पढ़ते हैं जब ''राष्ट्र [लोग समूह] भय से काँप उठेंगे और राज्य गिर जायेंगे।"

जो लोग डरते और गिरते हैं वे परमेश्वर को नहीं जानते। परमेश्वर उनके साथ नहीं रह रहा है। हम कैसे जानते हैं? उन्हें कोई शांति नहीं है। जब परमेश्वर अपने लोगों के साथ होता है, तो उन्हें शांति मिलती है (भजन संहिता 46:4, 5)। पृथ्वी पर लोग परमेश्वर को अस्वीकार कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर उन्हें नहीं छोड़ता या उन्हें अस्वीकार नहीं करता। हाँ, इस धरती पर चीजें बहुत खराब हो सकती हैं। लेकिन हम इस जीवन में आशा रख सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ है।

प्रभु हमारी सुरक्षा का स्थान है। वह सिय्योन को शांति देता है और उसे एक सुरक्षित स्थान बनाता है। पृथ्वी पर लोग लड़ सकते हैं और युद्ध में जा सकते हैं। परन्तु परमेश्वर के लोग सुरक्षित हैं। शांति एक ऐसा उपहार है जो केवल परमेश्वर ही दे सकता है। वह यह उपहार अपने भरोसेमंद बच्चों को देता है। जब हम पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें शांति दे सकता है और युद्ध या भयानक तूफान के बीच हमें सुरक्षित महसूस करा सकता है (मती 8:23-27)। कोई आपसे पूछ सकता है: युद्ध और तूफान कब खत्म होंगे? क्या परमेश्वर लोगों को तब तक एक-दूसरे को हानि पहुँचाते रहने देगा जब तक कि सभी नष्ट न हो जाएँ? जो व्यक्ति ये प्रश्न पूछता है उसे भजन 46 पढ़ने को कहें। आइए अब इसे पढ़ें।

परमेश्वर इस पृथ्वी पर सभी बुराईयों और पीड़ाओं के बारे में कैसा महसूस करता है? उत्तर के लिए भजन 46:6-11 पढ़ें।

परमेश्वर इस पृथ्वी पर सभी बुराइयों से बहुत परेशान है। वह इस पर इतना क्रोधित होता है कि उसके क्रोध से पृथ्वी पिघल जाती है (भजन संहिता 46:6)। परमेश्वर का क्रोध पृथ्वी को नष्ट नहीं करता। उसका क्रोध पृथ्वी को नया बनाता है। परमेश्वर युद्धों को रोक देगा और उन दुष्ट उपकरणों को नष्ट कर देगा जो मनुष्य लोगों को हानि पहुँचाने के लिए बनाते हैं (भजन 46:9)। यीशु ने अपने दूसरे आगमन पर ये चीजें करने का वादा किया है। उसका वादा मसीहियों को आशा से भर देता है।

जब हमारे चारों ओर इतनी सारी बुरी चीजें घटित हो रही हों तो हम जीवन में शांति कैसे सीखें? कठिन समय में हम परमेश्वर पर भरोसा करना कैसे सीखें?

वह पर्वत जिसे हिलाया नहीं जा सकता (भजन 125: 1, 2)

भजन 125:1 में, भजनकार परमेश्वर के लोगों की तुलना किससे करता है?

भजन 125: 1 में, परमेश्वर के लोगों की तुलना सिय्योन पर्वत से की गई है। सिय्योन पर्वत शक्ति का प्रतीक है। सिय्योन पर्वत को हटाया नहीं जा सकता। जब परमेश्वर के लोग उस पर भरोसा करते हैं, तो वे सिय्योन पर्वत के समान मजबूत होते हैं। भजनकार जानता है कि परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा (भजन 5: 12; भजन 32: 7, 10)। सिय्योन पर्वत परमेश्वर के लोगों के दिलों को विश्वास से भर देता है। उनके चारों ओर पृथ्वी पर बुराई भर जाती है। लेकिन परमेश्वर के लोगों को आशा बनी हुई है।

परमेश्वर के लोग किस कारण से हतोत्साहित महसूस करते हैं? उत्तर के लिए भजन 125: 3-5 पढ़ें। हम उनके अनुभव से क्या सबक सीख सकते हैं?

जब परमेश्वर के बच्चे दुष्ट लोगों को इस जीवन में बहुत सफलता का आनंद लेते हुए देखते हैं तो वे हतोत्साहित महसूस कर सकते हैं। उनकी सफलता के कारण परमेश्वर के कुछ लोग परमेश्वर को छोड़ सकते हैं और पाप के जीवन का आनंद भी ले सकते हैं (भजन 73: 2-13; भजन 94: 3)। परमेश्वर ने हमें चुनाव करने की आजादी दी है - बुराई या अच्छाई चुनने के लिए स्वतंत्र (भजन संहिता 125: 3,5)। परन्तु परमेश्वर उन लोगों को सुरक्षित नहीं रखेगा जो उसे पाप के जीवन का आनंद लेने के लिए छोड़ देते हैं। अंत में, परमेश्वर उन लोगों का न्याय करेगा जो उसके विरुद्ध पाप करते हैं और उसकी क्षमा स्वीकार करने से इनकार करते हैं।

भजन 125 परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर में अपने विश्वास को मजबूत बनाए रखने का निमंत्रण है। उन्हें सिय्योन पर्वत के समान मजबूत रहना चाहिए। हम हमेशा यह नहीं समझ पाते कि बुराई क्यों होती है। लेकिन हम प्रभु पर भरोसा रखना जारी रख सकते हैं।

"बाइबल में कई विषयों को समझाना या पूरी तरह से समझना हमारे लिए कठिन है। इन विषयों में शामिल हैं कि पाप कैसे शुरू हुआ, यीशु का जन्म, हमारा फिर से जन्म, और मनुष्य मृतकों में से कैसे जी उठते हैं। इन विषयों के साथ-साथ और भी कई विषय हैं जो रहस्य हैं। लेकिन हमें बाइबल

पर संदेह नहीं करना चाहिए क्योंकि हम परमेश्वर के रहस्यों को नहीं समझ सकते। इस धरती पर हमारे चारों ओर ऐसे रहस्य हैं जिन्हें हम समझ नहीं पाते हैं। . . . क्या हमें यह जानकर आश्चर्य होना चाहिए कि ऐसे आध्यात्मिक रहस्य भी हैं जिन्हें हम नहीं समझ सकते? दिक्कत हमारी अपनी सोच से है। हमारा दिमाग कमजोर और सीमित है। परमेश्वर हमें यह दिखाने के लिए बाइबल में पर्याप्त सबूत देता है कि बाइबल उसकी ओर से है। हम हमेशा वह सब कुछ नहीं समझ सकते जो परमेश्वर करता है। लेकिन हमें किसी भी तरह उस पर भरोसा करना चाहिए और बाइबल पर संदेह नहीं करना चाहिए।" - एलेन जी. व्हाइट, स्टेप्स टू क्राइस्ट, पेज 106, 107।

शुक्रवार **मार्च 15**

अतिरिक्त विचार: जब हम सिय्योन के बारे में गीत गाते हैं, तो हमें आशा मिलेगी। सिय्योन के बारे में गीत परमेश्वर के वादे में हमारी आशा को जीवित रखते हैं। परमेश्वर ने पृथ्वी को नया बनाने का वादा किया है (प्रकाशितवाक्य 21: 1-5)। तब वह नई पृथ्वी पर सदैव के लिये राजा के रूप में विराजमान रहेगा।

नई पृथ्वी पर, "परमेश्वर के लोग सदैव जीवित रहेंगे। वे आनन्द के साथ उन अनेक आश्चर्यकर्मों का अधययन करेंगे जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है। परमेश्वर के लोग उसके उद्धार करने वाले प्रेम के बारे में अधययन करेंगे। यह प्रेम एक रहस्य है। नई पृथ्वी पर, कोई शैतान नहीं होगा जो हमें परमेश्वर के बारे में भूला दे। हम नए कौशल सीखेंगे। हम नया ज्ञान सीखेंगे और सीखने से कभी नहीं थकेंगे। हमारे लिए कुछ भी करना बहुत कठिन नहीं होगा। हम कई अद्‌भुत चीजें करेंगे। और आगे करने के लिए हमेशा कुछ और अद्‌भुत होगा। वहाँ देखने के लिए नए चमत्कार होंगे और सीखने के लिए नए आध्यात्मिक सत्य होंगे।" - एलेन जी ह्वाइट, द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, पृष्ठ 677।

चर्चागत प्रश्न:

1. **इस सप्ताह हमने सिय्योन में परमेश्वर के लोगों के बारे में कौन से महत्त्वपूर्ण नियम सीखे? हमें पता चला कि यरूशलेम में सिय्योन एक वास्तविक स्थान है। सिय्योन के बारे में हमने जो महत्त्वपूर्ण नियम सीखे हैं, वे हमें परमेश्वर के लिए अपने कार्य को समझने में कैसे मदद कर सकते हैं?**

2. आज परमेश्वर के अनुयायी उसके मंदिर में परमेश्वर के साथ कैसे रह सकते हैं (यूहन्ना 1: 14-18; इब्रानी 12: 22-24)?
3. भजन 87 में हम भविष्य की तस्वीर देखते हैं। हम सीखते हैं कि सिय्योन इस पृथ्वी पर सभी लोगों के समूहों का शहर बन जाएगा (रोमियों 5: 10; इफिसियों 2: 11-16; कुलुस्सियों 1: 19-23)। यह अद्भुत प्रतिज्ञा कैसे घटित होगी?
4. क्या होगा यदि कोई आपसे यह समझाने के लिए कहे कि बुरे लोग इस जीवन में इतनी सफलता क्यों प्राप्त करते हैं जबकि "कई" अच्छे लोग क्लेशित होते हैं? आप इस व्यक्ति को कैसे उत्तर देंगे? यह समझना क्यों महत्त्वपूर्ण है कि इस जीवन में होने वाली हर बुरी चीज के लिए हमारे पास हमेशा पूर्ण उत्तर नहीं हो सकते हैं?

पाठ 12

मार्च 16-22

मैं प्रभु के लिए गाऊँगा!
(I will sing to the Lord!)

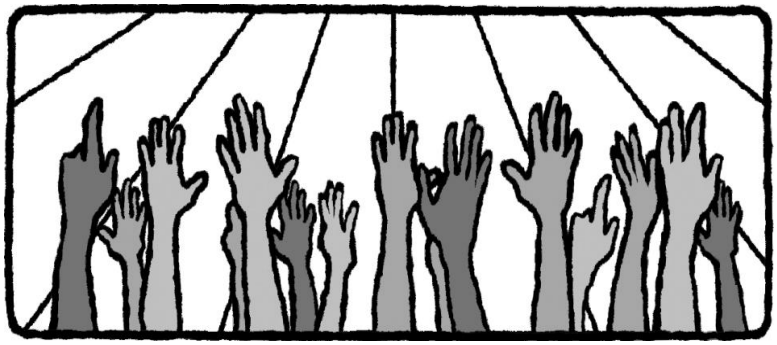

सब्त अपराह्न **मार्च 16**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : भजन 134; भजन 33: 3; भजन 15; भजन 96; भजन 40: 6-8; भजन 50: 7-23; भजन 51: 16-19.

याद वचन: "मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूँगा; जब तक मैं बना रहूँगा तब तक अपने परमेश्वर भजन गाता रहूँगा" (भजन 104: 33)।

जैसे-जैसे हम उसकी दया का अनुभव करते हैं, परमेश्वर के बारे में हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है। जैसे-जैसे हम मसीही के रूप में विकसित होते हैं, हमारा हृदय परमेश्वर के अनेक आशीर्वादों के लिए उसके प्रति कृतज्ञता से भर जाता है। हम पूछेंगे, "यहोवा ने मेरे लिये जो कुछ किया है उसके लिये मैं उसे क्या दे सकता हूँ?" (भजन 116: 12)। उत्तर है: हमें स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप देना चाहिए और विश्वास के साथ उसके लिए जीना चाहिए।

भजन संहिता की पुस्तक में, इस्राएल एक जन समूह या एक देश से कहीं अधिक है। इस्राएल वह बड़ी भीड़ भी है जो परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक साथ मिलती है (भजन 22: 22, 25; भजन 35: 18)। इस्राएल का एक साथ मिलना हमें दिखाता है कि परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग उसकी स्तुति करने के लिए एक साथ आएँ। परमेश्वर यह भी

* सब्त, मार्च 23 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

चाहता है कि पृथ्वी पर बाकी लोग भी इस्राएल में शामिल हो जाएँ। इसलिए, प्रभु अपने बच्चों से अन्य लोगों को उसकी दया के बारे में खुशखबरी बताने के लिए कहता है। तब और भी लोग परमेश्वर की आराधना करने आएँगे। स्तुति एक चर्च के रूप में हमारी सामूहिक आराधना का हिस्सा है। चर्च में हमारी आराधना हमारी निजी प्रार्थना और स्तुति का स्थान नहीं लेती। व्यक्तिगत उपासना हमारी सार्वजनिक उपासना को मजबूत बनाती है (भजन 22: 22, 25)। जब हम एक चर्च के रूप में एक साथ उपासना करते हैं, तो हमारी निजी उपासना भी मजबूत होती है। जो लोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक साथ मिलते हैं उन्हें "वे लोग जो परमेश्वर के साथ सही [स्वीकृत] हैं" नाम दिया गया है (भजन संहिता 111: 1)। वे परमेश्वर को जानते हैं (भजन 36: 10), और परमेश्वर उन्हें जानता है (भजन 37: 18)। परमेश्वर के साथ उनका अनुभव उनके जीवन के हर हिस्से को भर देता है।

रविवार **मार्च 17**

अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो (भजन 134)

भजन 134 में लोग परमेश्वर की आराधना कैसे करते हैं? क्या होता है जब लोग इस तरह से परमेश्वर की आराधना करते हैं?

भजन 134 हमें उस आशीर्वाद को याद करने में मदद करता है जो हारून ने इस्राएलियों को दिया था (गिनती 6: 24-26; भजन 67: 1)। आशीष परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंध का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। लोग परमेश्वर को उसके मंदिर में धन्यवाद देते हैं। परमेश्वर सिय्योन से अपने लोगों को आशीष देता है। परमेश्वर ही है जिसने उन्हें बनाया, इसलिए उसकी आशीष उसके लोगों के जीवन के हर हिस्से को छूता है। लोग परमेश्वर की दया के वादे के अधीन हैं। इस वादे के हिस्से के रूप में, लोग प्रभु को धन्यवाद दे सकते हैं और उससे आशीष प्राप्त कर सकते हैं।

पढ़ें, भजन 18: 1; भजन 36: 1; भजन 113: 1; भजन 134: 1, 2; और भजन 135: 1, 2. ये पद हमें उन लोगों के बारे में क्या बताते हैं जो परमेश्वर की आराधना करते हैं?

भजन संहिता की पुस्तक में उन लोगों के लिए एक और नाम है जो परमेश्वर की आराधना करते हैं, वे परमेश्वर के सेवक हैं। भजनकार कहता है, "हे यहोवा के सब सेवको, सुनो, तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो, यहोवा को धन्य कहो!" (भजन 134: 1)। ये रात के कर्मचारी लेवियों के लिए रात में मंदिर की रखवाली कर सकते थे (1इतिहास 9: 23–27)। लेवी दिन और रात दोनों समय परमेश्वर की स्तुति करते थे (1 इतिहास 9:33)।

मंदिर ने इस्राएल को उस परमेश्वर को जानने और समझने में मदद की जिसे वे नहीं देख सकते थे। यह सहायता महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को आज्ञा दी थी कि वे उसकी मूर्तियाँ न बनाएँ और न ही उनके सामने झुकें। मन्दिर ने लोगों को प्रभु की महिमा दिखाई। यह मंदिर पापियों के लिए अपने पवित्र राजा से मिलने के लिए एक सुरक्षित स्थान था। प्रभु ने अपने लोगों को अपने मंदिर में उससे मिलने के लिए ध्यान करने के निमितमहत्त्वपूर्ण नियम दिए।

"प्रभु यीशु जीवित पत्थर है। . . . वह वही है जिसे परमेश्वर ने महान [महत्त्वपूर्ण] मूल्य [योग्य] के रूप में चुना है। तो उसके पास आओ। तुम भी जीवित पत्थरों के समान हो, और परमेश्वर तुम्हें एक आध्यात्मिक घर बनाने के लिए उपयोग कर रहा है। तुम्हें इस घर में पवित्र याजकों [आध्यात्मिक नेताओं] के रूप में परमेश्वर की सेवा करनी है, उन्हें आध्यात्मिक बलिदान [उपहार] चढ़ाना है जिन्हें वह यीशु मसीह के कारण स्वीकार करेगा" (1पतरस 2: 4, 5)। इन पदों में, पतरस उन्हीं विचारों को सिखाता है जिनके बारे में हम भजन की पुस्तक में पढ़ते हैं। परमेश्वर के लोग पवित्र याजकों का एक समूह हैं। वे यीशु को अपनी प्रशंसा और धन्यवाद देते हैं, जिसने उन्हें बनाया और जो उनका उद्धारकर्ता है। उसके लोग उन सभी अद्‌भुत कार्यों के लिए उसे धन्यवाद देते हैं जो उसने उनके लिए किया और करता है।

सोमवार **मार्च 18**

प्रभु के लिये नया गीत गाओ (भजन संहिता 33: 3)

पढ़ें, भजन 33: 3; भजन 40: 3; भजन 96: 1; भजन 98: 1; भजन 144: 9; और भजन 149: 1. इनमें से प्रत्येक भजन के पदों में आप किस समान विचार के बारे में पढ़ते हैं?

ये भजन लोगों से एक नया गीत गाने को कहता है। नये गीत का कारण यह है कि परमेश्वर पृथ्वी को नियंत्रित करता है। साथ ही, लोग परमेश्वर की देखभाल के लिए उसके आभारी हैं। लोग आभारी हैं कि प्रभु ने उन्हें बनाया है। सारी पृथ्वी का न्यायी होने के कारण लोग यहोवा के प्रति आभारी हैं। लोग कई अन्य कारणों से भी परमेश्वर के आभारी हैं। परमेश्वर ने उन्हें उनके शत्रुओं से और मृत्यु से बचाया। इस्राएली परमेश्वर की विशेष कृपा के लिए आभारी हैं। भजन संहिता की पुस्तक के अन्य गीत और भजन परमेश्वर के प्रेम और अद्‌भुत चमत्कारों के लिए स्तुतिगान करते हैं। लेकिन नया गाना अलग है। नया गाना एक खास गाना है। यह आनंद का गीत है।

नया गाना लोगों की ओर से परमेश्वर से किया गया एक वादा भी है। लोग फिर से परमेश्वर को अपना जीवन देने का वादा करते हैं। विश्वास के उनके नए अनुभव लोगों को यह घोषणा करने के लिए प्रेरित करते हैं कि परमेश्वर उनका राजा है और जिसने उन्हें बनाया है। नया गीत परमेश्वर पर विश्वास के बारे में है। नया गीत परमेश्वर की उसके अद्‌भुत कार्यों के लिए स्तुति भी करता है। नए गाने में लोग दुश्मनों से बचाने के लिए परमेश्वर का शुक्रिया अदा करते हैं।

पढ़ें, यशायाह 42: 10-12; प्रकाशितवाक्य 5: 9; और प्रकाशितवाक्य 14: 3. ये पद हमें नए गीत के बारे में क्या सिखाते हैं?

बाइबल कहती है कि इस्राएल परमेश्वर की "कीमती प्रजा" है (भजन संहिता 148: 14)। इस्राएली "उसके दिल के सबसे करीब लोग" हैं (भजन 148: 14)। तो, इस्राएलियों के पास परमेश्वर के साथ एक ऐसा अनुभव है जो किसी और के पास नहीं है। यह अनुभव उन्हें एक बहुत ही विशेष सम्मान देता है। उन्हें एक विशेष तरीके से परमेश्वर की स्तुति करने का मौका मिलता है जो पृथ्वी पर किसी और को नहीं मिलता है। बाइबल हर युग में परमेश्वर के सभी लोगों को अपने उद्धारकर्ता की स्तुति में नया गीत गाने के लिए प्रोत्साहित करती है। एक नया गाना वह गाना हो सकता है जिसे पहले किसी ने नहीं गाया हो। एक नया गीत ईश्वर की दया के अनुभव के बारे में हो सकता है। नया गीत परमेश्वर में हमारी आशा के बारे में हो सकता है। नया गीत एक आराधना है। आराधना उपहार देने से कहीं बढ़कर है। आराधना हमारे परमेश्वर से प्रेम करने और हमारे प्रति उसके प्रेम को स्वीकार करने के बारे में है। एक

नया गीत परमेश्वर द्वारा हमारे लिए किए गए हर काम के लिए उसके प्रति हमारे प्यार और कृतज्ञता को साझा करने का एक नया तरीका है।
यदि आपको कोई नया गीत गाना हो तो वह क्या होगा?

मंगलवार **मार्च 19**

हे प्रभु, तेरे मन्दिर में कौन रह सकता है? (भजन 15)

जीवित परमेश्वर के मन्दिर में उसकी आराधना करने के योग्य कौन है? उत्तर के लिए भजन 15 पढ़ें।

_____

_____

संक्षेप में, उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर है: वे लोग जिनके हृदय पवित्र हैं (व्यवस्थाविवरण 6:5; मीका 6:6-8) पढ़ें। इन लोगों के जीवन से पता चलता है कि वे परमेश्वर का आज्ञापालन करते हैं। परमेश्वर का प्रेम उनके दिल में है। यरूशलेम में परमेश्वर का मन्दिर एक पवित्र स्थान था। मंदिर में सब कुछ, जिसमें परमेश्वर के याजक या आध्यात्मिक अगुए भी शामिल थे, परमेश्वर को एक भेंट थी। इसलिए, मंदिर में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भी पवित्र होने की आवश्यकता थी। परमेश्वर के लोगों को अपने जीवन के हर भाग में पवित्र होने की आवश्यकता थी। परमेश्वर ने अपने लोगों को राजकीय याजकों का राज्य बनने में मदद करने के लिए व्यवस्था दिया। जब परमेश्वर के राजकीय याजक परमेश्वर की आराधना करने आते हैं तो उन्हें पवित्र होने की आवश्यकता होती है। उनका जीवन पवित्र होना चाहिए ताकि वे परमेश्वर के वादे के मुताबिक आशीष अन्य लोगों के साथ साझा कर सकें। पवित्र होने का क्या मतलब है? उत्तर के लिए भजन 24:3-6 और भजन 101:1-3 पढ़ें।

_____

क्या चीज हमें पवित्र बनाती है? परमेश्वर हमें परिपूर्ण हृदय देते हैं। "परफेक्ट" शब्द हिब्रू शब्द "टैमिन" से आया है। "टैमिन" का अर्थ है कुछ ऐसा जो "संपूर्ण" या "परिपूर्ण" हो। एक उत्तम लता पूर्ण और स्वस्थ होती है (यहेजकल 15:5)। परमेश्वर को उपहार के रूप में चढ़ाए जाने वाले जानवर "टैमिन" होने चाहिए (लैव्यव्यवस्था 22:21-24)। ये जानवर बीमार,

अंधे, अपंग या टूटी हुई हड्डियों वाले नहीं होने चाहिए। "उत्तम" शब्द सच्चाई से भरे हुए हैं। ये शब्द झूठ नहीं बोलते (अय्यूब 36:4)। तो, एक "संपूर्ण" हृदय एक पवित्र हृदय या ऐसा हृदय है जो पाप से शुद्ध है (भजन 24:4; भजन 15:2)। एक "सिद्ध" हृदय वाला व्यक्ति परमेश्वर को खोजता है (भजन 24:6) और परमेश्वर की क्षमा से शुद्ध किया जाता है (भजन 51:2-10)। परमेश्वर की दया उसके सेवकों को आज्ञाकारी जीवन जीने में मदद करती है। जब हम पवित्र जीवन जीते हैं, तो हम परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं, स्वयं की नहीं। हम उन चीजों से दूर रहने का चुनाव कैसे कर सकते हैं जो हमें परमेश्वर से अलग करती हैं? इनमें से कुछ चीजें क्या हैं? हम उन्हें करना कैसे बंद कर सकते हैं?

बुधवार **मार्च 20**

समस्त लोगों में परमेश्वर की महिमा का प्रचार करो (भजन 96)।

आराधना में क्या शामिल है? उत्तर के लिए भजन 96 पढ़ें। आराधना में प्रभु के लिए भजन (भजन 96:1, 2) और उसके नाम की स्तुति करना (भजन 96:2) शामिल है। आराधना में यह घोषणा करना भी शामिल है कि परमेश्वर अद्‌भुत और सर्वशक्तिमान है (भजन 96:3, 4)। जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, तो हम उसके लिए भेंट भी लाते हैं (भजन 96:8)। आराधना का एक और हिस्सा है जो भजन, स्तुति और परमेश्वर के लिए उपहारों के रूप में इतना प्रसिद्ध नहीं है: हमें अन्य लोगों को प्रभु के राज्य की घोषणा करनी चाहिए (भजन 96:2, 3, 10)।

भजन, स्तुति करना, भेंट लाना और यीशु के बारे में सुसमाचार की घोषणा करना एक दूसरे से अलग नहीं हैं। जब हम सुसमाचार साझा करते हैं, तो हम उसी समय परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं। हमारी आराधना के कारण अन्य लोगों के साथ खुशखबरी साझा करने के समान कारण हैं: (1) प्रभु अद्‌भुत हैं (भजन 96:4)। (2) अन्य लोगों के देवता मूर्तियाँ हैं। परन्तु हमारे प्रभु ने आकाश और पृथ्वी को बनाया (भजन संहिता 96:5)। (3) परमेश्वर ही राजा है। सारी पृथ्वी उसके वश में है (भजन 96:10)। (4) प्रभु शीघ्र आ रहा है। वह पृथ्वी पर सब का न्याय करेगा

(भजन 96: 13)। हम इन कारणों से लोगों के साथ खुशखबरी साझा करते हैं ताकि वे परमेश्वर की आराधना करने में हमारे साथ शामिल हो सकें (भजन 96: 11-13)।

आराधना यह जानने से शुरू होती है कि प्रभु ही वह है जिसने हमें बनाया है। यहोवा हमारा राजा और न्यायी भी है (भजन 96: 5, 10, 13)। जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, तो हम अतीत में उनके कार्यों को भी याद करते हैं। हम अब हमारे लिए परमेश्वर के काम का जश्न मनाते हैं। जब हम भविष्य में उसके कार्य के बारे में सोचते हैं तो हम आशा से भर जाते हैं। वह पृथ्वी का न्याय करेगा और जीवन को नया बनायेगा।

न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर का कार्य क्या है? परमेश्वर उस पृथ्वी पर शांति लाएगा जो अब क्लेश और पीड़ा से भरी हुई है। परमेश्वर उस जीवन में सब कुछ ठीक कर देगा जो अभी उचित नहीं है। यही कारण है कि न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर के कार्य के लिए पूरी पृथ्वी खुशी से भर गई है (भजन 96: 10-13; भजन 98: 4-9)। क्योंकि प्रभु एक निष्पक्ष और पवित्र न्यायाधीश है, उसके लोग उसकी सारी पवित्र सुंदरता में उसकी आराधना करना चाहते हैं (भजन 96: 9)। आराधना आनंद और विश्वास के बारे में है (भजन 96: 1, 2, 11-13)। आराधना परमेश्वर के प्रति सम्मान के बारे में भी है (भजन 96: 4, 9)।

भजन 96 हर किसी को परमेश्वर, न्यायाधीश की आराधना करने के लिए कहता है। यही घोषणा प्रकाशितवाक्य 14: 6-12 में तीन स्वर्गदूतों के संदेशों का हिस्सा है। कई मायनों में, भजन 96 इस अंतिम समय के संदेश की घोषणा करता है: उस परमेश्वर की आराधना करें जिसने आपको बनाया है! वह आपका उद्धारकर्ता और न्यायाधीश है।

बृहस्पतिवार **मार्च 21**

प्रभु वास्तव में क्या चाहता है? (भजन 40: 6-8)।

पढ़ें, भजन 40: 6-8; भजन 50: 7-23; और भजन 51: 16-19। ये भजन किस महत्त्वपूर्ण विषय पर बात करते हैं? परमेश्वर अपनी व्यवस्था में अपने लोगों से उसे भेंट और उपहार देने के लिए कहता है (निर्गमन 20: 24)।

कभी-कभी परमेश्वर इन उपहारों से प्रसन्न क्यों नहीं होता? परमेश्वर वास्तव में अपने लोगों से क्या चाहता है?

भजन संहिता के भजनकार चाहते हैं कि परमेश्वर के लोग उन कारणों को समझें कि परमेश्वर कभी-कभी उनकी आराधना से प्रसन्न क्यों नहीं होता है। लोगों के पाप उन्हें परमेश्वर से अलग करते हैं, तो उनकी आराधना झूठी है। परमेश्वर को दिखावटी आराधना से घृणा है।

परमेश्वर अपने लोगों से उनके उपहारों या होमबलि के कारण क्रोधित नहीं होता है। वह उनके बुरे व्यवहार और उनके पापों से परेशान है। परमेश्वर के लोग अदालत में निष्पक्ष नहीं हैं या अपने निजी जीवन में पवित्र नहीं हैं (भजन 50: 8, 17-21)। भजन की पुस्तक भेंट और आराधना के विरुद्ध उपदेश नहीं दे रही है। भजन संहिता की पुस्तक खोखली भेंटों और खोखली आराधना के विरुद्ध उपदेश देती है। लोगों की आराधना खोखली और नकली है क्योंकि उनका जीवन पाप से भरा हुआ है।

जब हमारा व्यवहार हमारी आराधना या विश्वास से मेल नहीं खाता, तो हम गलत कारणों से परमेश्वर की आराधना करेंगे। तब हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए जो कार्य करते हैं वह परमेश्वर के साथ हमारे संबंध से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। हम अपने हृदय में उसके करीब होने से अधिक अपनी भेंट की परवाह करते हैं। हमारे उपहारों और भेंट का मकसद हमें परमेश्वर के करीब लाना है। लेकिन जब हमारे दिल परमेश्वर से दूर हो जाते हैं, तो हमारे उपहार और भेंट का कोई मतलब नहीं होता है।

यूहन्ना 4: 23, 24 पढ़ें। यीशु इन पदों में क्या कह रहा है? उसके शब्द किस प्रकार उस बात से सहमत हैं जिसके विरुद्ध हमारे आज के भजन चेतावनी दे रहे हैं?

भेंट और उपहार पर्याप्त नहीं हैं। हमारे उपहारों का क्या फायदा अगर उन्हें देने वाला हृदय पाप के लिए खेदित न हो या विश्वास से रहित हो? जब परमेश्वर के लोगों ने अपने पापों को स्वीकार किया, तो उनकी भेंटों ने उसे प्रसन्न किया। तब उसने उनके चढ़ावे को पवित्र उपहार के रूप में स्वीकार किया (भजन 51: 19; भजन 50: 14 भी पढ़ें)। यीशु यशायाह के एक उद्धरण का उपयोग करता है: "ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर

रहता है" (मती 15: 8)। भजनकारों ने जो समस्याएँ देखीं वे वही थीं जो यीशु के साथ पृथ्वी पर अपने समय के दौर के अगुओं सहित कुछ लोगों के साथ थीं। हमें बचाये जाने के लिए सत्य को जानना ही पर्याप्त क्यों नहीं है?

शुक्रवार **मार्च 22**

अतिरिक्त विचार: एलेन जी व्हाइट की किताब 'ए कॉल टू स्टैंड अपार्ट' में पढ़ें "प्रार्थना कैसे करें," पृष्ठ 26-28।

"परमेश्वर मानव हाथों से बने मंदिरों में नहीं रहता। परन्तु जब वे एक साथ मिलते हैं तो वह अपने लोगों का सम्मान करता है। परमेश्वर ने अपने लोगों से यह वादा किया। वह उनसे मिलने के लिए अपनी आत्मा भेजेगा। लेकिन पहले, उन्हें उसे खोजने के लिए एक साथ आना होगा। उन्हें अपने पापों को स्वीकार करने होंगे। उन्हें एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जो लोग परमेश्वर की आराधना के लिए एकत्रित होते हैं उन्हें पापों से मन फिराना होगा। परमेश्वर के लोगों को पवित्र हृदय से उसकी आराधना करनी चाहिए। उन्हें उसकी व्यवस्था और बाइबल की सच्चाई का पालन करना चाहिए। यदि परमेश्वर के लोग इन चीजों को करने से इनकार करते हैं, तो आराधना के लिए उनका एक साथ आना व्यर्थ होगा। यीशु ने लोगों के इस समूह के बारे में ये शब्द कहे: 'ये लोग होठों से तो ---धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।' मत्ती 15: 8, 9। जो लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं, उन्हें उसकी आराधना 'आत्मा और सच्चाई से' करनी चाहिए। वह समय अब आ गया है। और ये [लोग] उस प्रकार के उपासक हैं [वे लोग जो परमेश्वर की पूजा करते हैं] जो पिता चाहता है।' यूहन्ना 4: 23।"-एलेन जी० ह्वाइट, प्रोफेट्स एंड किंग्स, पृष्ठ 50 ।

चर्चागत प्रश्न:

1. **जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं तो हम उन्हें सबसे अच्छा उपहार क्या दे सकते हैं? उत्तर के लिए भजन 40: 6-10 और रोमियों 12: 1, 2 पढ़ें।**
2. **सार्वजनिक और निजी आराधना कैसे जुड़ी हुई है? हमें दोनों की आवश्यकता क्यों है? दोनों प्रकार की आराधनाएँ हमारे आराधना**

अनुभव और विश्वास को बढ़ाने और मजबूत बनाने में कैसे मदद करते हैं?

3. बहुत से लोग सोचते हैं कि आराधना में केवल प्रार्थना, गीत गाना और बाइबल और अन्य धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करना शामिल है। आराधना करने के लिए ये चीजें बहुत जरूरी हैं। वहीं आराधना सिर्फ इन चीजों तक ही सीमित क्यों नहीं है। आराधना में और क्या शामिल है? कुछ उदाहरण दीजिए।

4. एलेन जी० ह्वाइट ने लिखा: "जब हम प्रभु की आराधना करते हैं और उसका काम करते हैं तो हमें खुशी महसूस होनी चाहिए"। स्टेप्स टू क्राइस्ट, पृष्ठ 103। प्रभु की आराधना को आनंददायक बनाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

पाठ 13

मार्च 23-29

प्रभु की प्रतीक्षा करो
(Wait for the Lord)

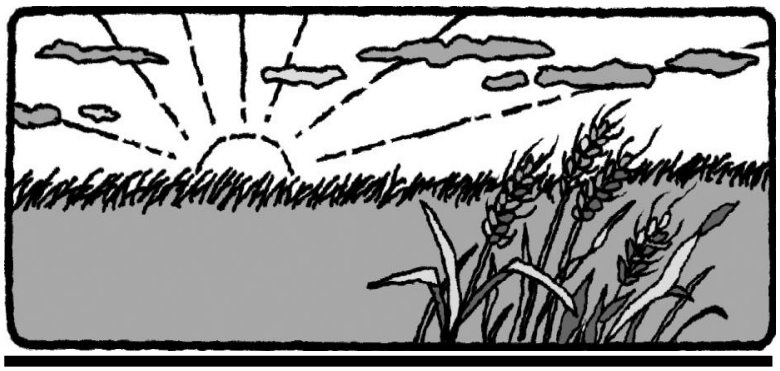

सब्त अपराह्न **मार्च 23**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : 27: 14; भजन 131; भजन 126; भजन 92; भजन 5: 3; 2 पतरस 1: 19; प्रकाशितवाक्य 22: 16.

याद वचन: "यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बाँधा और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हाँ, यहोवा ही की बाट जोहता रह !" (भजन 27: 14)।

अब हम भजन संहिता की पुस्तक पर इस त्रिमास के अध्ययन के अंतिम सप्ताह में हैं। हमने अपने राजा और न्यायाधीश के बारे में बाइबल की कई अद्‌भुत सच्चाइयाँ सीखी हैं। वह वही है जिसने हमें बनाया है। वह हमें पाप से बचाता है। वह हमें माफी देता है। जब हम यीशु के वापस आने का इंतजार करते हैं तो हमारा दिल आशा से भर जाता है। भजन संहिता की पुस्तक से हम जो अंतिम संदेश पढ़ेंगे वह प्रभु की प्रतीक्षा का विषय है।

प्रभु की प्रतीक्षा करने का क्या अर्थ है? क्या इंतजार करने का मतलब यह है कि हम पूरे दिन बैठे रहें और कुछ न करें? बिल्कुल नहीं! प्रभु की प्रतीक्षा करना कुछ ऐसा है जो हम करते हैं। प्रतीक्षा हमारी आशा और परमेश्वर में हमारे भरोसे को दर्शाती है। जब हम प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, तो हमारे दिल शांति और आशा से भर जाएँगे, भले ही समय कठिन हो। इसीलिए भजनकार कहते हैं, "कदाचित रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनन्द पहुँचेगा!" (भजन संहिता 30: 5)। और, "अपनी करुणा की बात मुझे शीघ्र सुना, क्योंकि मैंने

* सब्त, मार्च 30 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

तुझी पर भरोसा रखा है!" (भजन संहिता 143: 8)। यह आशा और विश्वास हमें अपने आस-पास के लोगों को बचाने में परमेश्वर की मदद करने के लिए और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करेगा (भजन संहिता 126: 6) मत्ती 9: 36-38)। जब हम प्रभु की प्रतीक्षा करेंगे तो हमें कभी शर्म महसूस नहीं होगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु अपने सभी वादे निभाता है (भजन 37: 7-11, 18, 34; भजन 71: 1; भजन 119: 137, 138)। इसलिए, हम निश्चिंत हो सकते हैं कि परमेश्वर हमें उसकी प्रतीक्षा करने के लिए प्रचुर मात्रा में प्रतिफल देगा।

रविवार **मार्च 24**

परमेश्वर की प्रतीक्षा में (भजन 27: 14)

पढ़ें, भजन 27: 14; भजन 37: 7, 9, 34; भजन 39: 7; भजन 40: 1; भजन 69: 6; गलातियों 5: 5; और रोमियों 8: 18-25। ये पद परमेश्वर के लोगों से क्या करने को कहते हैं?

वास्तव में किसी को भी इंतजार करने में आनंद नहीं आता। इंतजार करने से हमें तनाव हो सकता है। कभी-कभी, हम सभी को चीजों का इंतजार करना चाहिए। शायद हमें दुकान पर कतार में इंतजार करना होगा। या फिर हमें अपने डॉक्टर से अपने स्वास्थ्य के बारे में समाचार सुनने का इंतजार करना होगा। हम हमेशा ऐसा करना पसंद नहीं करते, है ना?

परमेश्वर की प्रतीक्षा के बारे में क्या? भजन संहिता की पुस्तक परमेश्वर की प्रतीक्षा के बारे में बात करती है। बाइबल के बाकी भाग भी इसके बारे में बात करते हैं। परमेश्वर की प्रतीक्षा करने का रहस्य क्या है? हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। इस बात से न डरें कि परमेश्वर अपने वादे पूरे नहीं करेगा या हमारे लिए मौजूद नहीं रहेगा। जब हम परमेश्वर की प्रतीक्षा करते हैं, तो हमें पता होना चाहिए कि हम अपनी समस्याओं के लिए उस पर भरोसा कर सकते हैं। हम निश्चिंत हो सकते हैं कि वह हमारे लिए सर्वोत्तम कार्य करेगा।

प्रभु की प्रतीक्षा करना यह चाहने से कहीं अधिक है कि वह हमारे लिए कुछ करे। प्रभु की प्रतीक्षा करना स्वयं परमेश्वर को चाहने के समान है। हम दाता को चाहते हैं, न कि केवल उन उपहारों को, जिनका वह वादा करता है। परमेश्वर की प्रतीक्षा करने की तुलना मरुभूमि में किसी ऐसे व्यक्ति से की जाती है जो बहुत प्यासा है (भजन 63: 1)। भजनकार प्रतीक्षा करता है कि

परमेश्वर उसे ढेर सारी आशीष दे। लेकिन आशीष चाहने से ज्यादा भजनकार अपने दिल में परमेश्वर के करीब महसूस करना चाहता है। भजनकार के लिए परमेश्वर के साथ रिश्ता जीवन में किसी भी अन्य चीज की आवश्यकता या इच्छा से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

पौलुस हमें रोमियों की पुस्तक में बताता है कि प्रकृति में हर चीज परमेश्वर द्वारा पृथ्वी को नया बनाने की प्रतीक्षा कर रही है। सारी प्रकृति अंत समय में परमेश्वर के अपने लोगों से मिलने की प्रतीक्षा करती है। पौलुस लिखता है: "क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है (रोमियों 8: 19)।

यह वादा अद्‌भुत है!

जबकि हम यीशु के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, प्रभु अब भी अपने लोगों के साथ है। वह उनके दिलों में रहने के लिए अपना पवित्र आत्मा भेजता है।

यीशु हमसे अपने गवाह बनने के लिए कहता है (प्रेरितों 1: 4-8)। वह चाहता है कि हम सभी को यह खुशखबरी सुनाएँ कि वह उन्हें पाप से बचाता है और उनके जीवन को नया बनाता है। वह पृथ्वी को भी नया बना देगा। एक चर्च के रूप में हम इसी समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सेवेंथ-डे -ऐडवेंटिस्ट मसीहियों के रूप में, हमारे नाम में उस आशा का विचार शामिल है जिसका हम इंतजार करते हैं। हम प्रतीक्षा करते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि परमेश्वर हमें हमारी प्रतीक्षा का प्रतिफल देगा।

सोमवार **मार्च 25**

एक बच्चा अपनी माँ के साथ (भजन 131)।

भजन 131 पढ़ें। यह भजन हमें परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के बारे में क्या सिखाती है ?

परमेश्वर के लोग पाप और पीड़ा से भरी पृथ्वी पर रहते हैं। भजन 131 लिखने वाला भजनकार इस कुरूप सत्य को समझता है। इसीलिए वह यह याद रखने के लिए आभारी है कि वह परमेश्वर की संतान है। भजनकार जानता है कि उसे जीवन में हर चीज के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए। यह विचार भजनकार के हृदय से सारे अभिमान को शून्य कर देता है। भजनकार स्वीकार करता है कि अभिमान का कोई मूल्य नहीं है। अभिमान झूठ है।

अभिमान लोगों को केवल अपने बारे में सोचने पर मजबूर कर देता है। अहंकार से भरा हृदय अंधा होता है। जिस व्यक्ति के हृदय में अहंकार है वह यह नहीं देख सकता कि उसे परमेश्वर की आवश्यकता है।

परमेश्वर के बच्चे देखते हैं कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता है (भजन 123: 1, 2)। परमेश्वर के बच्चों के हृदय में कोई अभिमान नहीं है क्योंकि वे समझते हैं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान और अद्‌भुत है। भजनकार कहता है, मैं खुद को दूसरों [लोगों] से बेहतर नहीं देखता। मैं महान [महत्त्वपूर्ण] काम करने के बारे में नहीं सोच रहा हूँ (भजन 131: 1)। केवल परमेश्वर ही "महान कार्य" कर सकता है। उसके कार्य एक रहस्य हैं। हम उन्हें पूरी तरह समझ नहीं पाते।

भजन 131: 2 में, भजनकार हमें परमेश्वर के साथ अपने संबंध के बारे में कुछ और बताता है। वह परमेश्वर के साथ कैसा महसूस करता है, इसकी तुलना वह एक बच्चे से करता है, जो दूध पिलाने के बाद अपनी माँ से करता है। वह कहता है, "निश्चय मैंने अपने मन को शांत और चुप कर दिया है, जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का माँ की गोद में रहता है वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता है" (भजन 131: 2)। यह शब्द चित्र सशक्त है। परमेश्वर का प्रेम भजनकार को उसी तरह शांति से भर देता है, जैसे माँ की गोद में बच्चा।

भजनकार को परमेश्वर पर वही भरोसा है जो बच्चा अपनी माँ पर महसूस करता है। ये भरोसा विश्वास से आता है। जब हमारे विश्वास की परीक्षा होती है, तो हम आध्यात्मिक शक्ति में विकसित होते हैं। हम कष्ट और कठिन समय के दौरान सीखते हैं कि हम परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। प्रभु सदैव अपने वादे निभाता है।

भजनकार अपने भजन का अंत अपने बारे में विचारों के साथ नहीं करता। वह अपने भजन परमेश्वर के लोगों के बारे में विचारों के साथ समाप्त करता है। उसी प्रकार, परमेश्वर चाहता है कि हम उसके चर्च के बारे में सोचें। वह चाहता है कि हम उसके साथ अपने अनुभव का उपयोग उसके चर्च को मजबूत होने में मदद करने के लिए करें। "हमारा अनुभव" का क्या अर्थ है? परमेश्वर चाहता है कि हमने उसके बारे में जो बातें सीखी हैं, उन्हें हम चर्च के अन्य सदस्यों के साथ साझा करें। यीशु ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसके बारे में हमारी कहानियाँ चर्च के उन सदस्यों को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकती हैं जो विश्वास में कमजोर हैं।

फसल इकठ्ठा करना (भजन 126)।

परमेश्वर के लोगों को शक्ति और आशा क्या देती है? उत्तर के लिए भजन 126 पढ़ें। इस भजन में हम किस महत्त्वपूर्ण नियम के बारे में सीखते हैं? हम अपने जीवन में इस महत्त्वपूर्ण नियम का पालन कैसे कर सकते हैं? जब हम अतीत में प्रभु के चमत्कारों के बारे में सोचते हैं, तो हमें भविष्य के लिए आशा महसूस होती है। जब अतीत में परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाया, तो उन्होंने सोचा कि वे सपने देख रहे होंगे। अनुभव बहुत अद्‌भुत था! निस्संदेह, यह अनुभव इस्राएल के शत्रुओं के लिए एक बुरे सपने के समान था (यशायाह 29: 7, 8)। भजन 126 में, क्या आप देखते हैं कि जो लोग अतीत में इस्राएल को बचाने के लिए प्रभु की स्तुति करते हैं (भजन 126:1) वे लोग हैं जो एक अजनबी देश में कैदी हैं?

अतीत को याद करने से परमेश्वर के लोगों को कठिन समय में आशा मिलती है। भजन 126: 4 में, लोग प्रार्थना करते हैं, "हे यहोवा, दक्षिण देश के नालों के समान, हमारे बंदियों को लौटा ले आ" (भजन 126: 4)। इसके बाद, भजनकार दु:ख के समय में बीज बोने और खुशी के समय में फसल इकट्ठा करने के बारे में एक शब्द चित्र का उपयोग करता है (भजन 126: 5, 6)। यह शब्द चित्र हमें एक सशक्त वादा दिखाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को कठिन समय से एक सुखद भविष्य की ओर ले जाएगा।

बाइबल लेखकों ने अक्सर इस्राएलियों को महत्त्वपूर्ण बाइबल सच्चाई सिखाने के लिए फसल को एक शब्द चित्र के रूप में इस्तेमाल किया। लोगों ने बीज बोने और अपने खेतों, बगीचों और अंगूर के बगीचों में कड़ी मेहनत की। वे अपनी फसलों, अपने फलों के पेड़ों और लताओं की अच्छी देखभाल करते थे। खेती के समय के अंत में, लोगों ने भरपूर फसल का आनंद लिया। उसी तरह, परमेश्वर के लोग अब उसके राज्य के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। उनके कष्टों और कठिन समय का फल शीघ्र ही मिलेगा। परमेश्वर उन्हें अंत में जीवन का मुकुट देगा। तब उनका हृदय आनन्द से भर जाएगा।

दूसरा आगमन एक बड़ी फसल के समान है। उस समय के बाद, यीशु पृथ्वी पर अपना शाश्वत राज्य शुरू करेगा (आमोस 9: 13-15; मती 9: 37)। लेकिन हमें तब तक इंतजार करना होगा। जिस तरह हमें फसलों के उगने का इंतजार करना चाहिए, उसी तरह हमें उन सभी अद्‌भुत चीजों को

देखने का इंतजार करना चाहिए जो परमेश्वर के लिए हमारे द्वारा किए गए काम के कारण घटित होंगी।

उस समय के बारे में सोचें जब आपने प्रभु को अपने जीवन में या अन्य लोगों के जीवन में कार्य करते देखा था। कठिन समय में जब आप पीड़ित हों तो ये अनुभव आपको कैसे आशा दे सकते हैं?

बुधवार **मार्च 27**

परमेश्वर का सब्त विश्राम (भजन 92)

भजन 92 पढ़ें। भजन 92 सब्त के दिन के लिए एक गीत है। बाइबल के समय में, परमेश्वर के लोग सब्त के दिन यह गीत गाते थे। यह गीत सब्त के विषय में किन दो चीजों के बारे में बात करता है?

भजन 92 परमेश्वर की उसके द्वारा बनाई गई हर चीज के लिए स्तुति करता है (भजन 92: 4, 5)। भजन परमेश्वर की स्तुति भी करता है क्योंकि वह अपने शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई जीतता है और एक निष्पक्ष न्यायाधीश है (भजन 92: 7-15)। तो, हम देखते हैं कि भजन 92 परमेश्वर की उनके पिछले कार्यों के लिए स्तुति करता है और भविष्य में उसके द्वारा लाई जाने वाली शांति के लिए उसकी स्तुति करता है।

लोग सब्त के विश्राम का आनंद ले सकते हैं क्योंकि प्रभु परमप्रधान परमेश्वर है (भजन 92: 1)। उसी समय, प्रभु उन लोगों को बचाने के लिए नीचे आता है जो मदद के लिए उसकी ओर पुकारते हैं। प्रभु ने जो कुछ भी बनाया है, वह हमारे हृदयों को उसके प्रति प्रेम से भर देना चाहिए। हमें उसकी आराधना करनी चाहिए क्योंकि उसने हमें बनाया और उद्धार करता है।

भजन 92: 10 में, भजनकार कहता है, "तू ने मुझ पर बढ़िया [महँगा] तेल डाला है"। महंगे तेल एक शब्द चित्र है जो भजनकार के परमेश्वर के प्रति प्रेम को दर्शाता है। भजनकार पूरे मन से परमेश्वर की सेवा करने का वादा करता है। पुराने नियम के समय में, परमेश्वर के नबियों या दूतों द्वारा राजाओं और याजकों या आध्यात्मिक अगुओं के सिर पर विशेष तेल डाला जाता था। तेल से पता चलता था कि इन लोगों ने प्रभु की सेवा करना चुना था (निर्गमन 40: 15; 1शमूएल 10: 1)। भजनकार इस शब्द चित्र का उपयोग हमें यह दिखाने के लिए करता है कि वह स्वयं को परमेश्वर को एक जीवित भेंट या

उपहार के रूप में देना चाहता था। तेल हमें दिखाता है कि भजनकार अपना पूरा जीवन परमेश्वर को देना चाहता है (रोमियों 12: 1।

हमें सब्त के बारे में एक भजन में अपना पूरा जीवन परमेश्वर को देने के विचारों को पाकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। विश्रामदिन वह चिह्न है कि परमेश्वर अपने लोगों को पवित्र बनाता है (निर्गमन 31: 13)। सब्त अपने लोगों के साथ परमेश्वर की चिरस्थायी प्रतिज्ञा का प्रतीक है (यहेजकेल 20: 20)। सब्त का विश्राम परमेश्वर के लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें प्रभु पर भरोसा करने और अपने वादे को पूरा करने के लिए उसकी प्रतीक्षा करने में मदद करता है (इब्रानियों 4: 1-10)।

भजन 92 फिर से पढ़ें। यह भजन हमें कैसे अद्‌भुत आशा प्रदान करता है?

बृहस्पतिवार **मार्च 28**

आनन्द भोर को आता है (भजन 5: 3)

पढ़ें, भजन 5: 3; भजन 30: 5; भजन 49: 14; भजन 59: 16; भजन 92: 2; भजन 119: 147; 2 पतरस 1: 19; और प्रकाशितवाक्य 22: 16. इन भजनों में, हमें बचाने की परमेश्वर की योजना के लिए शब्द चित्र के रूप में दिन के किस समय का उपयोग किया गया है?

भजन संहिता की किताब में, सुबह वह समय है जब लोग परमेश्वर के आने और उन्हें बचाने का इंतजार करते हैं। सुबह परमेश्वर की कृपा और आशीर्वाद का एक शब्द चित्र भी है। सुबह लंबी रात का अंत करती है। रात परेशानी और उदासी का एक शब्द चित्र है (भजन 130: 5, 6)। भजन 143 में, जब परमेश्वर अपने लोगों को बचाता है, तो वह चीजों को जिस तरह से है उसे उलट देगा। वह पाप और मृत्यु का अन्त करेगा (भजन संहिता 143: 3)। वह अँधेरे को एक नई सुबह की रोशनी में बदल देगा (भजन 143: 7-10)।

मरकुस 16: 1-8 पढ़ें। मरकुस की ये पंक्तियाँ क्या कहती हैं कि सुबह क्या हुआ? वह जानकारी हमारे लिए क्यों महत्त्वपूर्ण है?

क्रूस पर कीलों से ठोके जाने के तीसरे दिन की सुबह यीशु मृतकों में से जी उठा। जब यीशु मृतकों में से जी उठा, तो उसने अपने नाम पर मानव परिवार को बचाने का एक रास्ता बनाया। जब यीशु मृतकों में से जी उठा, तो

उसके चेलों ने भजन 30: 5 में दिए वादे को पूरी तरह से समझा: रात आँसुओं से भरी हो सकती है, लेकिन सुबह हम खुशी से गा सकते हैं! (भजन संहिता 30: 5)। परमेश्वर का अनुग्रह और प्रेम ही एकमात्र ऐसी चीज है जो हमारे आँसुओं को खुशी में बदल देती है (भजन 30: 5, 7)।

यीशु को चमकता, भोर का तारा नाम दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 22: 16)। सुबह का तारा एक नए दिन की शुरुआत की घोषणा करता है। हम यीशु, भोर के सितारे, के राज्य शुरू करने की प्रतीक्षा करते हैं। उस समय, रात, बुराई या मृत्यु नहीं होगी (प्रकाशितवाक्य 21: 1-8, 25)। किसी भी चीज से ज्यादा, हम इस समय का पूरे दिल से इंतजार करते हैं। नि:संदेह, प्रतीक्षा इसके लायक है!

"यीशु यूसुफ की कब्र से बाहर निकला। उसने घोषणा की, 'मैं वह हूँ जो मृतकों में से जाग उठा हूँ। मैं जीवन हूँ।' ये शब्द केवल परमेश्वर ही कह सकता है। जो कोई जीवित है वह परमेश्वर के कारण ऐसा करता है। हम जीवन के लिए परमेश्वर पर निर्भर हैं। सबसे शक्तिशाली स्वर्गदूत से लेकर छोटे बच्चे तक, हम सभी को अपना जीवन परमेश्वर से प्राप्त करना चाहिए। यीशु परमेश्वर के साथ एक है। केवल वह ही कह सकता है, 'मैं अपना जीवन त्याग सकता हूँ। मेरे पास फिर से जीवन में वापस आने की ताकत है।' परमेश्वर के रूप में, यीशु के पास कब्र से जी उठने की ताकत थी।" - एलेन जी० ह्वाइट, द० डिजायर ऑफ एजेस, पृष्ठ 785।

शुक्रवार **मार्च 29**

अतिरिक्त विचार: एलेन जी० ह्वाइट की किताब स्टेप्स टू क्राइस्ट में "ग्रोइंग अप टू क्राइस्ट," पेज 67-75, पढ़ें।

भजन संहिता की पुस्तक हमें प्रभु की प्रतीक्षा करने के लिए कहती है (भजन 37: 7। जब प्रतीक्षा करना कठिन हो, तो हमें उस दिन यीशु के चेलों को याद करना चाहिए जिस दिन यीशु स्वर्ग में वापस गया था (प्रेरितों 1: 4-11)। यीशु को उनकी आँखों के सामने आकाश में उठा लिया गया। भविष्य में किसी दिन उसके वापस आने की प्रतीक्षा करने के लिए उन्हें पृथ्वी पर छोड़ दिया गया था। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे पवित्र आत्मा भेजने के पिता के वादे की प्रतीक्षा करें। चेले यरूशलेम वापस चले गए और उन्होंने वह सब कुछ किया जो यीशु ने उन्हें करने के लिए कहा था। वे पवित्र आत्मा

के उपहार की प्रतीक्षा कर रहे थे। तब उन्होंने यरूशलेम में लोगों को सशक्त तरीके से सुसमाचार का प्रचार किया।

हमारे प्रभु की प्रतीक्षा करने की आज्ञा तभी संभव है जब हम उसे अपने अंदर अपना कार्य करने की अनुमति दें। प्रभु अपने आत्मा को हमारे हृदयों में रहने के लिए भेजता है। आत्मा हमें परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने में मदद करता है। परमेश्वर के साथ घनिष्ठ, व्यक्तिगत संबंध हमें यीशु की प्रतीक्षा करने की शक्ति देगा। "जब यीशु हमारे दिलों में रहेगा, तो वह हमें अपनी ताकत देगा। वह आपको वह करने में मदद करता है जो उसे पसंद है, और वह आपको ऐसा करने की शक्ति देता है। फिलिप्पियों 2: 13। फिर हम वैसे ही काम करेंगे जैसे यीशु ने किया था। हमारे पास उसका वही आत्मा होगा। हम उससे प्रेम करेंगे और उसमें रहेंगे। तब 'हम हर तरह से मसीह [यीशु] के समान बन जायेंगे। वह मुखिया है [चर्च का आध्यात्मिक अगुआ]।' इफिसियों 4: 15।" - एलेन जी० ह्वाइट, स्टेप्स टू क्राइस्ट, पृष्ठ 75।

जैसे-जैसे हम प्रभु की प्रतीक्षा करते रहेंगे, हमें भजन संहिता की पुस्तक में शांति मिलेगी। हम प्रतिदिन परमेश्वर से उसकी प्रार्थनाओं और गीतों में मिलते हैं।

चर्चागत प्रश्नः

1. प्रतीक्षा हमारे आध्यात्मिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा क्यों है? बाइबल में कुछ पुरुषों और महिलाओं के बारे में बात करें जिन्होंने प्रतीक्षा की। इंतजार करने से उनका विश्वास कैसे मजबूत हुआ? संकेतः रोमियों 4: 19-22 और इब्रानियों 11 पढ़ें।
2. हम किन चीजों का इंतजार कर रहे हैं? परमेश्वर ने हमसे क्या वादा किया है? भजन 37: 34-40 में हमें क्या आशा मिलती है कि परमेश्वर हमें ये चीजें देगा?
3. सभोपदेशक 9: 5 पढ़ें। यह आयत हमें मृतकों के बारे में क्या बताती है? यीशु के लिए उनका इंतजार लगभग पूरा क्यों हो गया है? यह उत्तर हमें क्या आशा देता है?